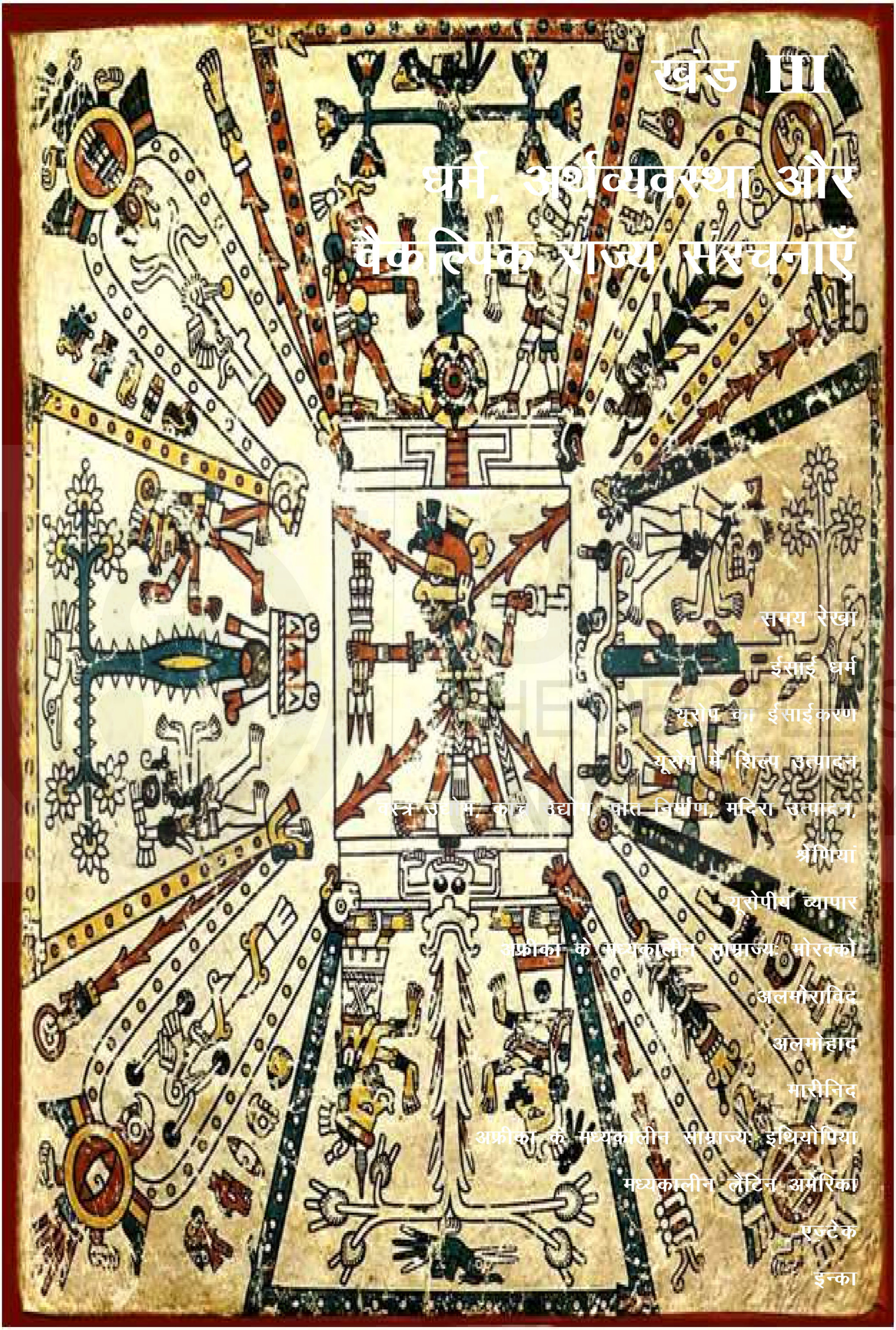

खंड III

धर्म, अर्थव्यवस्था और वैकल्पिक राज्य संरचनाएँ

समय रेखा

ईसाई धर्म

यूरोप का ईसाईकरण

यूरोप में शिल्प उत्पादन

वस्त्र उद्योग, कांच उद्योग, पोत निर्माण, मदिरा उत्पादन, श्रेणियां

यूरोपीय व्यापार

अफ्रीका के मध्यकालीन साम्राज्यः मोरक्को

अलमोराविद

अलमोहाद

मारीनिद

अफ्रीका के मध्यकालीन साम्राज्यः इथियोपिया

मध्यकालीन लैटिन अमेरिका

एज़्टेक

इन्का

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

चित्रांकन : कोडेक्स-फेजरवेरी;

चित्रकारः अज्ञात

ज़्यूटेकुहली देवता के साथ एज़्टेकों का ब्रह्मांड़ोत्पत्ति संबंधी रेखांकन; केन्द्र में अग्निदेवता और ब्रह्मांड के चारों कोने चार पेड़ों द्वारा चिन्हित जो कि चिड़ियाओं, देवताओं और कैलेन्डर के नामों से संबंधित है; और प्रत्येक दिशा को ईष्ट देव टेज़्काटलीपोका के विखंडित पैरों द्वारा चिन्हित किया गया है।

स्रोत : https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/7e/Xiuhtecuhtli_1.jpg

इकाई 7 मध्यकालीन यूरोप में धर्म और संस्कृति*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 ईसाई धर्म और यूरोप का ईसाईकरण

7.3 ईसाईयों के गैर-ईसाइयों के साथ संबध

7.4 पादरी वर्ग, नैतिक निर्देश और औपचारिक शिक्षा

7.5 मध्यकालीन पादरियों और चर्च की सामाजिक शिक्षाओं की आलोचना

7.6 सारांश

7.7 शब्दावली

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.9 संदर्भ ग्रन्थ

7.10 शैक्षणिक वीडियो

7.0 उद्देश्य

रोमन साम्राज्य में धर्म पर पिछली इकाई (**इकाई 3, बी एच आई सी-104**) में दर्शाया गया है कि प्राचीन काल के अन्त और मध्ययुग की शुरुआत में किस प्रकार ईसाई धर्म राज्य की शक्ति संरचना का हिस्सा था। ईसाई चर्चों, मठों, और चर्च प्रशासित प्रतिष्ठानों ने पूर्व रोमन क्षेत्र में चर्च की भू-सम्पत्तियों पर बड़ी संख्या में मजदूरों को एकत्र और नियंत्रित किया। भूमि के अनुदान के अलावा चर्च के लोगों ने कुलीनों और समाज के अन्य सदस्यों से और राजकीय कोषों से सम्पदा प्राप्त की। यह यूरोपीय समाजों के ईसाईकरण की जटिल प्रक्रिया का केवल एक पहलू था। जैसा कि हम देखेंगे, मध्ययुगीन यूरोप का सामान्य सामाजिक और सांस्कृतिक प्रारूप ईसाई बन गया, यहाँ तक कि गैर-ईसाई लोगों के लिए भी जो यूरोप की अल्पसंख्यक आबादी थे। संस्कृति का अर्थ समाज के मूल्यों, साझा विश्वासों और परम्पराओं के साथ-साथ विशिष्ट कलाओं, भाषाओं इत्यादि से है। अतः मध्यकालीन यूरोपीय संस्कृति का विवरण मध्ययुगीन जीवन के पूरे प्रारूप और उन तरीकों की जाँच होना चाहिए जिन्होंने ईसाई धर्म की मदद से हुए सामाजिक एकीकरण और सामाजिक नियन्त्रण की विशिष्ट सामंती संरचना को संभव बनाया। हालाँकि मध्ययुगीन काल में यूरोप मात्र एक राजनीतिक इकाई नहीं था, बल्कि समाजों का संकलन था, लेकिन 'यूरोपियन समाज' और 'यूरोपियन संस्कृति' के संबंध में धर्म का उपयोगी सामान्यीकरण करना संभव है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- मध्यकालीन यूरोप में ईसाईकरण को एक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में देख सकेंगे,
- यूरोप के कुछ हिस्सों में 'बहुसंख्यक' और 'अल्पसंख्यक' धार्मिक पहचान वाले समूहों के बीच के संबंधों को समझ सकेंगे,

---

* प्रो. डेनिस पी. लेटन, स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज़, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली

- लगभग 1500 से पहले विशेष रूप से ज्ञान निर्माण, शिक्षा और सामाजिक देखभाल के कार्यों में ईसाई यूरोप में पादरियों की भूमिका को समझ सकेंगे, तथा
- मध्ययुगीन सामाजिक जीवन और संस्थाओं में पादरी और सामान्य लोगों के बीच सहयोग और संघर्षों के कुछ कारणों को सूचीबद्ध कर पायेंगे।

7.1 प्रस्तावना

ग्यारहवीं शताब्दी सी ई तक आते-आते ईसाई पूजा पद्धतियों की जड़ें एशिया और अफ्रीका के कई भागों में होने के बावजूद, यूरोप 'ईसाई जगत' के समानार्थक था और ईसाई धर्म के अधिकार क्षेत्र का पर्याय बन गया था। उस समय ईसाई जगत स्वयं यूरोप की अवधारणा की तुलना में मध्ययुगीन यूरोप के अधिकांश लोगों के लिए एक परिचित अवधारणा थी 'यूरोप' की सीमाएँ (आखिरकार यह कहां शुरू हुई और कहां समाप्त होती थीं?) यह 12- 13 वीं शताब्दियों में यूरोप की ईसाई जगत के साथ पहचान और भी घनिष्ठ हो गई, खासतौर पर जब समय-समय पर पोप द्वारा धर्मयुद्धों (Crusades) को अनुमोदित किया गया।

> धर्मयुद्ध 'ईसा मसीह के क्रास चिन्ह' के मातहत ऐसे सैन्य अभियान थे जो 'पवित्र भूमियों' (जेरुसलम और आसपास के स्थान) के साथ-साथ यूरोप में भी धर्मविरोधी और विधर्मियों के खिलाफ लड़े गये थे। धर्मयुद्ध धार्मिक दायित्व की आड़ में अपनी शक्ति और सम्पदा बढ़ाने के लिए यूरोपीय कुलीन वर्ग के आक्रामक प्रयास थे। लेकिन पोप की अनुमति द्वारा यह अति-क्रूर अभियान आरम्भ किये गये थे (धर्मयुद्धों के बारें में अधिक जानकारी के लिए शैक्षणिक वीडियो देखें)।

पोप के प्रभाव क्षेत्र, पेपेसी (Papacy), का मध्ययुग के दौरान, संपत्तियों और क्षेत्रीय-वैधानिक अधिकार क्षेत्रों के विशाल साम्राज्य के रूप में रोम से बाहर विस्तार हुआ। यूरोप का नागरिक प्रशासन अपनी वैधता के लिए ईसाई चर्चों और पोप की सहमति पर निर्भर था। इसी प्रकार पोप और उनके अधीनस्थ शाही समर्थन और उनके अनुग्रह पर निर्भर थे। ईसाई न्यू टेस्टामेन्ट में कहा गया है (ल्यूक 22: 38) कि सांसारिक/लौकिक सत्ता (सामाजिक और राजनीतिक संबधों में) और आध्यात्मिक सत्ता दो तलवारों द्वारा दर्शाये जाते हैं और *दोनों* तलवारों पर राजकुमार या सम्राट का अधिकार था। मध्ययुगीन यूरोप में जहाँ कहीं भी नागरिक नेताओं और अधिकृत ईसाई अधिकारियों के बीच दरारें पैदा हुई, वे गंभीर राजनीतिक सकंट के रूप में सामने आए। ईसाई धर्मशास्त्रियों और विधिवक्ताओं ने पवित्र युद्ध के सिद्धान्त विकसित किये और हिंसा को तर्क-संगत ठहराने वाली परिस्थितियों पर वाद-विवाद किया, चाहे वह गैर-ईसाई या साथी ईसाईयों के खिलाफ हों।

समाज का **ईसाईकरण** लोगों द्वारा समान तरीके से ईसाई ईश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के तीन रूपों में) की पूजा करने की प्रक्रिया से कहीं अधिक था। ईसाईयत ने यूरोप में कई सैकड़ों अलग-अलग राज्यों और क्षेत्रों में वितरित विभिन्न प्रकार के लोगों के सामाजिक मूल्यों और मानदंडों का निर्धारण किया। आज जब हम शानदार मध्ययुगीन चर्च की वास्तुकला का अवलोकन करते हैं और यूरोपीय महलों के साथ-साथ चर्चों को सुशोभित करने वाले धार्मिक विषयों के भित्ति चित्रों, चित्रकारी और प्रतिमाओं की प्रशंसा करते हैं, तो यह निष्कर्ष निकालने की ओर झुकाव रहता है कि यूरोपीय संस्कृति ने ईसा मसीह और संतों की भक्ति को उदाहरण के रूप में पेश किया जिसे चर्च ने प्रत्येक ईसाई के कर्त्तव्य के रूप में सिखाया। मध्ययुगीन यूरोप की अधिकांश कला चर्चों में की गई, और चर्च सामान्य जन के लिए खुले थे।

हेनरी एडम्स (1838-1918) ने *द एजुकेशन ऑफ हेनरी एड़म्स* (अध्याय 25: 'द डायनमों एंड द वरजिन') में मध्ययुगीन यूरोपीय लोगों में अविवाहित मेरी, यीशु मसीह की माँ, के प्रति श्रद्धा-भाव की तुलना आधुनिक लोगों में तकनीक (उदाहरण के लिए, बिजली उत्पन्न करने के लिए डायनमों का इस्तेमाल), वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उत्पादन के प्रति जुनून से की है। एडम्स यह दिखाना चाहते थे कि मध्यकालीन यूरोपीय पुरुष और महिलाएं अविवाहित मेरी की शक्ति के प्रति आश्वस्त थे और चर्च में अनुष्ठानों, गिरिजाघरों और चर्च में अन्य ताम-झामों पर विवाद नहीं करते थे, इसी प्रकार जैसे कि आधुनिक लोग प्रौद्योगिकी और आर्थिक उपलब्धि के महत्व और परम् लक्ष्य के बारे में आश्वस्त हैं। हालाँकि कई विद्वानों ने इस अवधारणा को चुनौती दी है कि मध्यकालीन यूरोपीय लोग अपने रोमन पूर्ववर्तियों या 1600 सी ई के बाद उनके उत्तराधिकारियों से अधिक धार्मिक और ईसाई थे। इस इकाई के अगले भागों में दिखाया जाएगा कि कैसे ईसाई धर्म नें मध्ययुगीन यूरोपीय पारस्परिक सामाजिक प्रभावों को प्रभावित किया, और कैसे ईसाई विचारों और मूल्यों के साथ-साथ ईसाई प्रथाओं के बारे में चिंतायें यूरोपीय संस्कृति और समाज में व्यक्त की गयी थीं। यह इकाई यह भी दर्शाएगी कि संस्कृति के क्षेत्र में ईसाई और अन्य धार्मिक समुदायों के बीच संबंध कैसे थे।

7.2 ईसाई धर्म और यूरोप का ईसाईकरण

ईसाई धर्म, चाहे वह रोमन कैथोलिक धर्म था या पूर्वी रोमन या बाइजेन्टाइन साम्राज्य (धर्म प्रधान (patriarch) द्वारा जिसका प्रतिनिधित्व किया गया) द्वारा समर्थित रुढ़िवादी ईसाई धर्म, आठवी शताब्दी सी ई तक आते-आते दक्षिण, पश्चिमी और मध्य यूरोप के अधिकांश भू-भागों में आधिकारिक धर्म बन गया था। इसके तुरंत बाद यह रूस, यूक्रेन, और दक्षिण-पूर्वी यूरोप के भागों में, जो ग्रीक भाषी और स्लाव लोगों का निवास था और इस समय तक पहले से ही रुढ़िवादी ईसाई धर्म का केन्द्र था, में फैल गया। ग्याहरवीं शताब्दी सी ई के अन्त में एक 'महान् विभाजन' ('Great Schism') के रूप में समापन होने से कई शताब्दियों पहले से ही ईसाई धर्म के कैथोलिक और रुढ़िवादी शाखाओं के साथ संबंध बिगड़ गये थे। प्रारंभिक मध्यकाल के ईसाई मिशनरियों ने पोप (या रुढ़िवादी धर्मप्रधान) या बिशप, सैद्धान्तिक रूप से पोप (या पितृसत्तात्मक धर्मप्रधान) के अधीनस्थों, ने उनके प्रतिनिधि के रूप में लोगों के बीच ईसाई धर्म विश्वास फैलाने का काम किया।

नागरिक शासकों के समर्थन के बिना मध्ययुगीन यूरोप में धर्मान्तरण संभव नहीं था। यह आमतौर पर एक राजनैतिक नेता द्वारा ईसाई धर्म को स्वीकार करने का नतीजा था जिसके कारण पूरी आबादी का धर्मान्तरण हुआ। आयरलैंड के पैट्रिक (सेन्ट पैट्रिक, 'द अपोस्टल ऑफ द आयरिश') और वेल्स और ब्रिटेनी में ब्यूनो जैसे मिशनरियों की दन्त कथाओं और आदरणीय महंत बेडे (लगभग 672 से 735 सी ई) के *इक्लीसीऐस्टिकल हिस्ट्री ऑफ द इंग्लिश पीपॅल* जैसे ऐतिहासिक दस्तावेज मिशनरियों के गहन विश्वास, प्रतिकूल परिस्थितियों में उनके धैर्य और उनके जीवन से जुड़ी चमत्कारिक घटनाओं से भरे हुए हैं। प्रारंभिक ईसाई सन्तों में अनेक मिशनरी ऐसे थे जिन्होंने धर्म विरोधियों के हाथों शहादत प्राप्त की थी। इस प्रकार की दन्तकथाओं और दस्तावेजों से ईसाई धर्म को अपनाने के लाभ के बारे में अनुनय और अनुभूतियों के बारे में पता चलता है। नौवीं शताब्दी सी ई के मध्य में बुल्गारियनों के *खान*, बोरिस, ने रुढ़िवादी ईसाई और रोमन कैथोलिक ईसाई मिशनरियों का स्वागत किया, लेकिन अन्ततः उसने अपने राज्य को रुढ़िवादी ईसाई धर्म के पक्ष में ले जाने का चुनाव किया। व्लादीभीर 'द ग्रेट', नोवगोरोड़ के स्लाव राजकुमार और अन्ततः दसवीं शताब्दी सी ई के अन्त में कीव के महान् राजकुमार, ने बाइजेंटाइन सम्राट की पुत्री से विवाह करके और बाइजेंटाइन साम्राज्य से संबंध बनाकर बदले में रुढ़िवादी ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया। कई मिशनरी प्रयासों

के असफल प्रयत्नों के बाद, व्लादीमीर के बाइजेंटाइन के साथ राजनीतिक गठजोड़ के द्वारा रूस का ईसाईकरण शुरू हुआ।

ईसाईकरण समाज और संस्कृति के परिवर्तन की एक क्रमिक प्रक्रिया थी और यह आबादी के नाममात्र धर्मान्तरण के बाद लम्बे समय तक ईसाई धर्म में जारी रही। जब ईसाई धर्म में परिवर्तन कराने वालों को एक शासक का समर्थन प्राप्त होता था, तो यह ईसाईकरण उन लोगों के लिए हिंसा भरी धमकी भी लेकर आया जिन्होंने धर्मान्तरण का विरोध किया या जिन्होंने अपने मूर्तिपूजक तरीके जारी रखे। ईसाई अधिकारी अपने विश्वास के साथ गैर-ईसाई व्यवहारों के सह-अस्तित्व से सन्तुष्ट नहीं थे, वे *सोसीएटास फिडेई* (लैटिनः *Societas Fidei*; एक ही धार्मिक विश्वास वाला समाज) की स्थापना करना चाहते थे। इसका अर्थ था कि ईसाई धर्म का लोगों पर पूर्ण प्रभुत्व और अन्य धर्म विश्वासों का तिरस्कार। यूरोपीय भूमि की कानूनी-राजनैतिक व्यवस्थाओं ने कठोरता से और जान-बूझकर मूर्तिपूजक और 'काफिरों' के व्यवहारों के विरूद्ध ईसाई शिक्षाओं और मूल्यों को उचित ठहराया। अमीर और गरीब दोनों प्रकार के यूरोपीय लोगों के बीच विवाह पादरियों द्वारा विधिपूर्वक संपादित किये जाते थे। जिस विवाह में चर्च की मान्यता नहीं होती थी उसमें संपत्ति के नियत्रण और सामाजिक, राजनैतिक ओहदे के उत्तराधिकार के मसलों में समस्याएँ पैदा होती थीं।

ईसाईकरण को केवल चर्च की पहले से मौजूदा शक्ति के रूप में नहीं समझा जा सकता। यह इसलिए हुआ क्योंकि इसने यूरोप की विभिन्न आबादियों की सामाजिक जरूरतों को पूरा किया या कम से कम पूरा करने का वायदा किया। चर्च ने न केवल शिशुओं, बच्चों और व्यस्कों को 'आर्शीवाद' स्वरूप पाप से 'मुक्ति' के लिए धार्मिक संस्कार (sacraments) प्रदान किये बल्कि फसलों और पशुओं के झुन्डों की रक्षा तथा लोगों की बीमारियों से रोग निवृति हेतु ईश्वर को धन्यवाद देने वाले अनुष्ठान भी किये। मध्ययुगीन यूरोप से राजाओं की रोग निवृति और सुरक्षा के लिए धन्यवाद देते हुए इतनी सारी लिखित प्रार्थनाएँ मौजूद हैं जो चर्च और राजसी सत्ता की अंतर्निर्भरता के बारे में कुछ संकेत करती हैं। लोगों ने न केवल चर्च की प्रार्थना सभाओं में भाग लिया और **पादरियों** से धार्मिक संस्कार (sacraments) प्राप्त किये बल्कि उन्होंने संतों के पुण्य स्थलों में भी पूजा की और संतों से सुरक्षा और सहायता के लिए आह्वान किया।

सभी ईसाईयों के लिए सबसे महत्वपूर्ण संत मेरी, ईसा मसीह की माँ थीं, लेकिन यूरोप के सभी ईसाई क्षेत्रों में लोगों ने कई दर्जन संतों को मान्यता दी। संत विशिष्ट बीमारियों और दुर्भाग्य से सुरक्षा से जुड़े थे, या उन्हें कुछ व्यवसायों (कस्बों या ग्रामीण क्षेत्रों में) के प्रायोजकों या संरक्षकों के रूप में मान्यता दी गई थी। उदाहरण के लिए, सेंट ह्यूबर्ट शिकारियों के सरक्षंक थे, सेंट क्रिस्टोफर यात्रियों के रक्षक थे और सेंट निकोलस[1] रूस के (राष्ट्रीय) संरक्षक संत बन गए। संतों की कब्रों या अन्य पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा समाज में सभी स्तरों के ईसाईयों के लिए एक स्थापित प्रथा बन गई। संतों के किस्से (जीवनियाँ) प्रारंभिक मध्यकालीन यूरोप में साहित्य का सबसे व्यापक रूप से जाना जाने वाला रूप बन गया, जिससे संभवतः पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के पहले बाइबिल की तुलना में कहीं अधिक लोग परिचित थे। यूरोपीय साक्षरता का सामान्य स्तर कम था, और लोगों द्वारा बाइबिल को एक पुस्तक के रूप में पढ़े जाने की तुलना में चर्च में पादरियों द्वारा प्रार्थना सभाओं में उसका वाचन करके ज्यादा सुनाया जाता था। जबकि संतों की कहानियां ना केवल लिखित रूप में बल्कि मौखिक दन्तकथाओं के रूप में प्रसारित हुईं।

---

[1] निकोलस बच्चों के भी सरंक्षक संत बन गए, और मध्य युग के अंत में वह सेंट निकोलस दिवस पर दिसम्बर में बच्चों को गुप्त उपहार देने से जुड़ गए।

चित्र 7.1: जॉन हुस एंड द कांउसिल ऑफ कॉन्सटेन्स
साभारः कार्ल फ्रेडरिक लेसिगं (1808-1880); स्टाडेल म्यूज़ियम
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/25/Hus_%28Lessing_1842%29.jpg

चित्र 7.2: क्लेरमोन्ट की परिषद् में पोप अर्बन द्वितीय
साभार : जीन कोलोंबे, बिबलीयोथेक नेशनल दे फ्रांस
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/Council_of_Clermont#/media/File:Passages_d'outremer_Fr5594,_fol._19r,_Concile_de_Clermont.jpg

उन लोगों को अनुशासित करने के लिए जो 'भ्रमित' हो गये थे, मध्ययुगीन चर्च के पास सन्मार्ग पर लाने के लिए कई साधन थे, जिनमें धार्मिक अदालतें, न्यायाधिकरण, आयोग और प्रतिबंध या निषघात (उदाहरण के लिए, विद्वानों को पढ़ाने या लिखने से रोकना) शामिल थे। शुरुआती ईसाई शताब्दियों के बाद से ही ईसाई अधिकारियों के बीच व्यापक असहमति के समाधान के लिए समय-समय पर प्रमुख पादरियों की परिषद् बुलाई जाती थी। खलल और अशांति के दशकों के बाद पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब रोम और एविग्नॉन में एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी पोप थे तब कान्सटेंस में एक महान् परिषद्[2] बैठी। धार्मिक असन्तुष्टों या विपथगाामी और वास्तव में जो कोई भी चर्च की शिक्षाओं या घोषणाओं का विरोध करता था, उसे दंडित किया जा सकता था या प्राणदंड दिया जा सकता था और इसमें अन्तिम दंड धर्म बहिष्कारिता हो सकता था। सच्चे ईसाईयों के समुदाय से किसी को बहिष्कृत करके और उन्हें धर्म संस्कारों से बेदखल करने से बहिष्कृत व्यक्तियों को शाश्वत निदां (उनकी आत्माएँ स्वर्ग नहीं जाएँगी) का सामना करना पड़ता था। सेंट पीटर, रोम के प्रथम बिशप, का चित्रण ईसाई मूर्तिशास्त्र – धार्मिक कला और प्रतीकवाद – में स्वर्ग के द्वार की चाबियाँ पकड़े हुए व्यक्ति के रूप में किया गया था। ग्याहरवीं शताब्दी में पवित्र रोमन सम्राट हेनरी चतुर्थ के 'अभिषेक के दौरान उभरे इस सवाल' पर मतभेद था कि क्या राजाओं अथवा पोप को बिशप की नियुक्ति का अधिकार हो, बहिष्कार के खतरे ने हेनरी चतुर्थ को पोप ग्रेगरी VII के पक्ष में प्रस्ताव स्थगित करने के लिए राजी कर लिया गया।

विधर्मी मुकदमों – स्वीकृत चर्च शिक्षाओं के त्याग या विरोधाभास के बारे में पूछताछ – के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में चर्च के स्थान की फिर से पुष्टि की गई, चाहे इन मुकदमों में अभियुक्तों की विधर्मियों के रूप में निन्दा की गई थी या नहीं। उपरोक्त उल्लेखित धर्मयुद्धों ने, 1095 सी ई में पोप अर्बन द्वितीय द्वारा पहली बार हिसंक अभियान शुरू किये जाने के बाद, कई शताब्दियों के लिए ईसाईयों और मुसलमानों के बीच संबंधों को जटिल बना दिया। फिर भी धर्मयुद्ध, संकीर्ण इस्लाम विरोधी गतिविधियाँ नही थीं; उन्हें यूरोप के भीतर मूर्तिपूजकों (जैसे की बाल्टिक सागर के आसपास के क्षेत्र में 'उत्तरी धर्मयुद्ध') के विरूद्ध और उन ईसाई सम्प्रदायों जैसे कि दक्षिण-पश्चिमी यूरोप में कैथार्स और वाल्डेन्सियनों को नेस्तनाबूद करने के लिए भी चलाया गया था, जिन्हें पोप-तन्त्र (Papal) ने विधमी माना था। प्राग में एक धर्म विज्ञानी और विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और रेक्टर, जान हुस (1369-1415) पर विधर्म के लिए मुकदमा चलाया गया और प्राणदंड दिया गया और 1436 तक हुस के अनुयायियों को वश में करने के लिए बोहेमिया (मध्य यूरोप) मे कई धर्मयुद्ध चलाए गए। मध्यकालीन यूरोपीय लोग पादरी वर्ग के आक्षेपों से खौफ खाते थे। कारण यह था कि वे वास्तव में यह मानते थे कि पोप स्वर्ग के

चित्र 7.3: सेंट वालपरगा
साभार: मास्टर ऑफ मेसकिर्च (1500-1543); फिलाडेलफिया म्यूजियम ऑफ आर्ट
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Heilige_Walburga.jpg

---

2 कान्सटेंस की परिषद् 1414 और 1418 के दौरान बिशोपरिक ऑफ कान्सटेंस में आयोजित की गई थी। इस परिषद् का मुख्य उद्देश्य पोपों के मध्य आई फूट का अन्त करना था। इस परिषद् में 29 कार्डिनल्स, 100 'कानून और देवत्व के विद्वानों', 134 महन्तों (abbots) और 183 बिशप्स और आर्कबिशप्स ने भाग लिया था। इस परिषद् ने जॉन हुस के निष्पादन (execution) को सुगम बनाया (जॉन हुस एक चेक धर्मशास्त्री, दार्शानिक, और प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय के मास्टर, डीन और रेक्टर थे जो एक चर्च सुधारक बन गये थे)।

द्वार को बंद कर सकते हैं या खोल सकते हैं। एक और कारण यह हो सकता है कि उन्हें समाज में धार्मिक अधिकारियों की अस्वीकृति से होने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा के नुकसान का डर था। यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल है कि इनमें से किस कारण ने अधिक भय पैदा किया। यह निश्चित है कि चर्च के पास अपने साथी पुरुषों और महिलाओं के बीच व्यक्तियों की पहचान या प्रतिष्ठा को प्रभावित करने के लिए यह निर्धारित करने, कि कौन लोग सम्मान के योग्य थे, या इसके विपरीत, किन लोगों को टाला या अनदेखा किया जा सकता था, यह शक्ति थी।

जहाँ वह क्षेत्र जिसे आज यूरोप के रूप में मान्यता प्राप्त है, ईसाई बन गया, वहीं ईसाई संस्कृति मूर्तिपूजक और गैर-ईसाई व्यवहारों के मिश्रण से प्रभावित थी। **इकाई 3** में दर्शाया है कि कैसे यहूदी, ग्रीक और पूर्वी विचारों और व्यवहारों ने रोमन तथा रूढ़िवादी ईसाई धर्म के निर्माण में मदद की। मूर्तिपूजक, बर्बर लोगों के प्रभाव 'ईसाई' यूरोप के गठन पर बहुत स्पष्ट हैं। जर्मनिक और उत्तरी यूरोप में क्रिसमस के उत्सव पर देवदार के वृक्षों और शाखाओं के उपयोग की परम्परा, इस पेड़ की शाखाओं के साथ अपने घरों को सजाने की एक मूर्तिपूजक परम्परा का अंगीकरण है। यह एक मध्यकालीन प्रथा थी जो आधुनिक समय में दुनिया भर के ईसाई समुदायों में फैल गई। कुछ मूर्तिपूजकों के पवित्र पुरुष और महिलाएँ, या यहाँ तक कि देवताओं को अभी भी यूरोप भर में लोकप्रिय विश्वास के रूप में मान्यता प्राप्त थी और कभी-कभी पुनः उनका ईसाई संतों के रूप में नामकरण किया गया। कुछ ईसाई संतों को मूर्ति पूजक लोगों के प्रतिबंधित मूर्तिपूजक देवताओं या पवित्र लोगों के विशेष गुणों या 'शक्तियों' से जोड़ दिया गया। उदाहरण के लिए, वालबरगा या वालपरगा, जिनका जन्म इंग्लैंड में 8वीं सदी सी ई में हुआ था और जो, अब जहाँ जर्मनी है, वहाँ मिशनरी के रूप में गईं, और उन्हें एक ईसाई संत के रूप में पहचाना गया, जो अन्नमाता (एक जर्मनिक देवी जो रोमन देवी सेरेस के सदृश हैं) का स्थानापन्न रूप है। सेन्ट वालपरगा की शुरुआती तस्वीरें और प्रतिमाएँ उनको अनाज के डंठल को पकड़े हुए दर्शाती हैं, और इससे अन्य सबूतों के साथ यह पता चलता है कि जर्मन किसान उन्हें अनाज के फलने-फूलने और पकने हेतु विशिष्ट आराध्य संत के रूप में चिन्हित करते थे।

उन तरीकों, जिन्होंने उन्हें स्थानीय मूल्यों (और मूर्तिपूजकों के व्यवहारों) के साथ संबद्ध किया, से सन्तों को प्रतिष्ठित करके चर्च उस आबादी के ऊपर मजबूत पकड़ हासिल कर पाया जिसका वह ईसाईकरण कर रहा था। एक अन्य रणनीति मूर्तिपूजकों के त्यौहारों को संशोधित करके उन्हें ईसाई अवकाश दिवसों और अनुष्ठान पालन के कैलंडर में शामिल करने की थी। जब ईसाई अधिकारियों ने अवकाश दिवस घोषित किया, उदाहरण के लिए एक संत दिवस, जो मूर्तिपूजकों के त्यौहार के साथ मेल खाता था, तो उन्होंने परिकल्पना की कि इसके प्रतिकूल-आकर्षण होने से मूर्तिपूजकों की प्रथाओं को अनदेखा किया जाएगा और अन्ततः भुला दिया जाएगा, और यही वास्तव में अक्सर हुआ। मध्ययुगीन लोकप्रिय कल्पना में, संतों के पंथों ने उन पवित्र पुरुषों और महिलाओं का खाली स्थान भरा जो यूरोप में मूर्तिपूजकों के लिए महत्वपूर्ण थे। हालांकि चर्च ने औपचारिक प्रक्रियों के माध्यम से संतों का निर्माण किया (जिसको धन्य घोषणा [beatification] और संत घोषणा [canonization] कहा जाता था)। यह कुछ हद तक पुण्यशीलता और श्रद्धा-भाव के लोकप्रिय आचरण के प्रति प्रतिक्रिया थी। जनसाधारण और पादरी वर्ग के पास संतों में पंथों को स्थापित करने और संरक्षित रखने की शक्ति थी। गौरतलब है कि 16वीं शताब्दी में अंत तक, फ्रेडरिक तृतीय ('द वाइज'), सेक्सनी के ड्यूक और इलेक्टर (जर्मनी में), के पास एक पुरावशेष-मजुंषा थी जो एक निजी संग्रहालय था जिसमें ईसाई संतों से जुड़े हुए लगभग 19000 स्मृति चिन्ह (पवित्र वस्तुएँ) थे। इंग्लैंड के कैन्टरबरी में संतों के कई पवित्र स्थल स्थित थे और आइबेरिया का सेंटियागो दे कॉम्पोस्टेला, सेंट जेम्स के सम्मान का केन्द्र था, जो ईसा मसीह के शहीद हुए

प्रथम धर्मदूतों में थे। ये मध्ययुगीन यूरोप के लोकप्रिय तीर्थस्थलों में से थे और यहाँ तक कि अपेक्षाकृत गरीब लोग भी पुण्य प्राप्त करने के लिए वहां जाते थे।

चित्र 7.4: कैन्टरबरी का गिरिजाघर
साभारः हंस मुसिल
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Canterbury_Cathedral_-_Portal_Nave_Cross-spire.jpeg

चित्र 7.5: सेंटियागो दे काम्पोस्टेला गिरिजाघर
साभारः स्टीफनडी
स्रोतः http://en.wikipedia.org/wiki.Santiago_de_Compostela_Cathedra#/media/File:Catedral_de_Santiago_de_Compostela_agosto_2018_(cropped).jpg

जैसे-जैसे कई क्षेत्रों में कबीलाई समाज सम्मिलित होकर व्यापक राज्यों में एकत्र हुए, पूरे यूरोप में लगभग 600 से 1000 सी ई के दौरान इसी प्रकार ईसाई धर्म सुदृढ़ हुआ। मूर्तिपूजकों के पौरुषता के आदर्शों, जिसमें ईसाई धर्म-पूर्व के रोम के लिंग प्रतिमान सम्मिलित थे, ने राजनैतिक रूप से सक्रिय पुरुषों का महिमामंडन किया। इसके विपरीत, शुरुआती ईसाई शिक्षाओं ने चिंतनशील (विचारशील) और तपस्वी (मितव्ययी और विषय-वासना से दूर) जीवन को बढ़ावा दिया। प्राचीन काल के समापन दौर में विधर्मी संसार के क्रियाकलापों के प्रति निर्लिप्तता एक प्रभावी आदर्श था, जैसा कि एकांतवासी धार्मिक भिक्षुकों (स्त्रियों एवं पुरुषों) के ऐतिहासिक साक्ष्य में प्रदर्शित है। यूरोपीय मूर्तिपूजक समाजों में पुरुषत्व अत्यधिक मिलनसार और रणप्रिय था। पुरुषों से उम्मीद की जाती थी कि वे अपने सरदारों या राजाओं द्वारा बुलाई जाने वाली सभाओं और प्रतियोगिताओं में भाग लें। उन्हें शस्त्रविद्या में निपुण होना पड़ता था और युद्ध में अपने साहस का प्रदर्शन करना होता था। हम प्रारंभिक ईसाई यूरोप के कई भागों में ईसाई और मूर्तिपूजकों के मूल्यों के बीच टकराव के सबूत पाते हैं। उदाहरण के लिए, 7वीं-8वीं शताब्दी में फ्रांस में **सामंती** भू-स्वामियों के द्वारा बिशप, पुजारी और भिक्षुओं की कमज़ोर, कुटिल और व्यवहार में स्त्रीतुल्य होने के लिए आलोचना की। पादरियों का ब्रह्मचर्य और इसमें विश्वास कि लोग पारिवारिक दायित्वों की बाधा से दूर अविवाहित रहकर आध्यात्मिक रूप से शुद्ध रह सकते हैं, अधिकांश पूर्व ईसाई यूरोपीय समाजों के पुरुषत्व *और* स्त्रीत्व के आदर्शों के विपरीत था।

मूल्यों के टकराव के अलावा ईसाई धर्म ने समस्त यूरोप में सामंती संबंधों को आकार देने में विशिष्ट भूमिका निभाई। वसाल सामंती जागीरदार (जिनके पास जमीन थी) की अपने लॉर्ड (जिन्होंने भूमि अनुदान में दी) के प्रति निष्ठा सामंती संबंधों का प्रमुख मूल्य था, और ईसाई धर्म ने इस मूल्य को एक कठोर और पारस्परिक कर्त्तव्य बनाने में मदद की। ग्यारहवी शताब्दी सी ई से पूरे यूरोप में कुलीन दरबारों में जीवन को विनियमित करने वाली **शिष्टाचार** (chivalry) की संहिता[3] ने 'सच्चे विश्वास', समाज के कम शक्तिशाली सदस्यों के प्रति दया और दान-पुण्य, व्यक्तिगत संबंधों में सम्मान की सख्त भावना और ईसाई अधिकारियों द्वारा

[3] शिष्टाचार की संहिता या शिष्टाचार संहिता (Chivalry Code) एक अनौपचारिक आचार संहिता जिसे 1170 और 1220 के बीच विकसित किया गया था। लेकिन इसे किसी एक दस्तावेज में कभी व्यक्त नहीं किया गया था। यह संहिता मध्ययुगीन यूरोप में रोमन साम्राज्य के घुड़सवार सैनिक को आदर्श रूप देने के साथ पैदा हुई थी।

परिभाषित 'उचित' पर कायम रहने की निष्ठा और कर्त्तव्य परायणता की माँग की। मध्य युगीन यूरोप में चर्च के लोगों ने स्वयं को यूरोप के बर्बर सरदारों और उनके किसान योद्धा अनुयायियों को काबू में करने के लिए बधाई दी। और उनका कहना था कि उन्होंने इनके स्थान पर ईश्वरीय व्यवस्था और ईसाई शांति के साथ-साथ कृषि संबंधों की एक स्थिर व्यवस्था कायम की। यह भी मान्य तथ्य है कि ईसाई प्रतिष्ठान ने गरीबों और बीमारों की देखरेख के लिए अस्पताल और भिक्षा गृहों (शारीरिक रूप से अक्षम और बिना रिश्तेदारों वाले वृद्ध लोगों के लिए रहने के स्थान) और दान-पुण्य के अन्य रूपों के माध्यम देखभाल प्रदान की। दान-पुण्य पादरी और सामान्य जनों में समान रूप से एक केन्द्रीय ईसाई कर्त्तव्य के तौर पर व्यवहार में लाया जाता था।

7.3 ईसाईयों के गैर-ईसाईयों के साथ संबंध

मध्य युग के अन्त से पहले चर्च के प्रभुत्व के पैटर्न के अपवाद सिर्फ उत्तर पूर्वी यूरोप (स्कैंडिनेविया और बाल्टिक क्षेत्र के कुछ भाग) और आइबेरिया (स्पेन और पुर्तगाल) थे। लगभग (100 सी ई तक ईसाई धर्म की स्कैंडिनेविया और बाल्टिक यूरोप में, जहाँ जर्मन और पोलिश ईसाई योद्धाओं (knights) ने लगभग एक सदी तक 'उत्तरी धर्मयुद्ध'[4] का मंचन किया, बहुत ही कमजोर पकड़ थी। ईसाईकरण के प्रतिरोध का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण – जिसे शायद ईसाईकरण के एक अलग भिन्न पैटर्न के रूप में वर्णित किया जा सकता है – 1492 तक आइबेरिया था। यहाँ, दमिश्क, बगदाद और मोरक्को (अफ्रीका) में स्थित बहुत से राज्यों पर शताब्दियों से उमय्यद अब्बासिद, अल्मोरविद और अल्मोहाद खलीफाओं के अधीनस्थ मुस्लिम राजाओं और अमीरों द्वारा शासन किया गया था। 'मूर्स' (स्पेनिशः *मोरोस*) 7वीं शताब्दी में उत्तरी अफ्रीका से आइबेरिया में चले गये, जहाँ वह उस स्थानीय आबादी के साथ घुलमिल गये जो उत्तर रोमन काल में आंशिक रूप से ईसाईकृत हो गई थी। अल-अंदलुस नामक क्षेत्र में, जिसमें कार्डोबा के अमीरात (बाद में खलीफा) शामिल थे। वहाँ ईसाई धर्म कानूनी रूप से इस्लाम और यहूदी धर्म के साथ सह-अस्तित्व में था। इस्लामी कानून में, यहूदी और ईसाई 'पुस्तक के लोग' हैं। मुसलमान यहूदी ओल्ड टेस्टामेंट और ईसाईयों की न्यू टेस्टामेंट को सत्य मानते हैं, लेकिन इन्हें अपूर्ण ईश्वरोक्ति (revelations) भी मानते हैं जो मार्ग पैगम्बर मुहम्मद तक ले जाता है। इसलिए वे यह मानते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों को उस हद तक अपने स्वयं के सामुदायिक कानूनों का पालन करने की अनुमति दी जानी चाहिए जहाँ तक कि वे *शरीयत* (इस्लामिक कानूनों की व्यवस्था) या खलीफा जैसे इस्लामिक धार्मिक अधिकारियों के लिए उनमें कोई अपमानजनक तत्व नहीं हो। आइबेरिया के इस्लामिक राज्यों में गैर-मुसलमानों द्वारा *जज़िया* (विशेष कर) अदा किया गया। कॉर्डोबा शहर मूरिश स्पेन का रत्न (महत्वपूर्ण स्थान) था, जिसमें कई प्रभावशाली पुस्तकालय थे और जहाँ मुस्लिम, यहूदी और ईसाई विद्वानों के बीच नियमित रूप से विचारों का आदान-प्रदान होता था। जब कॉर्डोबा को 13वीं शताब्दी में ईसाईयों द्वारा पुनः जीत लिया गया, तो वहाँ की भव्य मस्जिद को अवर लेडी ऑफ द अज़म्पशन (Our Lady of the Assumption) के रूप में पुनः निर्मित कर गिरिजाघर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। कॉर्डोबा मस्जिद-गिरिजाघर में उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व के साथ-साथ ईसाई प्रतीकों और रूपांकनों में पाये जाने वाले वास्तुशिल्प के प्रतीक और विशेष लक्षण शामिल हैं।

सिसली और अन्य भूमध्यसागरीय द्वीपों पर भी कुछ समय अरबों और अन्य मुस्लिमों के द्वारा शासन किया गया था, हालाँकि यहाँ की अधिकांश आबादी ईसाई बनी रही और उसने अपने

[4] 'उत्तरी धर्मयुद्ध' या 'बाल्टिक धर्मयुद्ध' कैथोलिक ईसाई सैन्य व्यवस्थाओं और राज्य द्वारा किये गये धार्मिक युद्ध थे, जो मुख्य रूप से बाल्टिक सागर के दक्षिणी और पूर्वी तटों के आसपास मूर्तिपूजक बाल्टिक , फिनीक और पश्चिम स्लाव लोगों के खिलाफ थे।

धर्म-विश्वासों का अनुसरण जारी रखा। जब नॉर्मन (स्कैंडिनेवियाई-फ्रांसीसी) दुस्साहसी लोगों ने 11वीं और 12वीं शताब्दी सी ई में सिसली पर विजय प्राप्त की, जैसे उन्होंने 1066 सी ई में इंग्लैंड पर विजय प्राप्त की थी, उन्होंने ईसाई यूरोप के अन्य भागों की तुलना में यहाँ पर इस्लाम को काफी हद तक सहन किया।

चित्र 7.6: कॉर्डोबा की मस्जिद
साभार: जेम्स (जिम) गॉर्डन
स्रोत: विकिमीड़िया कॉमन्स

चित्र 7.7: कॉर्डोबा की मस्जिद/गिरिजाघर
साभार: केरबेरोसमानसौर
स्रोत: विकिमीड़िया कॉमन्स

आइबेरिया के अतिरिक्त कुछ यूरोपीय राज्यों ने ईसाई अधिकारियों द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों और निगरानी के साथ यहूदी धर्म को सहन किया था। ईसाई धर्मशास्त्र के अनुसार यहूदी एक 'राष्ट्र' (gens) के रूप में ईसा मसीह के हत्यारे थे, और ईसाई शिक्षा यहूदियों के पूर्ण धर्मान्तरण को एक प्रमुख आध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में मानती थी। फिर भी, इतालवी क्षेत्र के अपवाद के अतिरिक्त, जहाँ रोमन कानून यूरोप के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक गहराई से अपनी जड़ें जमाये हुए था, मध्यकालीन यूरोप की कानूनी प्रथाओं ने अधिकारिक ईसाई समाज के अन्तर्गत यहूदियों के स्वयं को शासित करने के सामूहिक या सामूदायिक अधिकारों को स्पष्ट रूप से मान्यता नहीं दी थी। इसके बजाए, यहूदियों को आमतौर पर राजा या रानी के विशेष व्यक्तिगत प्रजाजनों के रूप में कानून के तहत मान्यता दी जाती थी, और वे इस सुरक्षा और अनुग्रह को वापस ले सकते थे। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि *रिकॉनक्विस्टा* (*Reconquista*, कैथोलिक राजकुमारों द्वारा मूर राज्यों पर पुनर्विजय) तक आइबेरिया में यहूदियों ने सहनशीलता को महसूस किया। जब 1492 में इन राज्यों की पुनर्विजय पूर्ण हुई, तो यहूदियों के साथ-साथ मुसलमानों को भी ईसाई धर्म में धर्मान्तरण करना पड़ा या फिर इस क्षेत्र से निष्कासन का सामना करना पड़ा।

इस संस्थागत यहूदी विरोधी भावना के बावजूद, मध्ययुगीन यूरोप में, विशेषकर इटली और नीदरलैंड के कुछ भागों में, यहूदी-ईसाई संबंध हमेशा खराब नहीं थे। हालांकि इस अवधि के दौरान यूरोप में यहूदियों को आमतौर पर उच्च नागरिक प्रशासन के पदों से प्रतिबंधित कर दिया गया था, और उन्हें भूमि के स्वामित्व की अनुमति नहीं थी, लेकिन उनके धार्मिक नेताओं ने अधिकारियों और यहां तक कि ईसाई पादरी वर्ग के साथ धर्म, कानून और प्रशासन के मामलों में संवाद किया। *पृथक यहूदी बस्तियों* (*ghettos*; कस्बों में ईसाईयों को यहूदियों से अलग करने वाली चारदीवारी से घिरी बस्तियाँ), में रहते हुए भी यहूदी तब भी सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से ईसाई समाज से अलग नहीं थे। यहूदी ऐसी भाषाएं प्रयोग करते थे जो हिब्रू और यूरोप की स्थानीय देशी भाषाओं का मिश्रण थीं। *लाड़िनो*, या जुडियो-स्पेनिश, इन मिश्रित भाषाओं में से एक है जो सदियों से भूमध्यसागरीय क्षेत्र में इस्तेमाल की जाती रही थी। अधिकतर यहूदी, चाहे वे स्पेन, यूनान और जर्मन राज्यों में निवास करते थे, बहुभाषी थे। सुशिक्षित यहूदी न केवल हिब्रू में बल्कि लैटिन में भी कुशल थे और रोमन कानून के विद्वान भी थे। यूरोप के यहूदी, ईसाई रीति-रिवाजों और सामाजिक मानदडों के बारे में अच्छी तरह

से जानते थे भले ही उन्हें बहुसंख्यक समुदाय द्वारा कलंकित किया गया हो।

बोध प्रश्न-1

1) ईसाई संतगण की संस्था ने मूर्तिपूजक से ईसाई यूरोप में संक्रमण में कैसे सहायता की?

....

....

....

....

....

2) संक्षेप में वर्णन कीजिए कि वे कौन से तौर-तरीके थे जिनके द्वारा मध्ययुगीन चर्च ने ईसाई नियमों और मूल्यों के प्रति जनसमुदाय की आज्ञाकारिता को सुनिश्चित किया?

....

....

....

....

....

3) मध्ययुगीन यूरोप के कुछ भागों में ईसाईयों और गैर-ईसाईयों के बीच सम्बन्धों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

....

....

....

....

....

7.4 पादरी वर्ग, नैतिक निर्देश और औपचारिक शिक्षा

'प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार' (Protestant Reformation) (और अधिक जानकारी के लिए देखें **इकाई 3; बी एच आई सी-108**), 16वीं और 17वीं शताब्दी में पोप की संस्था के विरूद्ध आंदोलन, से पहले सभी लोग जो धार्मिक वर्ग (पादरी, पुरोहित) के थे, पोप द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से नियुक्त किये गये थे और पादरियों को अधिकारिक चर्च संगठनों में संगठित किया गया था। रुढ़िवादी ईसाई क्षेत्रों में धार्मिक पदाधिकारी इसी प्रकार कॉन्सटेंटिनोपल में पितृ सत्तावादी धार्मिक प्रधान (पेट्रियार्क) की अध्यक्षता वाली कमान की श्रृखंला का हिस्सा थे। जॉन ऑफ सेलिसबरी (?1115-1180), जिन्हें एक राजनैतिक सिद्धान्तकार कहा जा सकता है, ने समाज के पुरुषों और महिलाओं को तीन 'वर्गों' (orders) में विभाजित किया: वे जो *प्रार्थना* करते थे, जो *युद्ध* करते थे और जो *काम* करते थे (श्रमिक)। अधिकांश श्रमिक भूमि-कृषक थे जो मध्ययुग के दौरान विभिन्न यूरोपीय क्षेत्रों की आबादी का 70-90% हिस्सा थे। कुलीन वर्ग, जिसकी भूमिका राजा के लिए लड़ाइयाँ लड़ना और समाज के बाकी लोगों की रक्षा करना था, संख्यात्मक रूप से समाज का सबसे छोटा वर्ग था, जिसकी आबादी अधिकांश मध्यकालीन यूरोपीय राज्यों में कभी भी एक प्रतिशत से अधिक नहीं थी। जॉन ऑफ सेलिसबरी द्वारा उल्लिखित **समाज के तीन वर्गों** में से पहला वर्ग जो प्रार्थना करता था,

निश्चित रूप से पादरियों का था। कुछ यूरोपीय राज्यों में दस से पन्द्रह प्रतिशत पादरी थे, या चर्च संगठनों में काम करने वाले सामान्य जन थे (जिन्हें पादरी वर्ग के सहायकों के रूप में देखा जाता था)। शाही परिषदों और अन्य निकायों में जहाँ औपचारिक राजनैतिक विचार-विमर्श या बातचीत होती थी, उनमें राज्य के हितों को आमतौर पर इन तीन वर्गों के संदर्भ में दर्शाया जाता था। समाज के तीनों वर्गों के पास शासक से संबंध के संदर्भ में और एक दूसरे से संबंध के संदर्भ में सामूहिक रूप से विशेषाधिकारों और स्वतन्त्रताओं के अलग-अलग समुच्य थे। यह संबंध हितों के संतुलन के बारे में थे, न कि अधिकारों की समानता के बारे में, क्योंकि समाज के वर्गों की कल्पना एक-दूसरे से समानता की बजाय एक-दूसरे के पूरक के रूप में की गई थी। कुल मिलाकर पादरियों द्वारा 'आत्माओं की देख-रेख' की जिम्मेदारी शरीरों की जिम्मेदारी तक भी विस्तृत थी। जबकि ईसाई धर्मशास्त्रों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि दुःख-दर्द, पीड़ा और दरिद्रता मानव जीवन की अपरिहार्य परिस्थितियाँ थीं और यह ईश्वरीय कृपा से मानव जाति के पतन की याद दिलाती थीं (जब ईडन के बाग में आदम् और हौव्वा ने ईश्वर के दिखाए सुरक्षात्मक प्रेम का पालन नही किया था), वहीं चर्च दान-पुण्य और करूणा का भी पक्षधर बन गया था। इसलिए, पूरे मध्ययुगीन यूरोप में चर्च सामाजिक देखभाल की सेवाओं के वितरण का मुख्य समष्टीमूलक संस्थागत माध्यम था।

पादरी वर्ग को सामूहिक रूप से समाज के सदस्यों की आध्यात्मिक मुक्ति का उत्तरदायित्व सौपा गया था। पादरी, पुरोहितों और बिशपों द्वारा लोगों को, वे चाहे किसान और कारीगर हों, व्यापारी या ड्यूक और राजा, पवित्र धर्मग्रन्थों का उपदेश दिया और प्रचार किया और उन्होंने पवित्र संस्कार, चर्च की जन प्रार्थनाएं और अन्य अनुष्ठान संपादित किये। भिक्षु और भिक्षुणी ऐसे पादरी थे जिन्होंने एक विशेष *रेगुला* (*regula*; 'नियम' अनुशासन की नियमावली) के तहत अपना जीवन व्यतीत करने की सौगंध ली थी जैसे कि सेन्ट ग्रेगरी, सेन्ट फ्रांसिस, सेन्ट डोमिनिक या सेन्ट बेनेडिक्ट। हालाँकि भिक्षुओं और भिक्षुणियों को अनेक किसानों और मजदूरों की तुलना में बेहतर भोजन, कपड़े और आवास प्राप्त थे, फिर भी उन्होंने वैराग्य, और सादगी ('गरीबी, पवित्रता और संयम तथा आज्ञाकारिता') की प्रतिज्ञा ली थी, ताकि वे ईश्वर पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें। ईश्वर की भक्ति का अर्थ था ईसाई शिक्षाओं का प्रचार या संरक्षण करना, इसलिए लोगों के बीच ईसाई सिद्धान्त (Gospel) फैलाने वाले रोमन कैथोलिक भिक्षु, फ्रायर्स (friars) की श्रेणियों के अलावा भिक्षु और भिक्षुणियों के समुदायों ने विशिष्ट लिपियों के पुस्तकालयों (या स्क्रिप्टोरिया) का रख-रखाव भी किया। मठवासी लिपिकों ने पांडुलिपियों की प्रतियाँ भी बनाईं, उनमें से कुछ का समयकाल ग्रीक और रोमन समय का था, ताकि दुनिया और मानव समाज के लिए सही ज्ञान संरक्षित रह सके। परिभाषा के अनुसार, पादरी यूरोप का साक्षर वर्ग था – 'क्लर्क' शब्द क्लेरिक (पादरियों) का एक वैकल्पिक रूप है – एक ऐसी अवधि के दौरान जब छोटे दर्जे के कुलीन वर्ग के सदस्यों के बीच साक्षरता असामान्य थी पादरियों की शिक्षा की सीमा या परिमाण व्यापक रूप से विविधतापूर्ण थी, जिसमें न्यूनतम साक्षर ग्रामीण पादरियों से लेकर, जो बाइबिल को पढ़ सकते थे और लैटिन में प्रार्थना कर सकते थे, उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान शिक्षक और शोधकर्त्ता शामिल थे जिनको लैटिन और ग्रीक का गहरा ज्ञान था। कुछ पादरी और चर्च-शिक्षित विद्वान, जैसे रोजर बेकन, डन्स स्कॉटस और थॉमस एक्विनास हिब्रू, अरबी या दोनों भी पढ़ सकते थे।

मध्ययुगीन यूरोप में औपचारिक शिक्षा के अधिकांश संस्थान पादरी वर्ग द्वारा संचाालित किये गये और इसमें गाँव से जुड़े चर्च के स्कूलों (बच्चों के लिए) से लेकर गिरिजाघरों के स्कूल से ग्याहरवीं सदी के अन्त में बोलोग्ना, पेरिस, ऑक्सफोर्ड, केम्ब्रिज, वैलेडॉइड तथा अन्य स्थानों के विश्वविद्यालय शामिल थे। एक विश्वविद्यालय शुरू में 'मास्टर्स और विद्वानों' का स्वयं संस्थापित संघ (*यूनिवर्सिटास*) था। कई विश्वविद्यालय ऐसे निगमों में विकसित हुए

जिन्हें पोप की संस्था या नागरिक शासकों से चार्टर या लाइसेंस प्राप्त हुए थे। विश्वविद्यालयों ने दर्शनशास्त्र पढ़ाया (जिसके केन्द्रीय विषय के रूप में *ट्रिवियम* – व्याकरण, तर्क और अलंकार शास्त्र थे), गणित, खगोल, विज्ञान और संगीत, साथ ही कुछ प्राकृतिक विज्ञान और धर्मशास्त्र और कानून जैसे व्यवसायिक विषय (और, कुछ स्थानों में, चिकित्सा) पढ़ाये गये। इन संस्थानों में शिक्षा का अधिकारिक माध्यम लैटिन और कुछ हद तक ग्रीक भाषा थी; और लंबे समय तक अधिकांश निर्देशात्मक ग्रन्थ केवल लैटिन में प्रसारित किये गये थे। लैटिन के बिना – या रूढ़िवादी ईसाई क्षेत्र में, ग्रीक भाषा का ज्ञान ना होना – अशिक्षित समझा जाता था। उच्चतम विश्वविद्यालय की डिग्री, डॉक्टरेट, धर्मशास्त्र और कानून में प्रदान की जाती थी, लेकिन कानून में चर्च के कानून (canon) के साथ-साथ नागरिक कानून भी शामिल था। यहाँ तक कि चिकित्सा के डॉक्टर भी मानव शरीर के बारे में और आत्मा से शरीर के संबंध के बारे में चर्च की शिक्षाओं का सम्मान करते थे। मध्ययुगीन विश्वविद्यालयों में जिन ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था, उनमें से ऐसे अनेक स्वीकृत ग्रन्थों को पादरियों द्वारा लिखा गया था। यह वे लोग थे जिन्होंने पहली और आठवीं शताब्दी के बीच ईसाई धर्मशास्त्र और चर्च के व्यवहारों को संहिताबद्ध करने में मदद की थी।

चर्च का ज्ञान, जैसा कि हमने पूर्व इकाई में देखा है, प्राचीन काल के ग्रीक और रोमन विचारकों और लेखकों जैसे अरस्तु और प्लेटो से काफी प्रभावित था। प्राचीन रोमन लेखकों में, वर्जिल और सिसरो का विशेष रूप से अध्ययन किया जाता था और मध्ययुगीन लेखन में उनकी परिष्कृत लैटिन शैली के लिए सराहना भी की गई थी। इन अनुमोदित प्राचीन लेखकों (चाहे ईसाई या मूर्तिपूजक) के दावों और विचारों को खारिज करने या उनका खंडन करने का साहस बहुत कम मध्यकालीन विद्वानों ने दिखाया। मध्ययुगीन दार्शनिक थॉमस एक्विनास (1225-1274), जिन्हें कैथोलिक चर्च द्वारा एक सन्त के रूप में स्थापित (घोषित) किया गया था, उन्होंने अरस्तु और प्लेटो दोनों के कार्यों पर टिप्पणियाँ लिखीं और एक ईसाई दार्शनिक परंपरा के निर्माण में, जिसे स्कोलास्टीसिज्म (Scholasticism) के नाम से जाना गया, अरस्तु और प्लेटो के दार्शनिक विचारों से काफी कुछ ग्रहण किया। उत्तर मध्यकाल के युग के तुरंत बाद कुछ दार्शनिकों ने यह तर्क दिया कि एक्विनास और अन्य मध्यकालीन दार्शनिकों की अरस्तु पर निर्भरता मानसिक गुलामी थी। फ्रांसिस बेकन (1561-1626) और यूरोप में 'वैज्ञानिक क्रांति' से जुड़े कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार क्लासिकल विचार के प्रति मध्ययुगीन श्रृद्धा ने यूरोपीय लोगों को विशेष रूप से विज्ञान में आगे बढ़ने और नव परिवर्तन लाने से रोका था।

गिरिजाघरों के स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लगभग सभी सदस्य जिनमें वह भी शामिल थे जो विश्वविद्यालय में रहकर मास्टर बने (जो छात्रों को पढ़ाते थे और भाषण देते थे), प्राध्यापक, डीन और रेक्टर या विधिपूर्वक (ordained) नियुक्त पादरी थे या सामान्य जन जो चर्च और राज्य की बढ़ती हुई नौकरशाहियों में रोजगार प्राप्त करना चाहते थे। राजकुमारों और राजाओं ने अपने उच्च न्यायालयों, अभिलेखागारों और राज्य के कार्यालयों में पादरियों या पादरियों द्वारा प्रशिक्षित लोगों को भर्ती किया; पादरी वर्ग नागरिक प्रशासन के साथ-साथ धार्मिक प्रशासन के लिए आवश्यक थे। विभिन्न सामाजिक वर्गों (यहाँ तक कि किसान वर्ग के भी) के लड़के कभी-कभी चौदह या पन्द्रह साल की उम्र में विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते थे, लेकिन आमतौर पर अठारह या उन्नीस साल की आयु में। जिन्होंने *मेजिस्टर आरटीयम* (*Magister Artium*; एम.ए.) की डिग्री पूरी कर लेते थे, उनके पास अन्य लोगों को किसी अन्य विश्वविद्यालयों में पढ़ाने की अनुमति मिल जाती थी। शैक्षणिक प्रमाणपत्रों की मान्यता के संदर्भ में, मध्यकालीन यूरोपीय विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय और विश्ववादी थे। 'ज्ञान के प्रेमियों' के लिए एक विश्वविद्यालय से दूसरे में, यहाँ तक कि प्रदेशों से परे भी, प्रवासन करना आम बात थी।

एक दूसरा बिन्दु यह है कि लड़कियों और महिलाओं को यूरोपीय औपचारिक उच्च शिक्षा से काफी हद तक बाहर रखा गया था। सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप के विश्वविद्यालयों में महिला विद्वानों का कोई रिकॉर्ड नहीं है। मध्ययुगीन यूरोप में 'शिक्षित' महिलाएँ, इसलिए आमतौर पर कुलीन वर्ग की सदस्य थीं जिनको निजी ट्यूशन का लाभ प्राप्त हुआ था और जो कभी-कभी बहुत विदुषी होती थीं और पुरुष विद्वानों के साथ मौखिक या लिखित बहस करती थीं। क्रिस्टीन डी पिजान (1364 से लगभग 1430), फ्रांस के राजा के एक इतालवी ज्योतिषी की बेटी, एक ऐसी महिला थीं। ऐसे ही अन्ना कोमनेन (1083-1153 बाइजेन्टाइन सम्राट एलेक्सियोस प्रथम कोमनेनोस की पुत्री) थीं, जिनकी अपने समय में एक चिकित्सक और इतिहासकार के रूप में साख थी। अन्य शिक्षित यूरोपीय महिलाएँ भिक्षुणियाँ (nuns) और महन्तिन (abbesses; मठों और भिक्षु-ग्रहों की महिला अध्यक्ष) थीं। उदाहरण के लिए, हिल्डेगार्ड ऑफ बिंगेन की महन्तिन (1098-1179) को उसके अधीन भिक्षुणियों ने *मैजिस्ट्रा* घोषित किया था। उन्होंने धर्मशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान में योगदान दिया। उनकी उनहत्तर संगीतमय कविताओं का एक संग्रह चक्र, *ओरडो विरटूटम* (*Ordo Virtutum*), मध्यकालीन यूरोपीय संगीत का एक महत्वपूर्ण जीवंत उदाहरण है। हेराड़ ऑफ लैंडसबर्ग (लगभग 1130-1195) भी एक महन्तिन थीं और उन्होंने *हॉरटस डैलिसीआरम* (*Hortus deliciarm;* 'गार्डन ऑफ अर्थली डिलाइट्स') शीर्षक से एक सचित्र विश्वकोष (उपयोगी ज्ञान का संग्रह) का लेखन किया। गौरतलब है कि हिल्डेगार्ड और हेराड दोनों ही कुलीन वर्ग में पैदा हुई थीं। अगर वे भिक्षुणियाँ और 'ईसा मसीह की आध्यात्मिक वधुएँ' बनने के बजाय कुलीन वर्ग में पत्नियां या माताएँ बनी होतीं तो यह संदेहास्पद है कि इन महिलाओं को विद्वान बनने और ज्ञान के उत्पादन में योगदान करने की अनुमति मिली होती।

7.5 मध्यकालीन पादरियों और चर्च की सामाजिक शिक्षाओं की आलोचना

इस इकाई में मध्ययुगीन यूरोप में चर्च की सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति पर जोर दिया गया है, लेकिन यह जानना महत्वपूर्ण है कि ईसाई पादरी वर्ग की सत्ता पर *वाद-विवाद* हुआ और *यह वार्तालाप* के द्वारा निर्मित हुई। एक समाज की संस्कृति प्रमुख लोगों और उसकी संस्थाओं द्वारा उस संस्कृति को जैसा प्रस्तुत किया जाता है, उस तरह की आदर्श दर्पण छवि नहीं होती है। बल्कि, संस्कृति प्रभावशाली और अधीनस्थ सामाजिक समूहों के मूल्यों में एक दरार या विकृत दर्पण की तरह होती है। दोनों, अभिजात्य और जनसामान्य यूरोपीय लोगों द्वारा पादरी वर्ग की आलोचना मध्यकालीन यूरोपीय संस्कृति का एक सुस्पष्ट भाग था। यह इतालवी जियोवन्नी बोकासियो (Giovanni Boccaccio) द्वारा रचित व्यंगपूर्ण कहानियों (विशेषकर *द डिकेमरॉन*) और इंग्लैडवासी जियोफ्रे चौसर (Geoffrey Chaucer) द्वारा लिखित *द कैन्टरबरी टेल्स*, विश्वविद्यालय के छात्रों के गीतों और घुमक्कड़ विद्वानों और लोक-गायकों की कविताओं में देखा जा सकता है। मध्ययुगीन काल से उत्तरजीवी गीतों और कविताओं का एक महत्वपूर्ण संग्रह चक्र, *कार्मिना बुराना* (*Carmina Burana*; बेनेडिक्टब्यूर्न, एक जर्मन मठ, के गीत), यूरोपीय पादरी वर्ग और जन सामान्य लोगों के बीच पादरी वर्ग के मूल्यों के इर्द-गिर्द तनावों और उनके जटिल संबंधों को प्रकट करता है। लोकगीत और कथाएँ लालची या आलसी पादरियों के बारे में मध्यकालीन लोकप्रिय (कृषक) मान्यताओं को व्यक्त करती हैं।

गोलियार्ड कवियों के दृश्यरूप (12वीं-14वीं शताब्दी सी ई)

गोलियार्डस गिरिजाघर के स्कूलों और विश्वविद्यालयों के छात्र थे, जो पुजारी बनने या उच्चतर पादरी कार्यालय में कार्य पाने की (या उनके परिवारों की अपेक्षा थी) उम्मीद करते थे। लेकिन उनके पास अक्सर प्रेरणा की कमी थी या वह वास्तविक पादरी बनने के लिए

सम्मान खो चुके थे। *गोलियार्डों* ने पादरी वर्ग का मजाक उड़ाया और जितना संभव हो सका उतना अपवित्र होने की कोशिश की; उनके गाने, खान-पान और जुआ खेलने इत्यादि पर केन्द्रित थे।

उनमें जो लोग पादरियों के सहायक और प्रशिक्षु बन गये, उन्होंने छद्म ईसाई समारोहों का आयोजन किया और 'मूर्खों के भोजों' (feasts of fools) का संचालन किया। तेहरवीं शताब्दी में पेरिस विश्वविद्यालय के रेक्टर उन अधिकारियों में से थे जिन्होंने *गोलियार्ड्स* का व्यवहार खतरनाक और विध्वंसकारी पाया।

गोलियार्ड्स का निंदनीय व्यवहार और मजाक उड़ाने वाली किसानों की लोकोक्तियाँ ज्यादातर आमोदजनक थीं और शायद उन्होंने चर्च की शक्ति के लिए कभी भी गंभीर खतरा उत्पन्न नहीं किया।

जॉन हस, जॉन वाइक्लिफ और अन्य लोगों ने 14वीं और 15वीं शताब्दियों के दौरान पादरियों की पवित्र शक्ति और पोप की सत्ता पर संदेह व्यक्त किये, और इनमें से कुछ आलोचकों ने चर्च के खिलाफ विद्रोहों को संगठित किया, लेकिन हर घोषित हस्साइट या वाइक्लिफाइट के बदले हजारों ऐसे ईसाई थे जो पादरी वर्ग और उनकी भूमिकाओं के प्रति सम्मान रखते थे। यह लोग कुछ 'बुरे' पादरियों के बावजूद पादरी वर्ग की भूमिका को कम नहीं आँकते थे।

इतिहासकार अभी भी इस बात से असहमत हैं कि मार्टिन लूथर द्वारा प्रारंभ की गई चर्च संस्थान के 'अनुचित व्यवहार' की आलोचना (1517-1521) जिसने प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार की उथल-पुथल को जन्म दिया, जो यूरोप के कई भागों में गृहयुद्ध के रूप भड़का, उसका मध्ययुगीन पादरीवाद विरोधी विचारों के साथ कोई संबंध था। इतिहासकार प्रश्न चिन्ह लगाते हैं कि क्या मध्ययुगीन शताब्दियों (लगभग 1300-1600) के अंत के दौरान पादरी वर्ग के विरूद्ध भावना वास्तव में बढ़ रही थी और क्या पादरी वर्ग के खिलाफ विरोध 'समाज की श्रेणियों' के अन्तर्गत संरचनात्मक परिवर्तनों को प्रकट करता है जो शहरों में एक नये प्रकार के 'पैसे वाले' *बुर्जुआ* वर्ग (*bourgeoisie*) के उद्‌भव से संबंधित था।

स्पष्ट रूप से मध्ययुगीन यूरोप में 'बौद्धिक' गतिविधि वास्तव में चर्च का एकाधिकार नहीं थी। 1300 से 1600 के बीच पुनर्जागरण (इतालवीः *रेनासिमेन्टो* [*Renascimento*]; 'पुनर्जन्म') के रूप में जानी जाने वाली सांस्कृतिक घटना की कई इतिहासकारों ने चर्च की शिक्षाओं और मूल्यों से मानसिक मुक्ति के आन्दोलन के रूप में व्याख्या की है। माना जाता है कि यह एक नया मानव केन्द्रित दृष्टिकोण था, हालाँकि कई पुनर्जागरण काल के मानवतावादियों ने चर्च के प्रति अपनी पवित्र आस्था और सम्मान दिखाने में कसर नहीं छोड़ी। कुछ मानवतावादी स्वयं चर्च से संबंधित थे या उन्हें चर्च द्वारा संरक्षण दिया गया था। पुनर्जागरण काल की एक पुस्तक, जियोवन्नी विलानी की *फ्लोरेन्टाइन क्रॉनिकल* (*Florentine Chronicle*; चौदहवीं शताब्दी में लिखी गई), यह इंगित करती है कि फ्लोरन्स (इटली) में 1330 के दशक में प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले 35 से 40% बच्चे लड़के थे और इनमें से अधिकांश शिक्षा पादरी वर्ग के प्रत्यक्ष प्रशासन से बाहर थी। छात्र ज्यादातर लड़के और नवयुवक थे जो कम्पनियों और बैंकों के लेखानुभागों में कार्यरत हुए, जिन्होंने व्यवसायिक पत्रों की प्रतियां लिखीं या बनाईं और जिन्होंने नगरपालिका सरकार के साथ-साथ चर्च प्रशासन में भी 'लिपिक' के रूप में काम किया।

उत्तर मध्ययुगीन शताब्दियों में यूरोपीय समाज और संस्कृति में एक और उल्लेखनीय परिवर्तन लेसाइज़ेशन (laicization) से संबंधित था जिसका अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा धार्मिक अधिकारियों के द्वारा किये गये कार्यों को गैर-धार्मिक (सामान्य) जनों को हस्तान्तरित किया जाता था। ईसाई धर्म की प्राथमिक शताब्दियों से ही चर्च ने अपने प्रशासन और

अनुरक्षण में सामान्य जन को कुछ भूमिकाएँ निभाने की (जैसे संपत्ति प्रबन्धन करने की) अनुमति दी। चर्च द्वारा निर्देशित गतिविधियों में उन्होंने सामान्यजनों को संलग्न करके इसके द्वारा आम ईसाईयों में धार्मिक विश्वास को प्रोत्साहित किया। और मध्यकालीन शताब्दियों में चर्च ने कुछ सामाजिक कल्याणकारियों को सामान्य ईसाई जनों के साथ साझा किया। जर्मनी में कोल्न (कोलोन), 1500 में लगभग 30,000 निवासियों का एक धार्मिक केन्द्र था जिसमें 19 चर्च, 100 छोटे गिरिजाघर (चैपल), 22 मठ और 12 धार्मिक छात्रावास थे। इस समय कोलनट (Kolnat) में तीन से चार हजार पादरी थे, लेकिन यहाँ तक कि 'धार्मिक' संस्थान जैसे कि हॉस्टल, अस्पताल, तीर्थस्थल, आदि भ्रातासंघ (brotherhoods) और भगिनीसंघ (sisterhoods) जैसी संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे थे, जिनके संचालन में सामान्य जन की भागीदारी थी। कुछ इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि समस्त यूरोप में विभिन्न सामाजिक कल्याण संस्थाओं में सामान्य जनों की अधिकाधिक भागीदारी से आवश्यक रूप से यह साबित नहीं होता कि सामाजिक कल्याण गतिविधियों को धर्मनिरपेक्ष बनाया जा रहा था (secularized) या गैर-चर्च तत्वों द्वारा अधिग्रहित किया जा रहा था। इसके बजाय, यह तर्क दिया जाता है कि संस्थाओं में धर्मनिरपेक्षीकरण (लेसाइज़ेशन; laicization) से यह पता चलता है कि ईसाई सामाजिक उत्तरदायित्व (दान-पुण्य, बीमारों की देखभाल आदि) की भावना अधिक से अधिक ईसाई समाज में हर किसी के सरोकार के रूप में देखी जा रही थी। अन्त में, मध्यकालीन यूरोपीय संस्कृति को समझना उन तरीकों को समझे बिना असंभव है कि ईसाई धर्म ने किस प्रकार मध्यकालीन लोगों के दृष्टिकोण का गठन किया और कैसे लोगों ने (चाहे पादरी वर्ग के हों या सामान्य जन) चर्च के साथ अपने संबंध बनाये रखे।

बोध प्रश्न-2

1) मध्यकालीन समाज में ईसाई पादरी वर्ग के कार्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मध्ययुगीन यूरोप में महिलाओं को किस प्रकार से औपचारिक ज्ञान ('उच्च शिक्षा') के सृजन में भाग लेने से बाहर रखा गया और किन तरीकों से उनकी इसमें भागीदारी थी?

....

....

....

....

....

3) प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार से पूर्व मध्ययुगीन यूरोप में पादरीवाद विरोधी अभियानों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

4) मध्यकालीन यूरोप में ईसाई धर्म के लेसाइज़ेशन (laicization) का अर्थ था पादरी वर्ग और सामान्य जनों के मध्य सम्बन्धों में और उनके द्वारा निभाई गई सामाजिक भूमिकाओं में कुछ समायोजन। मध्ययुगीन यूरोप के सदंर्भ में इन बदलते सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

7.6 सारांश

प्राचीन रोमन काल के अन्त में चर्च की संस्थागत शक्ति ईसाईकरण की प्रक्रिया के साथ पूरे यूरोपीय क्षेत्रों में फैल गई। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं था कि व्यवहार में 'नागरिक सत्ता' 'आध्यात्मिक सत्ता' के अधीनस्थ थी। न ही चर्च ने मूर्तिपूजक समाजों पर ईसाई मूल्यों को लादा। मूर्तिपूजक यूरोप की पूजा शैलियों और आदतों को ईसाई व्यवहार में अपनाया गया था, हालांकि उन्हें ईसाई धर्मशास्त्र (धर्म के औपचारिक सिद्धान्त) में इतना अधिक नहीं अपनाया गया था। विधर्मियों के मुकदमे और धर्मयुद्ध चर्च द्वारा उठाए गए दंडात्मक उपायों में शामिल थे जिन्होंने यूरोपीय सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया, जबकि अवकाश दिवस और त्यौहारों का पालन, पवित्र धार्मिक स्थलों का रखरखाव, 'पुरोहिताई संबंधी देखरेख' (pastoral care) की संस्थाएँ और औपचारिक शिक्षा प्रणाली ईसाईकरण के अधिक रचनात्मक माध्यम थे। यूरोप में 'एक धर्म में विश्वास के समाज' की नीति गैर-ईसाई तत्वों को पूरी तरह से हाशिए पर नहीं डाल सकती थी, हालाँकि स्पेनिश कैथोलिक *रिकॅानक्विस्टा* (*Reconquista*) के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि जिन गैर-ईसाइयों ने धर्मान्तरण से इन्कार किया, उन्हें कैसे निष्काषित किया जा सकता था या उन्हें लगभग नष्ट किया जा सकता था। चर्च मध्य युग के पश्चात् राजतन्त्र के साथ कई शताब्दियों तक यूरोपीय 'सामन्ती' व्यवस्था का एक आधार स्तम्भ था। ईसाई धर्म यूरोपीय संस्कृति के क्षेत्र में, चाहे वह कुलीन वर्ग की थी या सामान्य जन की, सर्वव्यापी था।

7.7 शब्दावली

पादरी वर्ग/पादरी/चर्च Clergy/clerics/Church : पादरी वर्ग एक धार्मिक संगठन या सम्प्रदाय द्वारा धार्मिक कर्त्तव्यों के लिए औपचारिक रूप से स्वीकार किये गए लोग थे। रोमन कैथोलिक और कुछ अन्य ईसाई सम्प्रदायों में पादरियों को विधिपूर्वक नियुक्त (ordained) किया जाता है; पादरी के रूप में चुने गए लोग उच्च पादरी (उदाहरण के लिए, बिशप या महानगरीय बिशप) द्वारा एक अनुष्ठान के माध्यम से दीक्षित किए जाते हैं और इससे वह पवित्र संस्कार

(sacrament / अनुष्ठान) करने के लिए अधिकृत हो जाते हैं। चर्च (Church) एक धार्मिक इमारत को नहीं बल्कि पूरे संस्थागत रूप को या ईसाई धर्म – इसके कर्मियों, कानूनों, नियमों, प्रशासन, धर्मशास्त्र, संपत्ति इत्यादि – को स्थापित करने को संदर्भित करती है।

शिष्टता
Chivalry
: घुड़सवार योद्धा के लिए एक मध्ययुगीन फ्रांसीसी शब्द से व्युत्पन्न और एक घुड़सवार सैनिक (knight) के ओहदे, दायित्व अथवा शुल्क को उल्लेखित करते हुए, और विस्तार द्वारा उनसे जुड़े लोगों के प्रति ऐसे व्यक्ति के आचरण की अपेक्षा को उल्लेखित करता है। इसके सद्‌गुणों में सैन्य गुणों (knightly, virtues) के साथ सम्मान, आज्ञाकारिता, श्रद्धा और प्रेम जैसे शिष्टता के प्रमुख मूल्य थे।

ईसाईकरण
Christianization
: ईसाईकरण इसको सदर्भित करता है कि लोग कैसे ईसाई शिक्षाओं को स्वीकार करते हैं और अधिकारिक रूप से पूजा के स्वीकृत रूपों को स्वीकार करते हैं और इसका अर्थ उन विस्तृत प्रक्रियाओं से भी हैं जिनके द्वारा धर्म सामाजिक व्यवहारों और सांस्कृतिक रूपों को प्रभावित करता है।

सामंती / सामंतवाद
Feudal/feudalism
: सामंती ('Feudal') मध्यकालीन लैटिन शब्द *फियोडम* (*feodum*) से है व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ केवल भू-संपत्ति से है और सामंतवाद यूरोप में संपत्ति और भू-नियन्त्रण के एक सामान्य प्रथागत रूप को संदर्भित करता है। सामंती व्यवस्था के तीन प्रमुख तत्व भू-स्वामी (lord), मातहत (vassal) और *फ़ीफ़* (fief; भूमि का एक भूखंड) थे। भूस्वामी एक कुलीन व्यक्ति था, जिसके पास भूमि थी; एक मातहत वसाल ऐसा व्यक्ति था जिसे भू-स्वामी द्वारा भूमि का अनुदान प्राप्त था। फ़ीफ़ के उपयोग और भू-स्वामी की सुरक्षा के बदले में मातहत वसाल भू-स्वामी को कुछ प्रकार की सेवायें प्रदान करता था, जैसे श्रम। फ़ीफ़ के सम्बन्ध में भू-स्वामी और मातहत वसाल के बीच के दायित्व और उनके समरूपी अधिकार सामंतीय सम्बन्ध का आधार हैं।

गोलियार्ड
Goliard
: मूल रूप से बाहरवीं और तेहरवीं शताब्दियों के दौरान व्यंग्यात्मक लैटिन कविता लिखने वाले पादरी वर्ग के एक सदस्य का संदर्भ; यह बाद में एक घुमक्कड़ कवि के अर्थ में लिया गया था, जरूरी नहीं कि वह एक पादरी हो। *गोलियार्ड* नाम बाइबिल के महाकाय गोलियाथ से संबंधित हो सकता है, जिसको शूरवीर राजा डेविड द्वारा मारा गया, या

यह फ्रांसीसी शब्द *गेलियार्ड* ('खुशमिजाज या विनोदी व्यक्ति') का विकृत रूप हो सकता है। पोप इन्नोसेन्ट द्वितीय को लिखे गए एक पत्र में, फ्रांसीसी मठाधीश बर्नाड ऑफ क्लेअरवॉक्स ने पेरिस के विवादास्पद विद्वान पियरे एबेलॉर्ड का उल्लेख किया, जिसकी एक विधर्मी *गोलियाथ* के रूप में निन्दा की गई थी। इन सभी संदभों से पता चलता है कि, चर्च के संबंध में, *गोलियार्ड* का मतलब किसी राक्षसी प्रकृति वाले अनुशासनहीन और विधर्मी व्यक्ति से था।

जनसाधारण (Laity) : वे लोग जो चर्च को पूजा करने और उसका अनुसरण करने के रूप में मान्यता देते हैं, लेकिन पेशे से वे चर्च के सदस्य नहीं होते हैं। उन्हे दीक्षित नहीं किया जाता है और उन्हें पवित्र संस्कार (sacrament) कराने का कोई धार्मिक अधिकार नहीं होता।

समाज के वर्ग/वर्गों का समाज Orders of society/ society of orders : सामाजिक संगठन का एक प्रतिरूप जिसमें समाज के प्रत्येक सदस्य को एक समूह के साथ पहचाना जाता है जो समाज की रचना करता है और इस समूह ('वर्ग') को कानून और/या राजनैतिक प्रतिनिधित्व व्यवस्था में मान्यता प्राप्त है। 'वर्ग' (कभी-कभी इसे 'एस्टेट' (estate) भी कहा जाता है) की पहचान आमतौर पर इसके सामाजिक और व्यवसायी कार्यों से होती है। जॉन ऑफ सेलिसबरी द्वारा चर्चित समाज के तीन भाग वाले वर्गों वाला समाज 1789 तक फ्रांसीसी राजनैतिक व्यवस्थाओं में पाया जा सकता है। 1789 तक 'एस्टेट्स जनरल' (*Etats generux*) नामक फ्रांस की एक राजनैतिक संस्था में पहले, दूसरे और तीसरे एस्टेटस के प्रतिनिधि शामिल थे: कैथोलिक पादरी, कुलीन, सामान्य जन।

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 7.2 देखें

2) भाग 7.2 देखें

3) भाग 7.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 7.4 देखें

2) भाग 7.4 देखें

3) भाग 7.5 देखें

4) भाग 7.5 देखें

7.9 सदंर्भ ग्रन्थ

ब्लॉकमेन्स, विम एवं हॉपनब्रोवरर्स, पीटर, (2018) *इन्ट्रोडक्शन टू मिड़िविल यूरोप, 300-1550,* तृतीय संस्करण (एबिन्गड़न व न्यूयॉर्क : रुटलेज़).

ब्राउन, पीटर, (1996) *द राइज़ ऑफ वेस्टर्न क्रिश्चैन्डम : ट्रायम्फ एन्ड डायवर्सिटी, ए.डी. 200-1000* (ऑक्सफोर्ड : ब्लेकवेल).

सिपोला, कार्लो एम., (1993) *बिफोर द इन्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन. यूरोपियन सोसायटी एन्ड इकोनोमी, 1000-1700*, तृतीय संस्करण (लंदन : रुटलेज).

लेंसिंग, केरोल एवं एडवर्ड डी. इंगलिश, (संपा.), (2013) *ए विली-ब्लैकवेल कम्पेनियन टू द मिडिवल वर्ल्ड* (चिकेस्टर : विली एन्ड सन्स).

स्मिथ, जूलिया एम. एच., (2005) *यूरोप आफ्टर रोमः ए न्यू कल्चरल हिस्ट्री, 500-1000* (ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

7.10 शैक्षणिक वीडियो

एपिसोड 1 : होली लैंड | क्रूसेड्स | बी बी सी डाक्यूमेन्टरी
https://www.youtube.com/watch?v=vOyswuA8wEs

फर्स्ट क्रूसेड़ पार्ट 1 ऑफ 2 | एपिक हिस्ट्री टी वी
https://www.youtube.com/watch?v=ydVFqpbIIwA

इकाई 8 यूरोप में शिल्प उत्पादन का विकास*

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 संदर्भ और अन्तर्निहित कारक

8.3 शिल्प उत्पादन की प्रकृति

- 8.3.1 वस्त्र उद्योग
- 8.3.2 खनन् और धातु कर्म
- 8.3.3 काँच उद्योग
- 8.3.4 पोत निर्माण
- 8.3.5 मदिरा उत्पादन

8.4 उत्पादन का संगठनः श्रेणियाँ

8.5 कारीगरों का संघटन और स्थिति

8.6 सारांश

8.7 शब्दावली

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.9 संदर्भ ग्रंथ

8.10 शैक्षणिक वीडियो

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- मध्यकालीन यूरोप और एशिया में विभिन्न शिल्पों के विकास को समझ सकेंगे,
- उन कारकों का विश्लेषण कर पाएँगे जिन्होंने इस विकास को प्रेरित किया,
- इस अवधि के दौरान उभरने वाले कुछ शिल्पों के उत्पादन की प्रक्रियाओं की जाँच कर पाएँगे,
- उत्पादन के संगठन और कारीगरों की स्थितियों का मूल्यांकन कर सकेंगे ताकि उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति में अगर कोई परिवर्तन हुआ है तो उसको समझ सकेंगे, और
- उत्पादन के मौजूदा सम्बन्धों की संरचनाओं और सामाजिक विभेदीकरण की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर पाएँगे।

8.1 प्रस्तावना

इकाई 9 में आपको यूरोप में व्यापार और वाणिज्य के बदलते प्रारूप से परिचित कराया जायेगा, जिसने न केवल यूरोप के विभिन्न हिस्सों को जोड़ा बल्कि एशिया और यूरोप के बीच

* डॉ. अमृत कौर बसरा, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सम्बन्धों की जटिलताओं को भी प्रदर्शित किया। इस इकाई का उद्देश्य उस संदर्भ को प्रकट करना है जिसमें मध्ययुगीन यूरोप में शिल्प उत्पादन का विकास हुआ। यूरोप के भूगोल और प्रेरक कारकों पर ध्यान केन्द्रित कर आपको उन परिवर्तनों से अवगत कराया जाएगा जो समय-समय पर और समस्त क्षेत्रों में घटित हुए थे। उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्य ऐसे कई शिल्पों को दर्शाते हैं जो प्रचलन में थे। हालाँकि, कुछ शिल्प ऐसे थे जो परिसीमित विशिष्ट क्षेत्रों में थे और जिन्होंने उत्पादन के आर्थिक और संगठनात्मक ढाँचे को बदला। वस्त्र, काँच, धातु कर्म, पोत निर्माण और मदिरा बनाने के शिल्प उत्पादन के विशिष्ट अध्ययनों (केस स्टडीज) के माध्यम से इन पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

विभिन्न विनिर्माण इकाइयों का विकास उपलब्ध संसाधनों में उतना ही निहित था जितना कि उत्पादन बढ़ाने के लिए तकनीकों, मानव-संसाधनों और संगठनामक कौशल के उपयोग में। यह इकाई उत्पादन की प्रक्रियाओं, संगठनात्मक संरचनाओं और श्रेणियों (**guilds**; जो यूरोप के विभिन्न हिस्सों में स्थापित की गई थीं) की नीतियों और भूमिकाओं के माध्यम से इन पहलुओं का विवरण प्रदान करेगी।

8.2 संदर्भ और अन्तर्निहित कारक

मध्यकालीन यूरोप समरूपी नहीं था। सातवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के बीच इसमें बहुत से परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों में हम उन कारकों की पहचान कर सकते हैं जो शिल्प उत्पादन के लिए आधार प्रदान करते हैं। भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर यूरोप के भीतर विभिन्न क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। कोयला, लोहा और जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के साथ-साथ यूरोप में पर्याप्त कृषि योग्य भूमि थी। पृथ्वी के गोलार्द्ध के बीच में स्थित होने के कारण, यह तीन तरफ से पानी से घिरा हुआ है और समुद्र द्वारा दुनिया के अन्य भागों के साथ इसकी संयोजकता तथा सम्बद्धता थी। हालाँकि, विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु की परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न थीं। आय का मुख्य स्रोत कृषि था लेकिन कृषि उत्पादन यूरोप के सभी भागों में समान नहीं था। उदाहरण के लिए, इटली में उपजाऊ भूमि के क्षेत्र बिखरे हुए थे और **निम्न तटीय देशों (Low Countries)** में वनस्पति का स्वरूप समान था।

यूरोप के राजनीतिक और आर्थिक संगठन को इतिहासकारों ने सामंतवाद द्वारा परिभाषित किया है। हालाँकि इसके साथ जुड़े व्यक्तियों के अधिकारों और स्थिति को जिस बलपूर्वक लादी गई कार्य प्रणाली के द्वारा परिभाषित किया गया, वह सब जगह समान नहीं थी। भूमि और उपलब्ध संसाधन आय के मुख्य स्रोत थे और व्यापारिक गतिविधियाँ इसका हिस्सा थीं। ग्यारहवीं शताब्दी तक, शहरी क्षेत्रों के विकास, समाज के स्तरीकरण और राजनीतिक तथा धार्मिक संरचनाओं में परिवर्तन के समानान्तर जन-सांख्यिकीय परिवर्तन हुए।

कार्लो एम. सिपोला ने अपने विश्लेषण में मध्यकाल के दौरान यूरोप में निवेश के आधार पर उत्पादन के कारकों का पता लगाया है। उन्होंने इसके तहत श्रम, पूँजी और प्राकृतिक संसाधनों को सूचीबद्ध किया है। अध्ययन की अवधि के दौरान जनसांख्यिकीय प्रारूपों ने श्रम की उपलब्धता को अनिवार्य रूप से प्रभावित किया। ग्यारहवीं शताब्दी से होने वाली जनसंख्या में वृद्धि का अर्थ था कि एक ओर अधिक वस्तुओं की माँग थी और दूसरी ओर श्रम भी उपलब्ध था। ग्रामीण क्षेत्रों में कुशल और अकुशल श्रम दोनों उपलब्ध थे और अधिक महिलाओं को श्रमिकों के रूप में रोज़गार मिल जाता था।

शहरी केन्द्रों के विकास के साथ-साथ समृद्ध वर्ग के उपभोक्ताओं की उपस्थिति, पूँजी और उत्पादक इकाइयों में कुशल कारीगरों की बड़ी मौजूदगी हेतु सुविधाएं सुनिश्चित की गई थीं। यह इटली में अधिक स्पष्ट था जहाँ नगर-राज्य पुनर्जागरण के केन्द्र बन गए थे। अल्फ्रेड

वॉन मार्टिन के पर्यवेक्षण के अनुसार नगर-राज्यों में रहने वाले बुर्जुआ वर्ग के पास धन-दौलत और बुद्धि थी। जॉन स्कॉफील्ड ने पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह दर्शाया है कि लंदन विविध शिल्प गतिविधियों का केन्द्र था। सन् 1364 में एडवर्ड तृतीय के एक दान शिलालेख में सत्ताइस शिल्पों के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है। इसमें मदिरा बनाने वाले, वस्त्र विक्रेता, रंगरेज, धोबी, स्वर्णकार और लौह-विक्रेता तथा अन्य भी शामिल थे (स्कोफील्ड, 1987 : 115)। जर्मनी में शासकों द्वारा शहरों की स्थापना की शुरुआत की गई। कस्बों के इर्द-गिर्द और ग्रामीण क्षेत्रों में मठ आधारित बर्गों (Burgs) का भी विकास हुआ।

बाजारों द्वारा सुसाध्य यह शहरी केन्द्र लेन-देन के प्रमुख केन्द्र बन गए। व्यापारियों और कारीगरों दोनों को व्यापार की वृद्धि के लिए स्थानीय अधिकारियों द्वारा विशेषाधिकार प्रदान किए गए थे। ऑटो महान् (Otto The Great) के राज्याभिषेक और ओटो तृतीय की मृत्यु के बाद (931-1002) जर्मनी में 'विशेषाधिकारों के अनुदान' (grants of privileges) के माध्यम से 29 नए बाजार स्थापित किए गए।

कार्लो एम. सिपोला के अनुसार, भौतिक पूँजी का प्रतिनिधित्व उन वस्तुओं के उत्पादन में किया जाता था, जिन्हें या तो भविष्य के उपयोग के लिए संग्रहित किया जाता था या आगे उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता था। स्थायी पूँजी मिलों के रूप में सुस्पष्ट थी। ऐसी इकाइयों के निर्माण में धन का निवेश राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख व्यक्तियों द्वारा संभव किया गया था। पन्द्रहवीं शताब्दी में स्पेन, फ्रांस और इंग्लैंड में निरंकुश राजतन्त्रों की स्थापना ने अत्यधिक उत्पादन की बिक्री और आर्थिक गतिविधियों की सुरक्षा के लिए परिस्थितियों का निर्माण किया। छठी शताब्दी से तकनीकी विकास द्वारा इस प्रक्रिया को और भी अधिक सुविधाजनक बनाया गया था। उत्पादन बढ़ाने के लिए जल चक्कियों और पवन चक्कियों का इस्तेमाल किया गया था। मॉर्क ब्लॉक के अनुसार, जल चक्कियों के उपयोग के बारे में प्रमाण तीसरी शताब्दी से मिलते हैं, लेकिन मध्ययुगीन यूरोप में इनका व्यापक प्रयोग हुआ था, जिसके कारण कारीगरों के मध्य कौशल के विशिष्टीकरण का विकास हुआ।

यूरोप प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध था। कृषि का विस्तार उपलब्ध श्रम और कृषि योग्य भूमि पर निर्भर था। यूरोप के सभी हिस्सों में भेड़ों के पालन के लिए भूमि का व्यापक उपयोग होता था। ऊन की उपलब्धता ने कपड़ा उद्योग को प्रोत्साहन प्रदान किया। स्पेन, इंग्लैंड, इटली और निम्न तटीय देशों के मामलों में यह स्पष्ट दिखाई देता है। प्रारंभ में इंग्लैंड ने ऊन का निर्यात किया। इन व्यापारिक गतिविधियों में जल संसाधन भी महत्वपूर्ण थे। इंग्लैंड में टेम्स नदी व्यापार और वाणिज्य की जीवन रेखा थी। 'खोजों के युग' के दौरान अन्तर्क्षेत्रीय सम्बन्धों का विकास हुआ। यूरोप खनिज संसाधनों में भी समृद्ध था। हालाँकि खनन् के माध्यम से इनका उपयोग तकनीकी और कौशल के उपयोग पर निर्भर था।

8.3 शिल्प उत्पादन की प्रकृति

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि यूरोप में मध्यकालीन समय में स्थानीय और अन्तःस्थानीय संसाधनों का उपयोग करने वाले अनेक शिल्पों का विकास हुआ था। उत्पादन को परिष्कृत करने और बढ़ाने के लिए कई उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग होता था। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक शिल्प विकसित हुए और फूले-फले, लेकिन काफी हद तक इन कार्यों का संकेन्द्रण शहरी केन्द्रों में था। निम्नलिखित उपभागों में समय और स्थान के अनुरूप इन परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित करने के लिए कुछ शिल्पों का विशिष्ट अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

8.3.1 वस्त्र उद्योग

यूरोप में कपड़ा बनाने के काम को रोमन साम्राज्य के काल से रेखांकित किया जा सकता है। वास्तव में, हर भेड़ पालन भूमि में कपड़े का उत्पादन होता था। यूरोप में कपड़ा उत्पादन का मुख्यतः अर्थ ऊनी वस्त्र उत्पादन था जो वहाँ के मौसम की परिस्थितियों के कारण आवश्यक थे। हर स्थान की अलग-अलग विशेषताएँ थीं। उदाहरण के लिए, पुनर्जागरण काल के इटली ने रंगाई के क्षेत्र में कौशल विकसित किया और कपड़े के परिष्करण में विशेषज्ञता हासिल की। दक्षिणी इटली में स्थानीय ऊन का उपयोग करके बड़े पैमाने पर ऊनी उद्योग स्थापित किया गया था। निम्न तटीय देशों में, शुरू में वस्त्रों का उत्पादन देशी कच्चे माल से किया जाता था। यह कच्चा माल आरटॉइस, फ्रांसीसी फ्लैन्डर्स और हेनॉल्ट के चरागाहों से प्राप्त किया जाता था, जहाँ भेड़ों को पाला जाता था। रंगाई के लिए, मजीठ (madder) फ्रांस से प्राप्त किया जाता था। वस्त्र उद्योग में इंग्लैंड से आयात की जाने वाले ऊन का उपयोग भी होता था।

इंग्लैंड में ऊनी वस्त्र उद्योग के अपने अध्ययन में, लिप्सन ने चार अवलोकन किए हैं:

- कच्चा माल घरेलू स्तर पर प्राप्त किया जाता था।
- यह हर कस्बे, गाँव और छोटे गाँव में इंग्लैंड का सबसे व्यापक विनिर्माण कार्य था। बुनाई पूरे समुदाय को प्रभावित करने वाला मुख्य घरेलू व्यवसाय था।
- यह प्रथम उद्योग था जिसे राज्य ने विनियमित किया।
- इसका इतिहास घरेलू प्रणाली, श्रेणी प्रणाली और कारखाना प्रणाली के विकास के विभिन्न चरणों से जुड़ा था।

यह भी एक तथ्य है कि वस्त्र उद्योग के निम्न और उच्च चरण थे। इसमें बारहवीं शताब्दी में गिरावट आई और फ्लेमिश कपड़ा उद्योग के विकास को अप्रत्याशित उद्गामी अंग्रेजी उद्योग ने बाधित किया था।

वस्त्र विनिर्माण के चरण

- **छटाई (Sorting)** : एकत्रित ऊन की धुनाई करने के साथ यह कार्य शुरू होता था। यह अकुशल श्रमिकों द्वारा किया जा सकता था क्योंकि एकत्रित ऊन को कूट-कूट कर, धुनका तथा धोया जाता था।
- **कताई (Spinning)** : इस चरण में काम ज्यादातर महिलाओं द्वारा किया जाता था। इसमें लकड़ी के यन्त्रों में संलग्न एक छोटे धातु के कुन्डे के उपयोग के माध्यम से छोटे रेशे की ऊन को धुनकना सम्मिलित था। लकड़ी के यन्त्रों में लगे लम्बे धातु के दाँतों की मदद से लम्बे रेशे की ऊन को काता जाता था। ऊन में तेल लगाकर फिर उसे सूत में काता जाता था। इसके लिए पुराने अटेरन और तकवे का इस्तेमाल किया जाता था। चरखे के उपयोग ने कताई की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया।
- **बुनाई (Weaving)** : यह कार्य बुनकर करते थे जो बुनाई के लिए सूत तैयार करते थे। आवश्यक संख्या के धागों को अलग-अलग क्रमबद्ध किया जाता था। इनको शटल में प्रवेश कराने के लिए **चरखी** (**Bobbin**) की मदद से **रीलों** (**Spoolers**) में लपेटा जाता था। आमतौर पर, ताना धागा और बाना धागा अलग-अलग काता जाता था। चौड़े कपड़े के उत्पादन के लिए करघे (loom) का उपयोग किया जाता था। कंधे से कंधा मिलाकर बैठे पुरुषों द्वारा यह काम दोहरे करघे (double loom) पर किया जाता था। क्षैतिज करघे (horizontal loom) का उपयोग भी किया जाता था। कम चौड़े वस्त्र की बुनाई के लिए एकल करघे (single loom) का उपयोग किया जाता था।
- **धुलाई (Fulling)** : यह एक मुश्किल काम था जिसको ज्यादातर उन कस्बों में किया जाता था जिनमें जल निकायों की आसानी से उपलब्धता थी। इस अवस्था में कपड़े को **नांद (trough)** में डालकर पदचापों द्वारा रौंदा जाता था। इस प्रकार धोए गए कपड़ों को कपड़े सुखाने के स्टैण्ड पर टाँगकर,

सीधी लकड़ी के सांचे में सुखाया जाता था। इस तरह लटकाए गए बहुत से कपड़ों को कपड़े सुखाने के स्टैण्ड के हुक के साथ बाँधा जाता था। इटली में यह उत्तर के आयातित अनिर्मित कपड़ों के परिष्करण के लिए मुख्य व्यवसाय के रूप में उभरा। इस प्रक्रिया को वेत्ती (Vettii) के घराने के भित्तिचित्रों और फूलोनिका (Fullonica) की दीवारों पर स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। बारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड और फ्रांस में धुलाई (फुलिंग) की मिलों का आविष्कार किया गया था। इनमें मानवीय श्रम के बजाय जलशक्ति का उपयोग किया गया था। नवीन झुकाव हथौड़ा प्रणाली (tilt hammer system) के तहत, एक घूमने वाले ड्रम को एक पानी से चलने वाले पहिए (water wheel) को धुरी से जोड़ा जाता था। जब यह घूमता था तो तब लकड़ी के हथौड़े उठ जाते थे और कपड़े पर गिरते थे। इस पूरी प्रक्रिया पर नजर रखने के लिए केवल एक व्यक्ति की आवश्यकता थी।

- **परिष्करण प्रक्रिया (Finishing Process)** : कपड़े की अच्छी गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए वस्त्र के अतिरिक्त रेशों को खींचा और कतरा (raising and shearing) जाता था। ऊनी वस्त्रों के रेशों को उभारने (**नेप; nap**) के लिए नमी वाले कपड़ों को ही लकड़ी के खाँचों में कतारों में लगाया जाता था। कपड़ा सुखाने के बाद फिर कतरा जाता था। कतरने वाले ग्राइन्डर के उपयोग ने कपड़े की महीन सतह को सुनिश्चित किया। मुलायम कपड़ा प्राप्त करने के लिए यह प्रक्रिया कई बार दोहराई जाती थी। तत्पश्चात् इसे ब्रश करके, दबाकर फोल्ड किया जाता था।

- **रंगाई (Dyeing)** : यह उत्पादन के किसी भी चरण में किया जा सकता था। यह उत्पादन के मूल्य और गुणवत्ता निर्धारित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में सभी प्रकार के रंजकों का उत्पादन होता था। लकड़ी और मजीठ स्थानीय उत्पाद थे। भूमध्यसागरीय क्षेत्र ने चमकीले लाल, करमीज (kermes) और फिटकरी (alum; जो रंगों को पक्का करने के लिए जरूरी थी) की आपूर्ति की। उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों से लाल तुलसी की प्राप्ति होती थी। काले रंग को बनाने के लिए लकड़ी का उपयोग किया जाता था। पोटाश उत्तरी जर्मनी और बाल्टिक क्षेत्र से आयात की जाती थी। उस समय के नियमों के तहत् इसका उपयोग अनिवार्य था।

रंगाई एक कौशलपूर्ण कार्य था क्योंकि कारीगर को उसके द्वारा उपयोग की जाने वाली सामग्री के गुणों की जानकारी होना आवश्यक था। उसे ऊन, रंजकों और रंगबंधकों (mordents) की गुणवत्ता और मात्रा से भी परिचित होने की जरूरत थी। उसको फिटकरी, ऊन के जमाव और विभिन्न प्रकार की गुणवत्ता वाली ऊन का उपयोग कैसे करना है, इसकी जानकारी भी जरूरी थी। रंगाई की दो तकनीकें थीं। जिसमें एक ऊन के लिए और दूसरी लाल और अन्य कपड़ों की रंगाई के लिए विशेषीकृत थी। यह काम बड़े वृत्ताकार हौजों में किया जाता था। कारीगरों द्वारा डन्डे की मदद से कपड़े को पलटा जाता था। इतालवी कारीगरों को इस काम में विशेषज्ञता हासिल थी।

8.3.2 खनन् और धातु कर्म

मध्यकालीन यूरोप खनिज संसाधनों से समृद्ध था। लोहे के साथ-साथ सोने और चाँदी की धातुओं के भण्डार यूरोप के कई भागों में स्थित थे। खनन् कार्य की प्रवृत्ति सतह के पास मौजूद खनिजों के उपयोग और निकास की थी। व्यापक पैमाने पर कृषि को महत्वपूर्ण समझा जाता था और खनन् में बहुत कम रुचि थी। वास्तव में, तीसरीं शताब्दी के बाद से लौह के खनन् को छोड़कर अन्य धातुओं के खनन् में गिरावट देखी गई। दसवीं शताब्दी से एक परिवर्तन देखा गया, जब खनिजों का राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से खनन् किया जाने लगा। शासकों और कुलीन वर्ग ने खनन में अपने हिस्से को सुनिश्चित कर खनिकों को खनिज संसाधनों की खोज और खनन् करने को प्रोत्साहित किया। ऑटो महान् ने खनन् गतिविधियों के लिए वित्तीय रियायतें दीं।

समय के साथ लोहे की माँग इस अवधि में बढ़ी क्योंकि यह उपकरण, हथियार, समुद्री जहाज और गोथिक काल के भवनों के निर्माण के लिए आवश्यक था। इसने अंतर्क्षेत्रीय लेन-देन को भी बढ़ावा दिया। खदान-कर्मी एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए और जहाँ-जहाँ लोहे का खनन् किया जाता था, वहाँ छोटी-छोटी भट्टियाँ स्थापित की गईं। यह प्रवृत्ति फ्रांस में दिखाई देती है। इसके लिए बहुत कम पूँजी की आवश्यकता थी। जब एक बार लकड़ी जैसे प्राकृतिक संसाधन, जो लकड़ी के कोयले (चारकोल) को बनाने के लिए जरूरी थे, खत्म

हो जाते थे, खदान-कर्मी दूसरी जगह चले जाते थे।

तेरहवीं शताब्दी के दौरान फ्रांस, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और निम्न तटीय देशों में कोयले की खुदाई सुव्यक्त थी। कोयला प्राप्त करने के लिए खदान-कर्मी छिछले गड्ढ़ों में खुदाई करते थे। हालाँकि उत्खनन् व्यापक था, एक अन्य विधि का भी उपयोग किया गया था। इसमें सतह के कुछ फीट नीचे तल पर एक तरह की चौड़ी गुफा खोदी जाती थी।

तेरहवीं शताब्दी में चाँदी प्राप्त करने के लिए मध्य यूरोप में शाफ्ट (shaft) खनन् का उपयोग किया जाता था। इसकी सामान्य कार्य विधि यह थी कि चाँदी धारक अयस्क के ढ़लान वाले क्षेत्र में छेद करके दर्जनों गड्ढ़े बनाए जाते थे। खान से पानी की निकासी के लिए प्राथमिक तरीकों का इस्तेमाल किया जाता था। आमतौर पर, चमड़े की बाल्टियों से हाथ से पानी निकाला जाता था। कभी-कभी शाफ्ट की तली से, जिसका मुँह घाटी में खुलता था, खंदकों को खोदा जाता था। चौदहवीं शताब्दी में बोहेमिया में खान में आने-जाने वाले लम्बे **क्षैतिज प्रवेश मार्गों (adits)** का इस्तेमाल किया गया। कभी-कभी पानी को बाहर निकालने के लिए घोड़ों द्वारा संचालित मशीनों का प्रयोग किया जाता था।

धातुओं के परगलन (smelting) और परिष्करण के लिए नई विधियों का विकास किया गया। अपरिष्कृत धातुओं को धोने, तोड़ने और पिसाई के लिए शारीरिक श्रम को लगाया जाता था। परगलन कर्मियों ने अयस्कों के शोधन के लिए विभिन्न प्रकार के चूल्हों, बर्तनों, तंदूरों और भट्टियों का उपयोग किया। कम पूँजी की आवश्यकता वाले खुले चूल्हे उपयोग में थे। इस प्रकार चाँदी के अयस्क के परिष्करण को धोने, तोड़ने, पिसाई करने और परगलन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था। इसके पश्चात् सीसे (lead) को अलग करने के लिए छेदों वाले चूल्हे (cupelling hearth) में ऑक्सीकरण की प्रक्रिया होती थी। धौकनियों (bellows) की मदद से चाँदी को और अधिक परिष्कृत किया जाता था। तेरहवीं शताब्दी के दौरान, हथौड़ों और धौकनियों को चलाने के लिए ट्रेन्ट की चाँदी की खानों में पानी से चलने वाले चक्के स्थापित किए गए थे।

इसकी अगली शताब्दी में, तीन प्रकार की भट्टियों का उपयोग किया गया था। अब उन्होंने पुरानी ब्लूमर भट्टियों (bloomer forges) को हटा दिया। इन तीन में सबसे प्रभावी भट्टी 'स्टूकोफेन' (stuckofen) थी। मध्य यूरोप, पूर्वी फ्रांस और अल्पाइन जिलों में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। इस भट्टी की ऊँचाई लगभग दस फीट थी। इसकी संरचना में ऊपर और नीचे लगभग दो फीट का एक वृत्ताकार चतुष्कोणीय शाफ्ट शामिल था। बीच के भाग में इसका माप पाँच फीट था। इस भट्टी ने उत्पादन बढ़ाया। इस अवधि के दौरान जल निकासी के अधिक शक्तिशाली इंजन बनाए गए और भूमिगत मार्गों को हवादार बनाने के बेहतर तरीके अपनाए गए। यह हंगरी और सेक्सनी में सुस्पष्ट था। सबसे गहरे गड्ढ़े से पानी को तीन चरणों में निकाला जाता था। तत्पश्चात् इसे प्रवेश मार्ग तक ले जाया जाता था। प्रत्येक चरण पर एक घोड़े द्वारा चालित बड़े पहिए को घुमाने से पंप को गति मिलती थी। इन पहियों को घुमाने के लिए पशुओं को ढ़लावदार शाफ्ट की जगह रखा जाता था जो चूड़ीदार पेंच की तरह घुमावदार और ढ़लावदार था।

वात्या भट्टी (blast furnace) के उपयोग से लोहे और कांस्य के उत्पादन में वृद्धि हुई।

कांसा टिन और तांबे का एक यौगिक था। इसको तैयार करने के लिए मिट्टी में साँचे तैयार या स्थापित किए जाते थे। इन साँचों में गरम तरल डाला जाता था। ढलवां लोहे (cast iron) के लिए भी इस समान विधि का उपयोग किया जाता था। भट्टी में बहुत ऊँचे तापमान पर अयस्क को कार्बन के सम्पर्क में लम्बे समय तक रखा जाता था। इसके परिणामस्वरूप ढ़लवां लोहे का उत्पादन होता था, जिसका आगे डी-कार्बुराइज़ेशन के द्वारा परिशोधन होता था।

यह ऑक्सीकरण की स्थिति के अंतर्गत अयस्क को दोबारा गर्म करके किया जाता था। तैयार उत्पाद, उपकरणों, हथियारों और कवचों को बनाने के लिए उपयोगी था।

8.3.3 काँच उद्योग

काँच का निर्माण पिघलाकर और उसके बाद रेत और लकड़ी के ठंडा होने से होता था। यूरोप को प्राचीन काल से इसका ज्ञान था। तेरहवीं शताब्दी के दौरान खिड़कियों की सजावट में इसका उपयोग व्यापक हो गया था। यह वह समय था जब इटली, विशेष रूप से रोम में, खूबसूरत गिरिजाघर बनाए गए थे। हालाँकि यह एक व्यापक उद्योग केवल सोलहवीं शताब्दी में ही बना। अभिरंजित काँच (stained glass) की कला 1150 और 1500 सी ई के मध्य फली-फूली। जर्मन भिक्षुक टियोफिलस ने अपनी पुस्तक *ऑन डाइवर्स आर्ट्स* में अभिरंजित काँच बनाने का विस्तृत वर्णन दिया। इसमें काँच का काम करने करने वाले और काँच पर चित्रकारी करने वालों का गहरा अध्ययन सम्मिलित था।

विनिर्माण चरण में जब काँच पिघली अवस्था में था, उसमें कुछ धातुओं के पाउडर को मिलाया जाता था और तरल को चद्दर के रूप में समतल किया जाता था। खिड़की बनाने के लिए, पहले प्रस्तावित डिजाइन की एक तस्वीर बोर्ड पर खींची जाती थी। फिर अभिरंजित काँच के विभिन्न टुकड़ों को बोर्ड पर इकट्ठा किया जाता था। इन्हें एच आकार की पट्टियों में फिट किया जाता था जिन्हें कैम्स (cames) कहा जाता था। प्रत्येक काँच के टुकड़े को पास-पास रखकर पैनल को सुरक्षित किया जाता था। एक बार पैनल तैयार होने के बाद इसे वाटर प्रूफिंग के लिए प्रत्येक काँच और सीसे के कैम्स के बीच डाला जाता था। पूरी रचना को लोहे के फ्रेम के साथ स्थिर किया जाता था और खिड़की पर चढ़ाया जाता था।

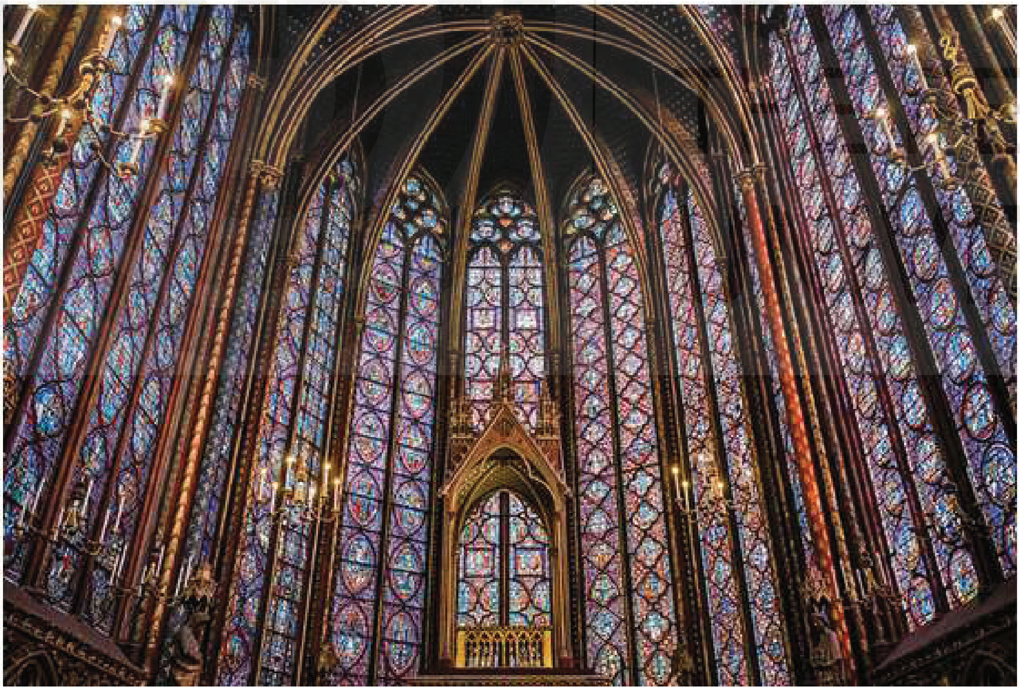

चित्र 8.1: सेंट चैपल अभ्यन्तर-अभिरंजित काँच
साभारः ओल्डमेनिसोल्ड
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/French_Gothic_architecture#/media/ File:Sainte_Chapelle_Interior_Stained_Glass.jpg

इस उद्योग का केन्द्र वेनिस था। पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान वेनेशियनों ने बड़े शुद्ध पारदर्शी काँच, शानदार पत्थरों के काँच और घुमावदार काँच की छड़ियों का उत्पादन किया। काँच के निर्माताओं द्वारा टैंक भट्टियों का प्रयोग किया जाता था।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

8.3.4 पोत निर्माण

पन्द्रहवीं शताब्दी में 'खोज के युग' की पहचान जिन समुद्र पार यात्राओं से होती थी उसको समुद्री जहाज के निर्माण में तकनीकी परिवर्तनों द्वारा सुविधाजनक बनाया गया। जे.एच. पैरी ने अपने विश्लेषण में इस प्रक्रिया में नौपरिवहन उपकरण और नवनिर्मित जहाजों की भूमिका को रेखांकित किया है। फैंकोइस क्रूज़े के अवलोकन के अनुसार भूमध्यसागर, अंटलाटिक और उत्तरी समुद्र के क्षेत्रों के बीच तकनीकी आदान-प्रदान के द्वारा सामुद्रिक यूरोप का निर्माण हुआ था।

दसवीं शताब्दी के दौरान, तटीय व्यापार के लिए कंगूरे वाले जहाजों (cog ships) का उपयोग किया जाता था। पोत का निर्माण नौतल से शुरू किया जाता था। मोटी लकड़ियों की तख्तियों के प्रयोग से जहाज के पेटे (hull) को जोड़ा जाता था। इससे मालवाहक जहाज में भण्डारण के लिए काफी स्थान मिलता था। जहाज के पेंदे (hull) को एक-दूसरे को ढ़कते हुए तख्तों के साथ जोड़ा जाता था। इनको अपनी जगह स्थिर रखने के लिए कील ठोकी जाती थी। चप्पू, जलयान के पीछे की तख्तियाँ और लम्बे सीधे लकड़ी के बीम जहाज के नौतल से जुड़े हुए थे।

मस्तूल जहाज के नौतल से जुड़ा एक एकल लकड़ी का लठ्ठा था। पाल को पकड़ने के लिए एक ओर क्षैतिज लकड़ी की बीम लगाई जाती थी। इसको रस्सियों द्वारा मुख्य मस्तूल से जोड़ा जाता था। पाल एक चौकोर टुकड़ा होता था। मस्तूल को स्थिर रखने के लिए जहाज के दोनों तरफ रस्सियाँ बाँधी जाती थी। एक बार पाल नीचे होने के बाद यह एक लम्बे लकड़ी के खम्बे बोस्प्रिट (bowsprit) से जुड़ता था इससे पाल स्थिर रहता था और उसमें हवा के भरने से पाल को प्रभावी बनने में मदद मिलती थी। पूर्वी मूल के तिकोने पाल (lateen sail; जहाज पर लगाए गए त्रिकोणीय पाल) का उपयोग उत्तर में व्यापक हो गया। लगभग 1430 में पुर्तगालियों द्वारा कार्वेल (caravel) निर्माण तकनीक ने जहाज निर्माताओं के लिए दो या तीन मस्तूल वाले तिकोने पाल वाले बड़े और हल्के जहाजों का निर्माण संभव बना दिया।

चित्र 8.2: बल्लियों, रस्सों आदि से व्यवस्थित तिकोने पाल वाले कारवेल, पुर्तगाली लम्बी दूरी की खोजों के लिए मुख्य पोत

साभारः नेवी ऑफ ब्राजील

स्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Caravel_Boa_Esperanca_Portugal.jpg

धीरे-धीरे मालवाहक जहाजों और नौ सेना के जहाजों को विकसित किया गया। जहाज निर्माता 'प्रथम फ्रेम' की विधि का उपयोग करते थे। इस पद्धति के तहत् पहले जहाज का फ्रेम तैयार किया जाता था फिर इसके साथ बाकी तख्ते बांधे जाते थे। उन्होंने पालों के लिए एक से अधिक मस्तूलों के उपयोग का प्रयोग भी किया। इस प्रकार जहाजों को लम्बी समुद्रपार यात्राओं के लिए विकसित किया गया और उन्होंने व्यापार के विस्तार और उपनिवेशों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने शक्तिशाली राज्यों के बीच प्रतिद्वंदिता को भी बढ़ावा दिया।

8.3.5 मदिरा उत्पादन

मध्यकालीन यूरोप में कुछ षि उत्पादों का अत्यधिक व्यापारिक महत्व था और उन्हें बाजारों में बेचा जाता था। ऐसा ही एक उत्पाद था मदिरा, जो फलों के रस, मुख्यतः अंगूर के किण्वन (fermentation) द्वारा उत्पादित किया जाता था। मध्ययुगीन यूरोप में मदिरा सबसे अधिक व्यापार की जाने वाली वस्तु बन गई। मदिरा यूरोप में मध्यकालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित थी। उदाहरण के लिए, धार्मिक समारोहों में इसकी आवश्यकता थी। अंगूर के बागों को विकसित करने में चर्च की भूमिका महत्वपूर्ण थी। अंगूर की खेती श्रम प्रधान थी और इससे जुड़े छोटे किसानों की स्थिति में सुधार हुआ।

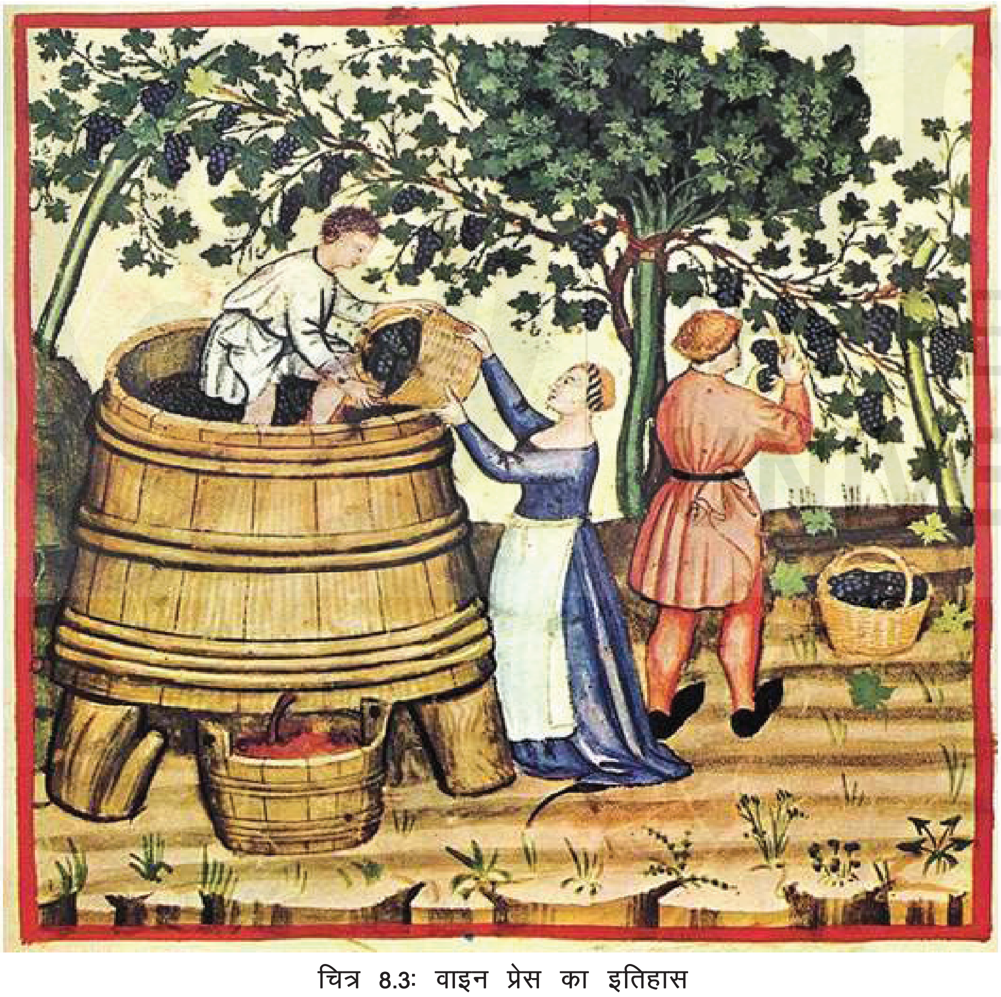

चित्र 8.3: वाइन प्रेस का इतिहास
साभार: बुक स्केन
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:29-autunno,Taccuino_Sanitatis_Casanatense_4182.jp

अंगूर के बागों का विकास पेरिस, रीम्स और मौसेल जैसे दक्षिण-पश्चिमी फ्रांस के भागों, फ्लैडंर्स और इंग्लैंड में हुआ था। इस उद्योग में विशिष्टीकरण तब शुरू हुआ जब स्पेन ने अफ्रीका के अनेक भागों में अपने उपनिवेश स्थापित किए।

मदिरा बनाने के चरण

- फसल की शुरुआत **(Date of Beginning)** की तारीख की घोषणा की जाती थी।
- चयन **(Picking):** यह चरण मदिरा के रंग से तय किया जाता था कि वह लाल या सफेद रंग की थी (आधुनिक बोलचाल में)।
- अंगूरों को एकत्रित करना **(Collection of Grapes):** अंगूरों को टोकरियों में एकत्र किया जाता था और बाद में बड़े कुण्डों में और उन्हें किसी प्रकार के छायादार स्थान पर रखा जाता था, आमतौर पर अंगूर की खेती करने वालों (vigneron) के घर के पास।
- संकोचन **(Pressing):** पहले चरण में अंगूर को मोटा-मोटा दबाया जाता था, अंगूरों को श्रमिकों द्वारा कदमों से या लकड़ी के तख्तों का उपयोग करके दबाया जाता था। दबाने के बाद रस एकत्र किया जाता था।
- *मार्क* को दबाना **(Pressing the *Marc*):** बचे हुए भुर्ता बने अंगूरों के द्रव्यमान या *मार्क* को कम से कम एक बार दोबारा दबाया जाता था। अंगूर की खेती करने वालों (vigneron) का कौशल मदिरा के स्वाद और रंग को निर्धारित करता था। दबाने की संख्या में बदलाव करके वह, मदिरा की अम्लता को बढ़ा सकता था और इसके स्वाद और रंग को बदल सकता था।
- मदिरा का किण्वन **(Fermentation of the Wine):** मदिरा को एक निश्चित तापमान पर, जो न बहुत ठंडा या गर्म होना चाहिए, कई दिनों तक पीपों में रखा जाता था। उस समय जब मदिरा उद्योग की तकनीकी अधिक विकसित नहीं हुई थी, यह अंगूर की खेती करने वाले के अनुभव के अनुसार किया जाता था। लगभग 1590 के आसपास तक बोर्डेलेस (Bordelais) में मदिरा को वाइन प्रेस के द्वारा दबाने का दूसरा चरण आमतौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाता था। उत्तरी यूरोप में उत्पादित मदिरा विशेष रूप से मौसेल और राईनलैंड के अंगूर के बगीचों में आमतौर पर तापमान की सीमा के कारण सफेद होती थी। लाल रंग की मदिराओं का उत्पादन अधिक जटिल था। सफेद और लाल रंग की मदिराओं के उत्पादन के बीच मूल अन्तर यह था कि सफेद मदिरा बनाने में किण्वन लंबी अवधि तक हो सकता था। दबाने से पहले अंगूर से डंठल निकालना, उत्पादित मदिरा के प्रकार के निर्धारण का एक और तरीका था। मध्यकालीन मदिरा निर्माता अपने उत्पाद को लम्बे समय तक संग्रहित नहीं करते थे। वे इसे जल्दी से जल्दी बाजार में बेचना चाहते थे। उन दिनों पुरानी मदिरा को बहुत संदेह के साथ देखा जाता था। इसके अतिरिक्त उन दिनों में भण्डारण की कठिनाइयाँ बहुत अधिक थीं। पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत तक, पश्चिम यूरोप के कई क्षेत्रों में अंगूरों की खेती और मदिरा को तैयार करना एक स्थापित वाणिज्यिक गतिविधि के रूप में उभरा।

स्रोतः रोज, सूज़न, 2011, *द वाइन ट्रेड इन मिडिवल यूरोप 1000-1500*, लंदन एवं न्यूयार्कः कॉन्टीनमः 33

बोध प्रश्न-1

1) जल-चक्कियों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि कैसे हुई?

....

....

....

....

....

2) यूरोप में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषता क्या थी?

....

....

....

....

....

3) मध्ययुगीन यूरोप में भवनों के निर्माण में काँच के उपयोग पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

....

....

....

....

....

4) मध्ययुगीन यूरोप में वस्त्र विनिर्माण से सम्बन्धित विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

5) मध्ययुगीन यूरोप में खनन् कार्य के लिए प्रमुख विधि क्या थी?

....

....

....

....

....

8.4 उत्पादन का संगठनः श्रेणियाँ

उत्पादन को नियमित करने के लिए और गुणवत्ता, मात्रा, आवश्यक कौशल, कार्यों की समयबद्धता और प्रतियोगिता के उन्मूलन के लिए विशिष्ट संगठनों का गठन आवश्यक था।

ईसाई धर्म की शुरुआत से ही ईसाईयों का भाईचारा अस्तित्व में था और उसने ईसाई निष्ठावानों की आध्यात्मिक और भौतिक जरूरतों का ख्याल रखा। लिप्सन के अनुसार यह 'शहरी अर्थव्यवस्था' ही थी, जिसके कारण यूरोप के कई भागों में श्रेणियों की स्थापना हुई। इसका नेतृत्व राजनीतिक शक्ति प्राप्त व्यापारियों की श्रेणी ने किया। यह विकास इटली में सबसे अधिक स्पष्ट था। धीरे-धीरे शिल्पों की श्रेणियाँ भी अस्तित्व में आईं। इनको राजकीय चार्टरों के माध्यम से स्थापित किया गया था और स्थानीय प्रशासन के साथ इनके निकटता के सम्बन्ध थे।

इन संगठनों की मुख्य भूमिका यह सुनिश्चित करना था कि एक विशेष शिल्प के सभी सदस्य इसके प्रधान सदस्यों के रूप में हों। वस्तुओं के विनिर्माण और उत्पादन के विनियमन को प्रशिक्षुओं की भर्ती करने वाली सुपरिभाषित कार्यप्रणाली के द्वारा सुनिश्चित किया गया। आंतरिक प्रतिस्पर्धा को समाप्त करने और मुकदमेबाजी को कम करने के लिए भी कदम उठाए गए। ऐसे समय में जब धर्म की भूमिका मार्गदर्शक की थी, प्रत्येक श्रेणी ने धर्मार्थ गतिविधियों में भी भाग लिया और उनके अपने संरक्षक संत भी थे।

एक शिल्प की श्रेणी में तीन प्रकार के सदस्य अर्थात् मास्टर (masters; प्रमुख कारीगर), जर्नीमेन-कारीगर (journeymen) और प्रशिक्षु (apprentices) होते थे। प्रशिक्षुता की संस्था शिल्प श्रेणियों की सबसे विशिष्ट विशेषता थी। यह उन लोगों को प्रशिक्षण देने का एक माध्यम था जो अपने हाथों या बुद्धि से काम करते थे। इन शिल्प श्रेणियों की परम्परा यूरोप के सभी भागों में मौजूद थी। लंदन में, यह तेरहवीं शताब्दी के दौरान स्थापित हुई और अन्य शहरों में फैल गई। यह कारीगरों को प्रशिक्षित करने के लिए एक कार्यप्रणाली थी और यह श्रेणियों का एकाधिकार बन गया। दूसरे शब्दों में, जो लोग शिल्पकार बनना चाहते थे उन्हें प्रशिक्षुता की एक निश्चित अवधि से गुजरना पड़ता था। इस प्रणाली के तहत, मास्टर जिस प्रशिक्षु को प्राप्त करता था, उसे प्रशिक्षित करने और उसके खाने-पीने, रहने की देखभाल करने का उत्तरदायित्व भी लेना पड़ता था। कभी-कभी प्रशिक्षु को एक छोटा सा वेतन भी दिया जाता था। मास्टर प्रशिक्षु के व्यवहार के लिए भी उत्तरदायी था और उसके पथभ्रष्ट होने पर उसे दंडित कर सकता था। प्रशिक्षु को अपने मास्टर के प्रति आत्म-अनुशासन, आज्ञाकारिता और वफादारी प्रदर्शित करनी पड़ती थी। लिप्सन ने ठीक ही इंगित किया है कि शिल्प श्रेणियों का अन्तर्निहित उद्देश्य प्रगति की अपेक्षा व्यवस्था और विस्तार की अपेक्षा स्थायित्व था।

प्रत्येक मास्टर को प्रशिक्षुओं की एक विशिष्ट संख्या रखने का अधिकार था। प्रशिक्षुता की अवधि भिन्न-भिन्न, अल्प कार्यकाल से लेकर सात वर्ष तक, होती थी। प्रशिक्षु को ग्यारह साल की उम्र में दीक्षित किया जा सकता था। प्रशिक्षुता खत्म होने के बाद प्रशिक्षु को कारीगर या जर्नीमेन के रूप में काम पर रखा जा सकता था। यह जर्नीमेन की अवस्था भी कुछ सालों तक रहती थी। इसके आगे ऊपर की ओर गतिशीलता के लिए गुंजाइश थी बशर्ते कोई अपने शिल्प कौशल को साबित कर सके।

महिलाओं की बहुत कम श्रेणियाँ थीं। श्रेणियों ने कुल मिलाकर क्रेताओं को बेचे जाने वाले उत्पाद की गुणवत्ता को सुनिश्चित किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए गए कि मूल्यों और क्रय को प्रभावित करने वाला वस्तुओं का अतिरिक्त उत्पादन न हो। इन श्रेणियों ने यह भी सुनिश्चित किया कि इसके जो सदस्य विपत्ति में थे और गरीब और वृद्ध व्यक्तियों के लिए संस्थाएँ बनाकर उनकी मदद की जाए। वे धार्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों में भी सम्मिलित थे। उदाहरण के लिए, ऐसी ही क्रिस्टी कैम्ब्रिज नाम की एक श्रेणी थी जिसने अपने नाम से एक कॉलेज की स्थापना की। समय के साथ जैसे-जैसे बाजारों का विस्तार हुआ और स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंडियों ने अधिक उत्पादन का मार्ग प्रशस्त किया, अनेक शिल्प श्रेणियाँ लंदन की वस्त्र कम्पनियों में रूपांतरित हो गईं।

इस तरह तकनीकी परिवर्तनों के साथ उत्पादन को नियमित करने वाले संगठन उभरे और शिल्प श्रेणियों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि, माँग में उतार-चढ़ाव या उत्पाद की गुणवत्ता में गिरावट और जानबूझकर मूल्य में कटौती के मामलों में श्रेणी को चुनौती दी जा सकती थी। सोलहवीं शताब्दी के दौरान इटली के संदर्भ में ऐसा ही हुआ था।

8.5 कारीगरों का संघटन और स्थिति

उपरोक्त वर्णन में यूरोप में प्रचलित केवल कुछ शिल्पों की जाँच पड़ताल की गई है। शहरों में और अन्य व्यापक गतिविधियाँ थीं। उदाहरण के लिए, भवनों के निर्माण का विस्तार हो रहा था। प्रारंभ में, निर्माण की मुख्य सामग्री के रूप में मिट्टी का उपयोग किया जाता था। लेकिन, बाद में इसकी जगह पत्थर ने ले ली। महल, चर्च और अन्य भवन पत्थर का प्रयोग करके बनाए गए। इसका अर्थ यह था कि अकुशल और कुशल श्रमिक दोनों इसके साथ जुड़े हुए थे। निर्माण कार्य के लिए कुशल राज-मिस्त्री लगाए जाते थे। रंगाई, कपड़े की सफाई और कताई से जुड़े कारीगर के काम को महत्वपूर्ण समझा जाता था। खदान कर्मियों को भी

सम्मान दिया जाता था। समाज में जहाज निर्माण करने वालों के स्थान को भी अच्छी तरह से परिभाषित किया गया था। व्यापार के विकास और विलासिता की वस्तुओं के साथ सामान्य वस्तुओं की अधिक से अधिक माँग में वृद्धि का मतलब था कि उनका उत्पादन करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करने के तरीके सुपरिभाषित थे। शहरी केन्द्रों में कारीगरों ने अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को व्यवस्थित करने का बीड़ा उठाया। राजनीतिक अधिकारियों और शक्तिशाली व्यापारियों जिन्होंने बाजारों को नियंत्रित किया और जिनके पास निवेश के लिए पैसा था, के बीच सम्बन्ध शहरी क्षेत्रों में कारीगरों की स्थिति को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण थे। महिलाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर घरेलू आधारित गतिविधियों में रोज़गार दिया जाता था, और शहरी क्षेत्रों में भी उन्हें ज्यादातर अकुशल श्रमिक समझा जाता था।

स्पष्टतः उत्पादन क्रियाकलापों में शिल्प उत्पादन के विकास में कारीगरों ने मुख्य भूमिका निभाई। ये कारीगर अनेक शिल्पों में लगे हुए थे और शिल्प विशेष से जुड़े कई चरणों में काम करते थे। विभिन्न शिल्पों के लिए विविध ज्ञान की जरूरत होती थी और कुशल और अकुशल दोनों किस्म के कारीगर थे। मौजूदा ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर, सामान्य और विशिष्ट स्तरों पर कारीगरों की स्थिति को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

एक महत्वपूर्ण कृति में जाक् ल गॉफ ने प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में मानसिकता और भौतिक संस्कृति के बीच के सम्बन्धों का अध्ययन किया था। उनके अनुसार त्रिपक्षीय पश्चिमी समाज 'प्रार्थना जन, युद्ध जन, और श्रम जनः *लाओरोराटोर्स* (*laororatores*), *बेलाटोर्स* (*bellatores*) और *लेबोरेटोरीस* (*laboratories*)' से मिलकर बना था। ऐसे समय में जब धार्मिक चेतना और संस्थाओं का वर्चस्व था, पहले दो समूह तीसरे समूह की उपेक्षा करते थे। हालाँकि विस्तृत होती शहरी अर्थव्यवस्था में कारीगरों की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। चर्च ने भी इसको स्वीकार किया। बारहवीं शताब्दी के अपराध कबूलकर्त्ताओं की नियमावलियों (confessors' manuals) से संकेत मिलता है कि कारीगर अपने कार्य के बारे में अनेक सवाल पूछ रहे थे और चर्च ने भी मुक्ति प्राप्त करने के लिए हर पेशे की क्षमता को स्वीकार किया था।

रोडनी हिल्टन ने कारीगरों की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले अर्थव्यवस्था के एक और पहलू की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनके अनुसार व्यापारियों द्वारा पूँजी उपलब्ध कराई गई और वे ही बाजारों को भी नियंत्रित करते थे। इसका अर्थ था कि कारीगरों को केवल मजदूरी का भुगतान किया जाता था और वे लाभ साझा नहीं कर सकते थे। भुगतान की यह प्रणाली इटली में स्पष्ट थी। वास्तव में, उत्पादन की प्रकृति ही कारीगरों की स्थिति निर्धारित करती थी। ग्रामीण क्षेत्रों में **घरेलू उत्पादन (Household Production)** हावी था। वहाँ पर मात्र कुछ कारीगर ही थे जो भूधारक थे। इसने वस्तु उत्पादन को आसान बनाया। **दादनी प्रणाली (Putting out System - POS)** के तहत् ग्रामीण परिवारों को कच्चा माल उपलब्ध कराया जाता था। यह शहरी केन्द्र थे, जहाँ बाजारों के लिए बड़े पैमाने पर विनिर्माण किया जा रहा था। जिन कारीगरों के पास स्वयं के औजार थे वे अधिक कमा सकते थे। हालाँकि, व्यापारी ही कच्चा माल उपलब्ध कराते थे और बाजारों को नियंत्रित करते थे और इस प्रक्रिया में सारा मुनाफा हड़पते थे।

आर्थिक विषमताएँ मौजूद थीं। उन कारीगरों की स्थिति जैसे कि कपास पीटने वाले (beaters), धुनिया (carders), साफ करने वाले (combers) और ऐसे अन्य जो उद्यमियों के परिसर में काम करते थे, बदतर थी। वे संगठित नहीं थे और उनके स्वयं के बचाव की कोई कार्य प्रणाली नहीं थी। उनके लिए मजदूरी की दरें भी मानकीकृत नहीं थीं। सूती वस्त्र उद्योग में बुनाई, धुलाई, कतराई और रंगाई जैसे कामों के लिए प्रति उत्पादित इकाई दरों (piece work rates) से भुगतान किया जाता था।

समृद्धि के समय में कारीगरों के लिए मजदूरी संशोधन को सुनिश्चित कराना कठिन था। प्राकृतिक आपदाओं और राजनीतिक उथल-पुथल की स्थिति में स्थिति और बदतर हो सकती थी। ऐसे समय में सामाजिक संकट और अशान्ति पैदा होती थी। उदाहरण के लिए, जब तेरहवीं शताब्दी में फ्लोरेंस ब्लैक डेथ (Black Death) से प्रभावित था जिसके कारण श्रम का अभाव था तब मजदूरी में संशोधन की माँग करने वाले कारीगरों के इस कदम को श्रेणियों द्वारा रोका गया। कारीगरों और व्यापारियों की आय में असमानता के कारण व्यापक अशान्ति उत्पन्न हुई। 1280 तक यह अशांति ब्रूगेस (Bruges), यप्रेस (Ypress), डूएई (Douai) और टुरनाई (Tournai) तक फैल गया। आगामी सत्ता संघर्ष में जब फ्रांस के राजा ने फ्लैंडर्स को हड़पने की कोशिश की, तो श्रमिकों द्वारा इसका बचाव किया गया। इस सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व पियरे डी. कोनीन (Pierre de Conine) नामक एक बुनकर ने किया था। फ्लैंडर मुक्त हो गया। 1378 में फ्लोरेन्स में ऊनी उद्योग के श्रमिकों ने विद्रोह किया। सिओम्पी (Ciompi) विद्रोह में अनेक अन्य कारीगर जैसे कि बढ़ई (armoires), पंसारी (grocers), दवा विक्रेता (druggists), लोहार (blacksmiths), पोस्तीनदोज (furriers) भी शामिल हो गए। हालाँकि इसे क्रूरता से दबा दिया गया था।

खदान-कर्मियों और धातु-कर्मियों की स्थिति बेहतर थी। वे संगठित थे और उन्हें अधिकारियों की रियायतें प्राप्त थीं। उदाहरण के लिए, निम्न तटीय देशों (Low Countries) में चूंकि उन्होंने तेरहवीं शताब्दी में शासक राजकुमारों की धन दौलत में वृद्धि कराने में मदद की थी, इसलिए उन्हें सामान्य करों के भुगतान से छूट दी गई थी। काम करने की परिस्थितियाँ कठोर थीं। मध्याह्न का विराम भी एक छोटी सी अवधि के लिए होता था। एक सप्ताह में काम के घंटे चवालीस घंटों से लेकर साठ घंटों तक होते थे।

बोध प्रश्न-2

1) क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि मध्ययुगीन यूरोप में श्रेणियों ने शिल्प उत्पादन की वृद्धि के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया? अपने विचारों का समर्थन करने के लिए कुछ ऐतिहासिक प्रमाण प्रदान कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मध्ययुगीन यूरोप में कारीगरों की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

8.6 सारांश

इकाई के पूर्वगामी वर्णन में मध्ययुगीन यूरोप में शिल्प उत्पादन की प्रकृति और पद्धतियों का

विवरण दिया गया है। कार्लो एम. सिपोला द्वारा रेखांकित कारकों की बहुलता उन प्राकृतिक और मानवीय परिवर्ती कारकों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो यूरोप में शिल्प उत्पादन के लिए जिम्मेदार थे। विभिन्न शिल्प जिसमें विभिन्न प्रक्रियाओं, विभिन्न तकनीकियों और कच्चे माल सम्मिलित थे, अस्तित्व में आए। इस इकाई में कुछ प्रमुख शिल्पों की चर्चा के माध्यम से इन पर प्रकाश डाला गया है। सबसे व्यापक शिल्प वस्त्रों का था जिसकी विभिन्न देशों में अपनी अलग-अलग विशेषताएँ थी। यह दर्शाया गया है कि हालाँकि यूरोप में खनिजों का समृद्ध भंडार था, लेकिन इसका उत्पादन मौजूदा मानसिकताओं और तकनीकों द्वारा अवरुद्ध हुआ। इसमें जहाज निर्माण, काँच बनाने और मदिरा उत्पादन पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है जो कुछ क्षेत्रों में विशिष्ट थे। कारीगरों के कौशल, रिहायशी स्थल और कार्य परिस्थितियां दर्शाती हैं कि किस प्रकार वे बड़े पदानुक्रम आधारित समाज में व्यवस्थित थे।

अध्ययन की अवधि के दौरान शिल्प उत्पादन की प्रकृति को बहुत सी संस्थागत व्यवस्थाओं द्वारा आकार दिया गया था। बाजार के लिए स्वतंत्र रूप से काम करना संभव नहीं था। श्रेणियों के अध्ययन के माध्यम से इकाई में उस कार्यप्रणाली के विषय में चर्चा की गई है, जो उत्पादन के नियमन और प्रशिक्षण प्रदान करने की विधियों का आधार थे। समाज के स्तर पर कारीगरों की विविध संरचना उनकी आर्थिक स्थिति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी। मध्ययुगीन यूरोप के दौरान भौतिक संस्कृति और मानसिकता के बीच सम्बन्ध का अर्थ था कि बहुत कम लोग अपनी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने की उम्मीद रख सकते थे। जिनका समाज और राजनीति के स्तर पर सत्ता पर नियंत्रण था उन्होंने कारीगरों की स्थिति में सुधार की अनुमति नहीं दी। कई अवसरों पर क्रमवार विद्रोह हुए लेकिन वे क्रूरता से कुचल दिए गए। इस प्रकार समाज भेदभावपूर्ण था और कारीगरों को दमनकारी परिस्थितियों में काम करना पड़ता था।

8.7 शब्दावली

क्षैतिज प्रवेश मार्ग (Adit)	:	प्रवेश या जल निकासी के उद्देश्य से खदान में जाने वाले क्षैतिज मार्ग
चरखी (Bobbin)	:	फिरकी, धागे को धारण करने वाली एक शंकु आकृति। इसको बुनाई में इस्तेमाल किया जाता था।
श्रेणी (Guild)	:	शिल्पकारों के संगठन जो उत्पादन को विनियमित करने के लिए बनाए गए थे।
घरेलू उत्पादन (Household Production)	:	वह उत्पादन जो कारीगरों के हाथों में था, जो अपने कच्चे माल, औजार और श्रम से वस्तुओं का विनिर्माण करते थे। इस प्रक्रिया में परिवार के अन्य सदस्य भी योगदान करते थे।
निम्न तटीय देश (Low Countries)	:	नीदरलैंड (हालैंड), बैल्जियम और लक्ज़मबर्ग
नेप (Nap)	:	यह कतरनी से पहले बुने हुए कपड़े के खुरदरेपन को संदर्भित करता है।
दादनी प्रणाली (Putting out System - POS)	:	इसने विनिर्माण क्षेत्र के विकास में एक अलग चरण को चिन्हित किया। व्यापारियों द्वारा कारीगरों को पूँजी या कच्चा माल और उपकरण प्रदान किए जाते

थे। कारीगर अपने स्थान पर या निश्चित स्थान पर व्यापारी के निर्देशों के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए काम करते थे।

रील (Spoolers) : लकड़ी या किसी अन्य सामग्री का एक छोटा बेलनाकार टुकड़ा जिस पर कताई के समय सूत लपेटा जाता है।

नांद (Trough) : पानी रखने के लिए एक लम्बा, खुला पात्र

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 8.2 देखिए

2) भाग 8.2 और भाग 8.3 (सभी उप-भागों सहित) देखिए

3) उप-भाग 8.3.3 देखिए

4) उप-भाग 8.3.1 देखिए। इस उप-भाग में दिए गए सूचना बॉक्स को देखें

5) उप-भाग 8.3.2 देखिए

बोध प्रश्न-2

1) भाग 8.4 देखिए

2) भाग 8.5 देखिए

8.9 संदर्भ ग्रंथ

सिपोला, कार्लो एम., (1976) *बिफोर द इन्डस्ट्रीयल रेवोल्यूशनः यूरोपियन सोसाइटी एंड इकोनॉमी 1000-1700* (ब्रिटेनः मेटुएन एंड कम्पनी लिमिटेड).

क्रूज़े, फ्रैन्कोइस, (2001) *ए हिस्ट्री ऑफ द यूरोपियन इकोनॉमी 1000-2000* (शारलोट्सविले एवं लंदनः यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जिनिया प्रेस).

जिस्ज़तोन, अलेक्जेन्डर, (1987) 'ट्रेड एंड इन्डस्ट्री इन ईस्टर्न यूरोप बिफोर 1200' *द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप,* भाग II: *ट्रेड एंड इन्डस्ट्री इन द मिडिल एजेस,* (संपा.), पोस्टन, एम. एम. एवं मिलर, द्वितीय संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

गॉफ, जाक् ल, (1980) *टाइम, वर्क एंड कल्चर इन द मिडिल एजेज़,* अनुवादक आर्थर गोल्ड हेमर (शिकागो एवं लंदनः द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस).

गॉफ, जाक् ल, (1989) *मिडिवल सिविलाइजेशन 400-1500,* अनुवादक जुलिया बेरो (बासिल ब्लैकवेल).

लिप्सन, ई., (1959) *द ग्रोथ ऑफ इंगलिश सोसाइटीः ए शार्ट इकोनॉमिक हिस्ट्री,* चतुर्थ संस्करण, पुनःमुद्रित, 1964 (लंदनः एड्म एवं चार्ल्स ब्लैक).

नेफ, जॉन यू., (1987) 'माइनिंग एंड मेटालर्जी इन मिडिवल सिविलाइजेशन' *द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप,* भाग II: *ट्रेड एंड इन्डस्ट्री इन द मिडिल एजेज़,* (संपा.), पोस्टन, एम. एम. एवं मिलर, द्वितीय संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

स्कोफील्ड, जॉन, (1987) 'लंदन 1100-1600: द आर्कियोलॉजी ऑफ ए कैपिटल सिटी', *द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप,* भाग II: *ट्रेड एंड इन्डस्ट्री इन द मिडिल एजेज़,* (संपा.), पोस्टन, एम. एम. एवं मिलर, द्वितीय संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

थ्रूप' सिलविया, एल., (1965) 'दि गिल्ड्स' *द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप,* भाग II: *ट्रेड एंड इन्डस्ट्री इन द मिडिल एजेज़,* (संपा.), पोस्टन, एम. एम. एवं मिलर, द्वितीय संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

पीडीएफः

प्रोफेसर कार, क्वार्टर. अस, 4 मई 2018 को वेबसाइट से लिया गया।

डेविड केटराइट (24 अगस्त 2017), क्वारा, 3 मई 2018 को लिया गया।

ज़ेप, ग्यूसेप (2007) साइन्स एंड टैक्नोलॉजी ऑफ वाइन मेकिंग, https://www.diary science.info/index/124-the science and technology of wine making.html. 4 मई 2018 को वेबसाइट से लिया गया।

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, अक्तूबर 2001, https://www.metmuseum.org/article/ medievalglass.

8.10 शैक्षणिक वीडियो

द लास्ट वेलवेट मर्चेन्टस ऑफ वेनिस, इलियट स्टाइन, बीबीसी ट्रेवल
http://www.bbc.com/travel/gallery/20181113-the-last-velvet-merchant-of-venice

इकाई 9 एशिया और यूरोप में व्यापार और वाणिज्य का विकास*

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 इस्लाम का उदय और एशिया और यूरोप में समुद्री व्यापार

9.3 मध्ययुगीन यूरोप में व्यापार

9.4 व्यापारिक समुदाय

- 9.4.1 आरमीनियाई
- 9.4.2 यहूदी
- 9.4.3 करीमी व्यापारी
- 9.4.4 एशिया और यूरोप के कुछ अन्य व्यापारी समूह

9.5 व्यापार मार्ग

9.6 वाणिज्यिक गतिविधियों के केन्द्रः बाजार और मेले

- 9.6.1 बाजार
- 9.6.2 मेले

9.7 वाणिज्यिक गतिविधियां

- 9.7.1 ऋण और साहूकारी
- 9.7.2 विनिमय के साधन, धन का लेन-देन तथा बैंकिंग और लेखांकन

9.8 सारांश

9.9 शब्दावली

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.11 संदर्भ ग्रंथ

9.12 शैक्षणिक वीडियो

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में मध्यकालीन विश्व के समुद्री व्यापार का एक संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया गया है। इस चर्चा में लगभग सातवी सदी से पंद्रहवीं सदी तक की अवधि शामिल है, जो अरब में इस्लाम के आगमन और मध्य युग के अंत की घोषणा करती है। पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी से शुरू हुई यूरोपीय खोज की यात्राओं और आर्थिक परिवर्तनों के बारे में **बीएचआईसी-106** की **इकाई 4** और **इकाई 5** में चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- सातवीं सदी से पंद्रहवीं सदी के बीच की अर्थव्यवस्था की प्रकृति को समझ पाएँगे,

---

* प्रो. सुशील चौधरी, फेलो, रॉयल हिस्टॉरिकल सोसाइटी, इंग्लैंड एवं डॉ. अमृत कौर बसरा, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। यह इकाई इग्नू के पाठ्यक्रम **एम एच आई-01** के **खंड-7**, **इकाई 24**: ***समुद्री व्यापार***; **इकाई 25**: ***व्यापारिक समुदाय***; और **इकाई 26**: ***वाणिज्यिक गतिविधियाँ*** से ली गई है।

- इस अवधि में अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले घटनाक्रम का विश्लेषण कर सकेंगे,
- प्रमुख व्यापारिक समुदायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे,
- महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों, और मुख्य बाजारों और मेलों को चिन्हित कर सकेंगे, और
- एशिया और यूरोप में प्रचलित वाणिज्यिक गतिविधियों को समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

सबसे पहले हम इस्लाम के उदय और विकास एवं इसके प्रभाव की बात करेंगे और यह देखेंगे कि इसका प्रभाव न केवल हिन्द महासागर बल्कि भूमध्यसागर से होने वाले समुद्री व्यापार पर भी पड़ा। इस दौरान समुद्री व्यापार पर अरबों का बोलबाला रहा जो तीन शताब्दियों तक चला। अगले भाग में हम मध्ययुगीन यूरोप के व्यापार और खासतौर पर इस व्यापार में भूमध्यसागर की भूमिका पर प्रकाश डालेंगे। यहां हम मध्ययुगीन यूरोप के आयात और निर्यात व्यापार में शामिल वस्तुओं की भी चर्चा करेंगे (भारतीय समुद्री व्यापार के बारे में **इकाई 13**, **बीएचआईसी-107** और इस व्यापार के बाद के घटनाक्रम के बारे में **इकाई 8**, **बीएचआइसी-112** में विस्तार से पढ़ेंगे)।

हिन्द महासागर में पुर्तगालियों के आगमन की चर्चा अलग भाग में की गई है। इसे देखने से यह भी पता चलता है कि पुर्तगाली हिन्द महासागर के व्यापार में मामूली परिवर्तन ही कर पाए और वे इस क्षेत्र के व्यापार के ढांचे, दिशा और संगठन में कोई आमूल परिवर्तन नहीं कर पाए। ऐसा लगता है कि हिन्द महासागर में पुर्तगालियों की उपस्थिति प्रभावशाली और महत्वपूर्ण तो थी परंतु इस क्षेत्र में इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा।

इस इकाई में आपको मध्यकालीन व्यावसायिक लेनदेन से परिचित कराया जाएगा। यहां हम आपको एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका में होने वाले व्यापारों के स्वरूप से परिचित कराएंगे। इसके अलावा स्थल और समुद्री मार्गों, बाजारों और मेलों के जरिए होने वाले व्यापार तंत्र के उदय की जानकारी भी इस इकाई में दी जाएगी। साथ ही साथ वाणिज्यिक लेनदेन को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की व्यापारिक पद्धतियों के उपयोग और वाणिज्य के विस्तार में व्यापारियों की भूमिका पर प्रकाश डाला जाएगा।

पांचवीं शताब्दी के आरंभ तक रोमन साम्राज्य एकीकृत राजनीतिक इकाई नहीं रह गया था। इसके पूर्वी प्रांतों में बाइज़ेंटाइन साम्राज्य स्थापित हो चुका था। रोमन साम्राज्य के पश्चिमी प्रांतों पर जर्मनिक कबीलों का आधिपत्य था। शार्लमेन (771-814) का शासन फ्रांस, मध्य यूरोप, उत्तरी इटली और स्पेन के एक छोटे से हिस्से में फैल चुका था।

इस क्षेत्र में राजवंशीय शासन की स्थापना के थोड़े समय बाद सातवीं शताब्दी में अरब प्रायद्वीप में इस्लाम का उदय हुआ। बाइज़ेंटाइन, अफ्रीका और एशिया के विभिन्न प्रांतों में इस्लाम ने धीरे-धीरे अपने पैर जमाना शुरू किया। इन क्षेत्रों की राजनीति पर भी इसका प्रभाव पड़ा। एशिया में दसवीं ओर तेरहवीं शताब्दी के बीच कई प्रकार के परिवर्तन हुए। मंगोलों की विजय यात्रा के साथ-साथ चीन में सुंग संस्कृति, कोरिया में कोरयो और जापान में हेयान संस्कृति का उदय हुआ। इस प्रकार इन अलग-अलग राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप क्षेत्रीय स्थिरता स्थापित हुई। सामंती राजनीतिक व्यवस्था के कारण सैन्य संघर्ष भी हुए। यूरोप में ग्यारहवीं शताब्दी में इस्लाम के प्रसार को रोकने के लिए **धर्मयुद्धों** (**crusades**) की शुरुआत की गई। इससे पश्चिमी जहाजों के लिए भूमध्यसागर का रास्ता खुल गया। दुनिया के हर हिस्से में व्यापार किया जाता था, परंतु व्यापार की पद्धति और व्यापार की जाने वाली वस्तुओं में काफी विविधता थी।

1000-1300 के बीच यूरोप में वाणिज्य का विस्तार हुआ। कार्लो एम. सिपोला के अनुसार इस युग में व्यापार के व्यापक विस्तार के कारण शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, नई प्रौद्योगिकी का उपयोग और अर्थव्यवस्था का मौद्रीकरण हुआ। पूरब और पश्चिम के बीच बढ़ते व्यापार में इतालवी व्यापारियों ने बिचौलिए की भूमिका निभाई। दसवीं शताब्दी के दौरान वेनिस के उदय से यह पता चलता है कि इसने पूर्वी बाइज़ेंटाइन, दक्षिणी मुस्लिम और पश्चिमी कैथोलिक क्षेत्रों के बीच सीमांत बाजार के रूप में काम किया। आने वाले वर्षों में व्यापार-तंत्र में बढ़ोत्तरी के कारण जेनेवा, पीसा, पियासेन्जा, सिएना, फ्लोरेंस और मिलान का विकास हुआ। 14वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान समुद्रपारीय व्यापार में यूरोप की भागीदारी बढ़ी। हिन्दमहासागर और भूमध्यसागर में कई वाणिज्यिक केन्द्र और बंदरगाह विकसित हुए। पुर्तगाल प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र के रूप में उदित हुआ और उसने व्यापारिक गतिविधियों पर अपना प्रभुत्व जमाना शुरू कर दिया। इंग्लैंड, हालैंड, फ्रांस में बड़ी व्यापारिक कंपनियों की स्थापना हुई।

यहां इस इकाई में हम मध्यकालीन विश्व के कुछ प्रमुख व्यापारिक समुदायों की भी चर्चा करने जा रहे हैं। यूरोप और एशिया के ये व्यापारिक समुदाय मध्यकाल के दौरान दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में जाकर व्यापार किया करते थे। इस काल में जहाजरानी के विकास और विभिन्न महाद्वीपों में व्यापार के विस्तार से व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आई। गौरतलब है कि निजी व्यापारियों के साथ-साथ बढ़ते व्यापार और पूंजी जुटाने के उद्देश्य से बड़ी व्यापारिक कम्पनियां भी स्थापित हुईं। मध्यकाल में होने वाली इन गतिविधियों के बावजूद अलग-अलग देशों में छोटे और बड़े विभिन्न व्यापारिक समुदायों का बोल-बाला रहा। इन सभी पर विस्तार से चर्चा करना यहां संभव नहीं है, इसलिए हमने केवल कुछ उन व्यापारी समुदायों की गहराई से छानबीन की है जो मध्यकालीन व्यापार में अधिक सक्रिय रहे थे। यूरेशिया के प्रमुख व्यापारी समुदायों में हम आरमीनियाई, यहूदी, करीमी और अरब व्यापारियों की चर्चा करेंगे।

9.2 इस्लाम का उदय और एशिया और यूरोप में समुद्री व्यापार

मध्ययुगीन विश्व में इस्लाम का उदय एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसका समुद्री व्यापार पर व्यापक प्रभाव पड़ा। कई शताब्दियों तक व्यापक वाणिज्यिक तंत्र के विकास में अरब और मुसलमान व्यापारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वस्तुतः यूरोपियों के आगमन के काफी पहले, पूर्वी अफ्रीका और चीनी समुद्र के बीच हिन्द महासागर के तटीय क्षेत्रों में खूब विस्तृत व्यापार हुआ करता था जिस पर मुख्य रूप से मुसलमान नाविकों और व्यापारियों का बोलबाला था। सातवीं शताब्दी के मध्य से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक हिन्द महासागर के समुद्री व्यापार की सामान्य दिशा और संरचना बिलकुल स्पष्ट थी। दक्षिण चीन से पूर्वी भूमध्यसागर तक अन्तर-महाद्वीपीय यातायात का एक लंबा सिलसिला कायम था। इसके अलावा हिन्द महासागर में छोटी समुद्री यात्राएं और दूरियां तय करके भी व्यापार किया जाता था।

ऐसा लगता है कि दसवीं शताब्दी के आरंभ और उसके बाद भी अरब जहाज और व्यापारी चीन तक आते-जाते थे, और बीच में पड़ने वाले बन्दरगाहों पर रूकते थे। वस्तुतः हिन्द महासागर को पार कर दक्षिण एशिया और चीन में मुसलमान व्यापारियों और अरब व्यापारियों की सफलताओं ने हिन्द महासागर और भूमध्यसागर के लंबी-दूरी के प्राचीन काल से चले आ रहे दो प्रमुख मार्गों को जोड़ना संभव बनाया[1]। एशिया और पश्चिम के बीच होने वाले

[1] एशिया की व्यापारिक दुनिया और अरबों के बारे में इस पाठ्यक्रम में बाद में **इकाई 16** में चर्चा की गई है।

व्यापार के दो रास्ते थे एक लाल सागर से और दूसरा विभिन्न समुद्रों, नदियों से होता हुआ समुद्री मार्ग और फारस की खाड़ी, इराक और सीरियाई मरुस्थल से होकर गुजरने वाला स्थल मार्ग। इन दोनों ही रास्तों पर पहले उमय्यद खलीफाओं और बाद में अब्बासिदों का पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण था। यहां तक कि भूमध्यसागर ने भी, जो कि ईसाई प्रभुत्व वाले उत्तर और मुसलमान प्रभुत्व वाले दक्षिण के रूप में विभाजित था, अन्ततः व्यापारियों की गतिविधियों के जरिए ही आर्थिक एकता प्राप्त की।

मानचित्र 9.1: इटली से भारत का व्यापारिक मार्ग
साभार: मोर्न
स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/File:Italy_to_India_Route.svg

मध्यकाल में एशिया में मुख्य रूप से पूर्वी सभ्यता के चार उत्पादों का व्यापार होता था। रेशम, पोर्सेलिन, चंदन की लकड़ी और काली मिर्च, जिसके बदले में धूप, नस्ली घोड़े, हाथी दांत, सूती कपड़े और धातु से बनी वस्तुओं का विनिमय किया जाता था। जहां तक चीन से व्यापार का संबंध है फारस की खाड़ी के जहाज सातवीं शताब्दी के अंत और आठवीं शताब्दी के आंरभ में कैन्टौन पहुंच रहे थे। उनकी मुख्य रुचि चीन के रेशमी वस्त्रों में थी। चीनी लोग अरबों की दुनिया को अमूल्य और बहुमूल्य वस्तुओं का विशाल भंडार मानते थे। जावा और सुमात्रा के बारे में भी यही धारणा थी। इन दोनों क्षेत्रों से होकर ही अन्तः महाद्वीपीय विदेशी व्यापार हुआ करता था। दक्षिण अरब, फारस की खाड़ी और दक्षिण पूर्वी एशिया बहुमूल्य पत्थरों, मोतियों, धूप, इत्र, चंदन की लकड़ी और मसालों का प्रमुख स्रोत थे और एक हजार वर्षों से भी ज्यादा समय लंबे समय तक यह पूर्व-आधुनिक काल के विलासिता की वस्तुओं के लम्बी दूरी के व्यापार में प्रमुख स्तम्भ बने रहे।

चीन पर मंगोल विजय (1280) के बाद साम्राज्य के समुद्रपार सम्पर्क कमजोर होने के बजाए मजबूत हुए। मार्को पोलो (1298) और इब्न बतूता (मृत्यु 1377) के वृतांतों से पता चलता है कि हांगचाउ (Hangchow) और ज़ैतौन (Zaiton) बंदरगाह नगर इस समय खूब फले-फूले। ज़ैतौन बंदरगाह पर बड़े-बड़े जहाज लंगर डालकर खड़े रहते थे। जहां काली मिर्च से भरे एक जहाज को एलेक्जेंड्रिया और ईसाई प्रदेशों में भेजा जाता था, वहीं ऐसे 100 जहाज ज़ैतौन आते थे। जब इब्न बतूता 1343-1344 में इस शहर में आया तो उसे लगा कि यह विश्व का सबसे बड़ा बंदरगाह है। यहां एलेक्जेंड्रिया, क्यूलौन, मालाबार तट और कालीकट से भी ज्यादा वाणिज्यिक यातायात होता था।

लेकिन दसवीं शताब्दी के अंत और पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य के बीच हिन्द महासागर के व्यापार की दिशा में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अब्बासी खिलाफत के पतन और मिस्र में फातमिदों के उदय से लम्बी दूरी का व्यापार मार्ग बगदाद और डैमस्कस से खिसककर एडेन और फुस्तात की ओर मुड़ गया। भारत में 1303-1304 में दिल्ली के तुर्की सुल्तानों ने गुजरात पर विजय प्राप्त कर ली और इसके समुद्रतटीय शहर इस्लामी सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव के दायरे में आ गए। लगभग इसी समय इंडोनेशियाई द्वीप समूहों के व्यापारिक बंदरगाहों और तटीय राज्यों ने भी इस्लाम धर्म को स्वीकार करना शुरू कर दिया था और धर्मांतरण की यह प्रक्रिया लगभग अगली तीन शताब्दियों तक चली।

हिन्द महासागर में हो रही इन नई गतिविधियों के समानान्तर भूमध्यसागर के ईसाई क्षेत्र में भी स्थितियां करवटें बदल रही थीं। स्पेन से मूरिश (अरब) शासकों का निष्कासन और वेनिस और जेनेवा के व्यापारिक वर्चस्व के उदय ने विश्व अर्थव्यवस्था की संरचना में नए समीकरण की प्रतीकात्मक शुरुआत कर दी। इसी समय फातमिदों द्वारा प्राचीन काहिरा में सत्ता के हस्तांतरण से अन्तः महाद्वीपीय व्यापार के लिए एलेक्जेंड्रिया एक महत्वपूर्ण पड़ाव बन गया और इस प्रकार उसका आर्थिक महत्व और भी ज्यादा हो गया। मिस्र के अय्यूबिद शासकों (1170-1260) और उसके बाद मामलूकों (1260-1517) के शासनकाल में लाल सागर के बन्दरगाहों के विकास से काहिरा का आर्थिक महत्व और अधिक बढ़ता चला गया।

परन्तु चीन में मिंग राजवंश (1368-1644) की आर्थिक नीतियों के कारण समुद्री व्यापार पर परस्पर विरोधी प्रभाव पड़ा। तीसरे मिंग सम्राट युंग-लो (Yung-lo; 1402-24) ने हिन्द महासागर के व्यापारिक राष्ट्रों के साथ चीन के आर्थिक संबंध की दिशा में एक नया प्रयोग करने की कोशिश की। इसके तहत 1404 और 1433 के बीच उसने कई समुद्री यात्राओं का आयोजन किया, परंतु 1433 में अन्ततः उसने यह योजना त्याग दी और बाद के मिंग सम्राटों ने विदेशी आगन्तुकों के लिए चीन के समुद्री तटों को बन्द कर दिया। उन्होंने चीनी व्यापारियों के विदेशी व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसके बावजूद मिंग शासनकाल में विदेशी व्यापार कई रूपों में जारी रहा, खासतौर पर फिलीपीन्स, तॉन्गकिंग और मलक्का तक व्यापारी छिप-छिपकर जाया करते थे और तस्करी किया करते थे।

9.3 मध्ययुगीन यूरोप में व्यापार

सातवीं शताब्दी में भूमध्यसागर के क्षेत्र में इस्लाम के प्रवेश से पश्चिम के ईसाईयों के लिए यह समुद्री मार्ग बन्द हो गया। परंतु यह रूकावट सभी ईसाईयों के लिए नहीं थी। नेपल्स और बारी जैसे दक्षिणी इतालवी शहर के साथ-साथ पूर्व में वेनिस भी कॉन्सटैंटिनोपल के सम्राट को मान्यता देते रहे। एड्रियाटिक के शीर्ष पर स्थित होने के कारण **सारासीनियाई** विस्तार से उनके लिए कोई गंभीर खतरा नहीं था। वेनिस पहले से ही एक मजबूत और बड़ी समुद्री शक्ति था, 1100 तक आते-आते इसने समुद्र के पूर्वी तट पर पूर्णतः अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया जिसे वह अपना क्षेत्र समझता था और शताब्दियों तक उसका इस क्षेत्र पर नियंत्रण रहा। वस्तुतः यूरोप में दो बड़े वाणिज्यिक आंदोलन हुए। ये आंदोलन मध्ययुग के आरंभ में इसकी सीमाओं पर आरंभ हुए। एक आंदोलन पश्चिमी भूमध्यसागर और एड्रियाटिक, और दूसरा बाल्टिक और उत्तरी सागर में आरंभ हुआ। बाल्टिक और उत्तरी सागर पर स्कैनडिनेवियों का बोलबाला था जो केवल पश्चिम से ही व्यापार नहीं किया करते थे। एक ओर जहां डेन्स और नॉर्वेजियन्स ने कैरोलिन्जियन साम्राज्य पर कब्जा जमा लिया, वहीं इंगलैंड, स्कॉटलैंड और आयरलैंड तथा उनके पड़ोसी स्वीडन ने रूस की ओर रुख किया। धर्मयुद्ध के बाद भूमध्यसागर पर मुसलमानों का वर्चस्व समाप्त होना एक दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी। अब पूरा भूमध्यसागर पश्चिमी समुद्री व्यापार के लिए फिर से खुल चुका

था। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप काफी समय तक इतालवी शहर और कुछ हद तक प्रोवेन्स और कैटेलोनिया भी भूमध्यसागर पर छाए रहे।

उत्तरी यूरोप के व्यापार का पूर्वी और भूमध्यसागरीय वस्तुओं से बहुत लेना-देना नहीं था। छठी और दसवीं शताब्दियों के बीच नियमित रूप से व्यापारी और योद्धा यूरोप के सुदूर उत्तर से बाइजेंटाइन तक सामान लाते थे और फिर बाइजेंटाइन से सामानों को लेकर उत्तरी यूरोप की ओर जाते थे। बाद की शताब्दियों में इतालवी व्यापारी बराबर इंग्लैंड और फ्लैन्डर्स के बंदरगाहों की ओर जाने लगे और अपने साथ लेवैन्टाइन और पूर्वी उत्पादों को भी लाने लगे। इसके अलावा इतालवी व्यापारी और उत्तर से आए व्यापारी, जर्मेनिक, फ्लेमिंग्स, अंग्रेज और फ्रांसीसी नियमित रूप से आवागमन करने लगे और मध्य तथा उत्तरी यूरोप के बाज़ारों में एक दूसरे से मिलने लगे। मध्ययुग में कई केन्द्रों ने प्रमुखता प्राप्त की। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में शैम्पेन, चौदहवीं और आरंभिक पंद्रहवीं शताब्दी में ब्रुगज़ (Bruges) और पंद्रहवीं शताब्दी में जेनेवा और एन्तवर्प नामक शहरों का उदय हुआ। पूरे यूरोप से आए व्यापारी इतालवी और इतालवियों द्वारा लाए गए सामानों का दूसरी वस्तुओं से आदान-प्रदान करते थे।

पूरे उत्तरी यूरोप और उत्तरी यूरोप तथा दूसरे देशों के बीच होने वाले व्यापार में उत्तरी क्षेत्र के उत्पादों का बोलबाला था। ये ऐशो आराम और अलंकरण की वस्तुएं नहीं थीं बल्कि जीवनयापन के लिए आवश्यक वस्तुओं का ही ज्यादा व्यापार होता था। दक्षिण में भी खाद्य पदार्थों या कच्चे माल का व्यापार भूमध्यसागरीय क्षेत्र में शुरू हो गया। दक्षिणी व्यापार इस दृष्टि से अलग था कि इसमें केवल भारी भरकम वस्तुएं हीं नहीं बल्कि ऐशो आराम की वस्तुएं भी शामिल थीं। इसके विपरीत उत्तरी यूरोप का व्यापार प्रमुखतः जीवनयापन की वस्तुओं तक सीमित था।

यूरोप में लम्बी दूरी की यात्राओं के जरिए मध्यकाल में वाणिज्यिक विकास हुआ। मसाले इस व्यापार का प्रमुख आकर्षण थे। इस व्यापार ने न केवल वेनिस को धनी बनाया बल्कि पश्चिमी भूमध्यसागर के सभी बड़े बंदरगाहों को समृद्धि प्रदान की। सीरिया, जहां अरब, भारत, और दक्षिण पूर्व एशिया से कारवां के जरिए सामान पहुंचाया जाता था, यूरोप के जहाजों का प्रमुख गंतव्य स्थान था। परंतु तेरहवीं शताब्दी के आरंभ से यूरोप में प्रमुख रूप से चावल, संतरा, खूबानी, अंजीर, किशमिश, इत्र, औषधि और रंग के सामानों का आयात होता था। इसमें सूती कपड़े भी शामिल थे। बारहवीं शताब्दी के अंत से कच्चे सिल्क का भी आयात होने लगा। इन आयातों के बदले में इतालवी लेवेन्ट के बंदरगाह पर लकड़ी और हथियार और वेनिस द्वारा कभी-कभी दासों की भी आपूर्ति करने लगे। परंतु बहुत जल्द ही ऊनी सामान का निर्यात होने लगा। प्रारंभ में इटली में बने मोटे ऊनी कपड़े **(fustians)** और बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से फ्लैन्डर्स और उत्तरी फ्रांस से वस्त्रों का निर्यात होने लगा। परंतु अंग्रेजी जहाज उनके ऊन उत्पादों को निर्यात करने में मदद नहीं किया करते थे। ये सामान मुख्य रूप से महाद्वीपीय जहाजों द्वारा ले जाया जाता था और तेरहवीं शताब्दी तक आते-आते ट्यूटोनिक हानों (Hans) का इन पर लगभग एकाधिकार हो गया। इस प्रकार यदि मध्ययुग में होने वाले समुद्री या विदेशी व्यापार से जुड़ी वस्तुओं को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि औद्योगिक उत्पादों की अपेक्षा कृषीय और खाद्य पदार्थों का ही ज्यादातर व्यापार होता था, मसलन, मसाले, शराब, अनाज, नमक, मछली और ऊन। सबसे पहले **निम्न तटीय क्षेत्रों** (Lower Countries) और बाद में फ्लोरेंस से कपड़े का निर्यात शुरू हुआ।

9.4 व्यापारिक समुदाय

व्यापारिक और वाणिज्यिक लेन-देन की वृद्धि ने व्यवसायिक गतिविधियों और उससे जुड़े

व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया। व्यापारी और व्यापारिक समुदाय इन गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु थे।सामान की लेन-देन के साथ-साथ इन व्यक्तियों ने साहूकारों, फाइनेंसरों, सर्राफ, ब्रोकरों, बैंकरों, वाणिज्यिक एजेंटों, इत्यादि के रूप में भी काम किया। बड़े साहूकार ज्यादातर समय इनमें से काफी गतिविधियों को एक साथ संपादित करते थे। जबकि इनमें से कुछ खुद को केवल अपने किसी विशेष क्षेत्र तक ही सीमित रखते थे। ऐसी विशेषज्ञता मध्यकाल के अन्त तक धीरे-धीरे उभरकर सामने आई। स्थानीय स्तर पर लेन-देन सीधे तौर पर उत्पादकों के हाथों में था। इसलिए भिक्षु (monks), मछुआरे, किसान और भूमिपति 'अंशकालीन व्यापारी' ('part-time merchants') थे। हालाँकि जैसे-जैसे व्यापार में वृद्धि हुई, यह व्यापार उद्यमी व्यापारियों के नियंत्रण में आ गया।

9.4.1 आरमीनियाई

इंगलिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के निदेशक मंडल ने 1699 में यह टिप्पणी की थी कि 'आरमीनियाई संभवतः दुनिया के सबसे पुराने व्यापारी हैं'। उनकी इस बात में अतिशयोक्ति नहीं लगती। वस्तुतः प्राचीन काल से लेकर पूर्व-आधुनिक युग के अंत तक आरमीनियाई व्यापारी समुदाय यूरेशियाई क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय और अन्तर-महाद्वीपीय व्यापार में संलग्न थे। अपनी मातृभूमि (आरमीनिया) से बाहर निकलकर वे एशिया और यूरोप के विभिन्न देशों में फैले और न केवल प्रमुख शहरों, बंदरगाहों और व्यापारिक हाटों पर उन्होंने अपने पैर जमाये बल्कि वह, अपने देश से दूर, दूरदराज के अंदरूनी इलाकों में स्थापित उत्पादन केन्द्रों में जाकर रहने लगे। इस प्रकार उन्होंने लम्बी दूरी के व्यापार की बेहतरीन और ठोस अधिसंरचना निर्मित की और एक मजबूत वाणिज्यिक नेटवर्क स्थापित किया और अपना मुख्यालय न्यू जुल्फा में बनाया। आरमीनियाइयों की यह 'व्यापारिक दुनिया' ('trading diaspora') सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान अपने आप में अनूठी थी।

आरमीनियाई व्यापार नेटवर्क

सत्रहवीं शताब्दी में आरमीनियाई व्यापार नेटवर्क के उदय और उनके प्रसार को कुछ हद तक पूर्व शताब्दी की ऐतिहासिक घटनाओं से भी मदद मिली जब प्राचीन आरमीनिया ईरानी-ऑटोमन प्रतिद्वन्दिता का शिकार बना। सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में ईरानी सम्राट शाह अब्बास I ने पेशेवर आरमीनियाई व्यापारी और शिल्पियों को जबरन शहर से बाहर निकालकर इस्फहान के इलाके में न्यू जुल्फा नामक नए शहर में ले जाकर बसाया। सम्राट का मुख्य उद्देश्य अपनी नई स्थापित राजधानी शहर इस्फहान को आरमीनियाई उद्यमियों की निपुणता की मदद से एक बड़े व्यापारिक केन्द्र में तब्दील करना था। व्यापारियों ने उन्हें निराश भी नहीं किया। उनके पास पूंजी और एशिया तथा यूरोप में व्यापारिक संबंध थे, इसलिए आरमीनियाइयों ने 'ईरान के कच्चे रेशम के विदेशी व्यापार को विकसित किया, उन्हें नए बाजारों तक पहुंचाया, नए उत्पादों का विकास किया और नए-नए व्यापारिक मार्गों की खोज की'। 1722 में अफगानों द्वारा ईरान पर आक्रमण करने के समय तक विभिन्न शाहों के शासन काल में उन्होंने ईरान की आर्थिक समृद्धि में चार चांद लगाए। इस आक्रमण के बाद न्यू जुल्फा के आरमीनियाइयों को काफी नुकसान पहुंचा और इसके बाद प्रमुख आरमीनियाई व्यापारी दूसरे देशों में जाकर बस गए।

आरमीनियाइयों का नेटवर्क काफी बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ था। बंगाल से लेकर दिल्ली-आगरा तक, सूरत से लेकर लाल सागर और फारस की खाड़ी के बंदरगाह तक इनका नेटवर्क था। अब यह लगभग साबित हो चुका है कि भारत के वाणिज्यिक और आर्थिक जीवन में आरमीनियाइयों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। हालांकि यह बताना संभव नहीं है कि आरमीनियाइयों ने कब भारत में अपनी व्यापारिक गतिविधियां शुरू की थीं परंतु इतना तो तय है कि यूरोपियों के आने के काफी पहले से वे भारत में व्यापार कर रहे थे।

एक महत्वपूर्ण व्यापारी समुदाय के रूप में वे सभी व्यापारिक और उत्पादन केन्द्रों, शहरों और बंदरगाहों में मौजूद थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि व्यापार में थोड़े मुनाफे की भी गुंजाइश मालूम होने पर वे दूर-दराज के किसी भी इलाके तक जा सकते थे और दूसरे व्यापारी समुदाय से अलग किसी भी वस्तु का व्यापार कर सकते थे।

सैदाबाद (मुर्शिदाबाद का एक उप-नगर), हुगली, कलकत्ता, कासिमबाजार, ढाका और पटना में आरमीनियाई व्यापारियों की अपनी समृद्ध बस्तियां और चर्च हुआ करते थे। आगरा, दिल्ली, बनारस, सूरत, मद्रास, मसूलीपट्टनम और भारत के अन्य शहरों और बंदरगाहों में भी वे बड़ी संख्या में रहते थे। गौरतलब है कि बंगाल/भारत में व्यापाररत आरमीनियाइयों का न्यू जुल्फा से संबंध टूटा नहीं था। इस बात के कई प्रमाण मिलते हैं कि बंगाल में रहने वाले आरमीनियाइयों का सम्पर्क न्यू जुल्फा से था और बंगाल तथा न्यू जुल्फा से लगातार आना-जाना लगा रहता था जिससे यह स्पष्ट होता है कि आरमीनियाइयों की व्यापारिक गतिविधियों में उनके सांस्कृतिक और जातीय बंधन का विशेष महत्व था।

आरमीनियाइयों की सफलता

आरमीनियाई अलग-अलग नहीं बल्कि एक समूह में काम करते थे। उन्हें अपनी पहचान पर गर्व था। उनकी एक भाषा, संस्कृति और धर्म था। इससे उन्हें अपने व्यापारिक तंत्र को बढ़ाने और फैलाने में काफी मदद मिली। प्रश्न यह उठता है कि यूरोपीय ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों के इतने विकसित संगठनात्मक ढांचे से आरमीनियाई व्यापारी कैसे टक्कर ले सके और उनकी सफलता का राज क्या था।

संभवतः विशिष्ट जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यक वर्ग होने के कारण एक भरोसे का माहौल, आपस में सूचनाओं का आदान-प्रदान और परस्पर सहयोग व समर्थन आरमीनियाइयों की सफलता का रहस्य था। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ अन्य प्रवासी समुदायों जैसे यहूदियों में भी ये विशेषताएं थीं परंतु संभवतः आरमीनियाई उनसे इस मामले में आगे थे और इसलिए वे दूसरों की अपेक्षा ज्यादा सफल भी थे।

हालाँकि आरमीनियाइयों की व्यवस्था जो कि परिवार और नातेदारी पर आधारित थी कोई अनूठी बात नहीं थी। सुप्रसिद्ध इतालवी व्यापारी परिवार इसी प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था का यूरोपीय उदाहरण है। आरंभिक आधुनिक युग में व्यापार करने का यह सामान्य तौर-तरीका था। भारत में भी खासतौर पर मारवाड़ी और गुजराती तथा पारसी भी इसी तरह से व्यापार किया करते थे। ये सभी अपने-अपने उद्यमों में काफी सफल थे। वस्तुतः आरमीनियाइयों की सफलता का एक प्रमुख कारण यह भी था कि वे अपने घर से बाहर रहकर भी सफल और समृद्ध होने की इच्छा रखते थे और वे जहां भी व्यापार करते थे वहां के परिवेश में घुलमिल जाते थे और वहां की भाषा और रीति-रिवाजों का ज्ञान भी प्राप्त कर लेते थे। यह लचीलापन उनकी विशेषता थी। इन व्यापारियों की एक खूबी यह थी कि वे व्यापार करने का बड़ा से बड़ा जोखिम उठा सकते थे और स्थल व्यापार के जोखिम को पहचानने की भी दृष्टि उनके पास थी। वे हमेशा किसी भी परिमाण की व्यापारिक खेप ले जाने के लिए तैयार रहते थे और इसी में आरमीनियाइयों ने विशेषज्ञता हासिल की, जिस कारण मध्यपूर्व, भारत और यहां तक कि यूरोप में भी उनकी पदचाप सुनाई पड़ने लगी और यही उनकी अभूतपूर्व सफलता का राज़ था।

9.4.2 यहूदी

आरमीनियाइयों की तरह यहूदी व्यापारी समुदायों ने भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस्लामी इतिहास की आरंभिक शताब्दियों में यहूदी समुदाय लगभग हर शहर में पाए जाते थे और ये यहूदी इस्लामी राज्य की परिधि से बाहर होने वाले

व्यापार में भी हिस्सा लिया करते थे। उत्तर अफ्रीका और मिस्र से लेकर ईरान और खोरासान तथा भारत में मालाबार तक यहूदी समुदाय प्राचीन काल से ही व्यापार करते आ रहे थे। वस्तुतः मुसलमान आक्रमण के पहले इराक या बेबीलोनिया में यहूदी बहुतायत संख्या में मौजूद थे और यहां वे नेस्टोरियाई ईसाईयों के बाद दूसरे स्थान पर थे। वास्तव में, जब बगदाद इस्लाम की राजधानी बना और आठवीं और नवीं शताब्दी में व्यापार की लहर आई तो यहूदियों ने इसमें सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। नवीं शताब्दी में भारतीय व्यापार अन्तरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आधार बन गया। इसके फलस्वरूप आन्तरिक वाणिज्य में अभूतपूर्व तीव्रता आई और जिसके फलस्वरूप एक एकीकृत द्विधातु-मुद्रा प्रणाली विकसित हुई जिसने पूर्वी और पश्चिमी खिलाफत को अपने दायरे में ले लिया।

इस मौके पर बेबीलोनियाई यहूदियों की केन्द्रीय और मुख्य अवस्थिति के कारण उन्होंने न केवल भारत के साथ लम्बे व्यापार की शुरुआत की बल्कि वित्त संगठनों और राज्य वित्त व्यवस्था की भी शुरुआत की। बगदाद और इस्फहान में महत्वपूर्ण और निर्णायक यहूदी सम्पर्कों के साथ बड़े वित्तीय और बैंकिंग संस्थान खुले। आज हम जिस कॉरपोरेट अन्तर्राष्ट्रीय वित्त की बात करते हैं उसकी शुरुआत नवीं शताब्दी के अंत और दसवीं शताब्दी के आरंभ में अब्बासिदों के समय में यहूदियों द्वारा शुरू किया जा चुका था। इस काल में यहूदी बैंकरों का शासकों पर काफी प्रभाव था। वे सरकार को धन मुहैया कराते थे और राज्य की वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ़ करते थे और साथ ही साथ राजकोषीय प्रणाली और कृषि राजस्व वसूलने के ठेकों की प्रक्रिया में शामिल थे। दसवीं शताब्दी के आरंभ में यहूदी बैंकरों ने अब्बासिद मुद्रा बाजार पर नियंत्रण स्थापित किया और हुंडी (*सुफ्ताजा*) और चेक (*साक*) जैसी परिष्कृत वित्तीय तकनीकों के विकास में अहम् भूमिका निभाई। बैंकर, व्यापारी (*तुज्जार*) भी हुआ करता था और वह यहूदी तथा मुसलमान व्यापारियों को वित्त भी प्रदान किया करता था। वे अफ्रीकी दास व्यापार के लिए धन उपलब्ध करवाते थे, मध्य एशिया और चीन भेजे जाने वाले कारवां को तैयार करते थे और भूमध्यसागर तथा हिन्दमहासागर में जाने वाले समुद्रपारीय अभियानों का संयोजन करते थे।

इराक और ईरान में वित्त और ऋण संस्थानों में यहूदी मुसलमानों से काफी आगे बढ़ गए। मिस्र में यहूदी और ईसाईयों की आर्थिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका इनकी आबादी की तुलना में अपेक्षाकृत काफी ज्यादा थी। दसवीं शताब्दी तक मिस्र (उत्तरी अफ्रीका के साथ) अपनी बढ़ती ताकत का निकास खोजने लगा और फातिमिदों ने अपने प्रतिद्वंद्वी इराकियों से भारत के व्यापार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपने हाथ में ले लिया। इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में यहूदी काहिरा पहुंचे। पूरब में अब्बासिदों की पकड़ और ताकत ढीली और कमजोर होती चली गई और दसवीं शताब्दी के अंत में पश्चिम में, खासतौर पर सेलजुक आक्रमण के बाद और धर्मयुद्धों की शुरुआत (1096) के बाद, वे कमजोर पड़ने लगे और बगदाद का पतन हो गया। इसका असर व्यापार पर भी पड़ा और यहां तक कि अधिकांश भारतीय व्यापार का रूख मिस्र की ओर मुड़ गया। इसी प्रकार आने वाले सामानों की मात्रा तेजी से बढ़ी। मिस्र में ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी में जब व्यापार का फैलाव हुआ तो एक बार फिर इस क्षेत्र में यहूदियों का बोलबाला हो गया।

उत्तरी अफ्रीका के यहूदी समुदाय, जिन्होंने दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में पूर्वी भूमध्यसागर में विस्तृत रूप से व्यापार किया, से संबंधित बहुत से कागजात (गेनिज़ा दस्तावेज़) संयोगवश प्राप्त हुए हैं। इनसे हमें उस समुदाय की व्यापारिक गतिविधियों को समझने में खासी मदद मिलती है। काहिरा गेनिज़ा के इन व्यापारियों के साथ होने वाले पत्र व्यवहार से उनकी लम्बी दूरी के व्यापार के भौगोलिक विस्तार की स्पष्ट जानकारी मिलती है।

इस समुदाय के लोग ट्यूनिशिया में क़ेरवान, मिस्र में एलेक्जेंड्रिया और फ़ुस्तात और लाल सागर के मुहाने पर स्थित एडेन – सब जगह मौजूद थे। इससे दोस्तों और संबंधियों द्वारा

दूर-दराज बैठे मालिक की तरफ से सामान बेचने में काफी मदद मिलती थी। गेनिज़ा के दस्तावेजों से यह स्पष्ट होता है कि यहूदी व्यापारी आपस में दोस्ती और नाते-रिश्तेदारी, आपसी विश्वास और वित्तीय हितों द्वारा जुड़े हुए थे। यह समुदाय इतना सुगठित था कि यदि नियम का उल्लंघन करने वाले सदस्य के खिलाफ यह समुदाय निर्देश जारी करता था तो उसकी साख और सम्मान धाराशाई हो जाते थे। एक बार जिस व्यक्ति पर अविश्वास कर लिया जाता था वह जल्द ही अपनी साख खो बैठता था।

इसके अलावा गेनिज़ा दस्तावेजों के विस्तार से ये भी पता चलता है कि किन यथार्थ परिस्थितियों में भूमध्यसागरीय क्षेत्र का यह व्यापारिक समुदाय उत्तरी अफ्रीका से लेकर भारत तक अपना अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक जीवन बिताता था। इन दस्तावेजों से सबसे रोचक तथ्य यह सामने आता है कि यहूदी व्यापारी ट्यूनिशिया, अन्दलूसिया (स्पेन) और यहां तक कि समुद्र-पार व्यापार में सिसली तक पहुंचे हुए थे। इनमें से कई लोग पश्चिमी भारतीय व्यापार के साथ संबंधित थे और अक्सर मालाबार बंदरगाह, अदन और फुस्तात जाया करते थे। गेनिज़ा दस्तावेजों से यह बिलकुल स्पष्ट है कि उत्तरी भारत में फातमिद सम्पर्क सूत्रों के कारण इन व्यापारियों को व्यापक स्तर पर वाणिज्यिक लेन-देन करने में काफी सहूलियत हुई। परंतु यह भी सत्य है कि हिन्द महासागर से पश्चिम भूमध्यसागर तक प्रत्यक्ष सम्पर्क के आधार पर जहाजों पर सामानों की लदाई नहीं होती थी। गेनिज़ा व्यापारी भारत और मग़रिब के बीच होने वाले व्यापार के लिए बिचौलियों पर आश्रित थे।

वस्तुतः, भारत के पश्चिमी तट से लेकर भरूच के दक्षिण तक और फिर इंडोनेशिया तक लगभग बीस ऐसे स्थान थे जो यहूदियों के व्यापारिक पड़ाव थे और जिनका सम्पर्क मिस्र और लाल सागर से था। परंतु पहले की तरह वे अब बहुत प्रमुख नहीं रह गए थे और दसवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक के भारतीय व्यापार को काफी हद तक भूमध्यसागर में रहने वाले मुसलमानों द्वारा सम्पन्न किया जाता था और वे ही इसके लिए वित्त का प्रबंध भी करते थे। इसके बावजूद काहिरा यहूदी व्यापारिक गतिविधियों और वित्तीय क्रियाकलापों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनता चला गया। भूमध्यसागर और हिन्दमहासागर के बीच मिस्र एक नवीन बिचौलिए के रूप में उभरा। अतएव ग्यारहवीं शताब्दी में इराक और ईरान के व्यापारी भूमध्यसागर में बसने लगे परंतु इसकी विपरीत प्रक्रिया नज़र नहीं आती। 1050 के बाद से यहूदी बड़ी संख्या में बगदाद से निकलकर स्पेन में बसने लगे। ग्यारहवीं शताब्दी में इतालवी अधिक्रमण के बावजूद भूमध्यसागर अभी भी अधिकांशतः इस्लामी नियंत्रण और भूमध्यसागर में व्यापार करने वाले अरबभाषी यहूदियों के कब्जे में था।

1492 में स्पेन से यहूदियों के निष्कासन के समय काफी बड़ी संख्या में स्पेनी यहूदियों ने कम से कम नाममात्र के लिए ईसाई धर्म अपना लिया। नाममात्र के लिए ईसाई धर्म अपना लेने से उन्हें पहले से ज्यादा आजादी मिल गई। इसी समय 1492 में जिन यहूदियों ने स्पेन छोड़ दिया था वे या तो ऑटोमन बंदरगाहों पर या फिर पुर्तगाल चले गए (जहां उन्हें 1497 में बलपूर्वक ईसाई बना दिया गया)। इन दो महत्वपूर्ण स्थानों से उन्हें नए वाणिज्यिक अवसर प्राप्त हुए और दुनिया के मानचित्र पर उभरे नए व्यापारिक मार्गों से व्यापार करने की सहूलियत मिली। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में यहूदी और प्रच्छन्न-यहूदी (crypto-Jews) तीन प्रमुख पारसमुद्रीय और वाणिज्यिक क्षेत्र में कार्यरत थे वे या तो ईसाई धर्म से संबंधित थे या उन्हें तुर्की बन्दरगाहों पर पुनर्स्थापित कर दिया गया। उन्हें अब जो आजादी प्राप्त हुई थी उसके कारण उन्हें लम्बी दूरी के व्यापार करने में सहूलियत हुई।

9.4.3 करीमी व्यापारी

काहिरा गेनिज़ा के दस्तोवज जहां एक ओर ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दियों में लम्बी दूरी के व्यापार करने वाले विशिष्ट यहूदी व्यापारी समुदाय के बारे में कई प्रकार की जानकारियां

देते हैं वहीं 'करीम' नाम से प्रसिद्ध विस्मयकारी आर्थिक संगठन पर भी कुछ रोशनी डालते हैं। मिस्र के स्रोतों में लाल सागर के करीमी व्यापारियों को हिन्द महासागर के मसाला व्यापार में सक्रिय रूप से संलग्न बताया गया है। इसके अलावा भारतीय व्यापार के संदर्भ में गेनिज़ा के दस्तावेजों में बार-बार 'करीम' शब्द का उल्लेख हुआ है। इन दस्तावेजों के आधार पर एस. डी. गोयटिन पूरे विश्वास के साथ यह तर्क देते हैं कि बारहवीं शताब्दी में 'करीम' न तो व्यापारियों की कोई श्रेणी थी और न ही अन्तरराष्ट्रीय व्यापार की कोई विशिष्ट शाखा, बल्कि हर साल यात्रा पर जाने वाला एक समुद्री कारवां था। हालांकि गोयटिन इसकी कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं करते हैं, पर हम केवल इतना ही अंदाज लगा सकते हैं कि उस समय हिन्द महासागर व्यापार में इस प्रकार के संगठन की क्या जरूरत थी। निस्संदेह 1000 और 1300 सी ई के बीच यूरोपीय एशियाई व्यापार में काफी तेजी आ गई थी और काफी भारी मात्रा में व्यापार होने लगा था। इसलिए समुद्र के रास्ते व्यापारियों के लिए अकेले निकलना खतरनाक होता होगा। अकेले निकलने पर समुद्री डाकुओं का भी खतरा होता होगा और राज्य-कर भी ज्यादा झेलना पड़ता होगा। इसका हल निकालने के लिए धनी व्यापारियों ने कारवां की व्यवस्था की होगी जो मध्यपूर्व के राजनीतिक शासकों से संरक्षण खरीदने में सक्षम रहे होंगे और इस प्रकार हिन्द महासागर के समुद्री डाकुओं के आक्रमण से रक्षा करने में अधिक संगठित होंगे। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि करीमी व्यापारी मिस्र के लाल सागर तट पर स्थित क्यूरेशिया अल-क़दीम (Quresia al-Qadim) के बंदरगाह से अपना व्यापार संयोजित करते थे। यह व्यापार यमन, दक्षिण अरब और भारत के साथ नियमित रूप से होता था। वे काली मिर्च, मसाले, गेहूं, चावल, चीनी, रेशम और कपड़े का व्यापार किया करते थे।

9.4.4 एशिया और यूरोप के कुछ अन्य व्यापारी समूह

मध्यकाल में पूरी दुनिया में व्यापारिक गतिविधियों में आई तेजी के कारण आरमीनियाइयों और यहूदियों के अलावा कई अन्य व्यापारिक समूह और समुदाय उभरकर सामने आए।

सोगदियाई (Sogdians) व्यापारी आरंभिक मध्ययुग का एक प्रमुख समुदाय था। वे ईरानी मूल के लोग थे और मध्य एशिया के वासी थे (आज का उज़्बेकिस्तान और पश्चिमी तजाकिस्तान)। वे कुशल शिल्पी, दुभाषिये, अश्वपालक और दस्तकार के रूप में प्रसिद्ध थे। सोगदियाई पहले पहल बौद्धग्रंथों का चीनी में अनुवाद करने वाले प्रथम लोगों में से थे। सामान्यतः वे ज़रथुष्ट्र मत में आस्था रखते थे। ईसा पूर्व के आरंभ से ही चीन में उनकी उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं। मध्य एशिया के पश्चिम क्षेत्र, चीन और यहां तक कि श्रीलंका, भारत और चीन के समुद्री रास्तों के बीच में पड़ने वाले अनेक स्थानों में उनके उपनिवेश फैले हुए थे।

7000 कि. मी. लम्बे रेशम मार्ग पर, जो चीन से एशिया होते हुए पूर्वी रोमन साम्राज्य से लेकर भूमध्यसागर के तट तक फैला हुआ था, सोगदियाइयों का पूर्ण वर्चस्व था। इस मार्ग पर ज्यादातर सोगदियाई भाषा बोली जाती थी। नवीं शताब्दी के अंत में इस मार्ग पर व्यापार कम हुआ और चौदहवीं शताब्दी तक यह मार्ग पूर्णतः त्याग दिया गया। चौथी से नवीं शताब्दी सी ई तक सोगदियाई प्रभाव ज्यादा मुखर रहा। सोगदियाई मुख्य रूप से चीनी रेशम का व्यापार किया करते थे। इसके अलावा वे मलमल, काली मिर्च, चांदी और कस्तूरी का व्यापार भी किया करते थे।

चीनी व्यापारी दसवीं शताब्दी के बाद से बड़े पैमाने पर समुद्रपारीय व्यापार में संलग्न हुए। भूगोल, खगोलशास्त्र, कम्पास के आविष्कार और जहाज बनाने की प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान ने उन्हें इस क्षेत्र में बढ़त दी। हालांकि चीन की सरकार समुद्री व्यापार पर कड़ा नियंत्रण रखती थी और सभी आयातों और निर्यातों की सूक्ष्म निगरानी की जाती थी। सोंग (Song) राजवंश (960-1279) ने व्यापारिक कार्यकलापों को बढ़ावा दिया। चम्पा, खमेर (Khmer)

साम्राज्य, सुमात्रा और मलय प्रायद्वीप के बंदरगाह शहरों से उनके व्यापारिक संबंध थे। तेरहवीं शताब्दी के अंत में मार्कोपोलो ने चीनी जहाजों की खूब प्रशंसा की है। इब्न बतूता (*ट्रेवल्स इन एशिया एंड अफ्रीका 1325-1354*) उनके जहाजों का विस्तृत विवरण प्रदान करता है कि 'पूरी दुनिया में चीनियों के समान कोई धनी नहीं है'। मिंग (Ming) शासन काल (1336-1644) में चीनी व्यापारियों को जबरदस्त प्रोत्साहन दिया गया। 1405 में मिंग सम्राटों ने व्यापार के साथ-साथ नजराना वसूल करने के लिए समुद्री अभियानों का प्रायोजन किया। जहाज पर रेशम और पोर्सलिन लदे होते थे। वे हिन्द महासागर के बंदरगाहों पर जाया करते थे। यहीं से वे बदले में मसाले, हाथी के दांत, दवाएं, लकड़ी और मोती प्राप्त करते थे। चेंग हो (Cheng Ho) या ज़ेंग हे (Zheng He; 1371-1433) ने 300 जहाजों से ज्यादा और 27800 नाविकों और सैनिकों के ज़खीरे के साथ समुद्री अभियान की शुरुआत की थी। 1405-1433 में चेंग हो ने ऐसे सात अभियान भेजे थे जिसने 50,000 कि. मी. की यात्रा की थी तथा दक्षिण पूर्व एशिया, अरब और अफ्रीका के 37 देशों तक पहुँचे थे। इन अभियानों से विशाल क्षेत्र में व्यापार सम्पर्क स्थापित करने में मदद मिली थी। निजी हाथों से व्यापार को दूर रखना भी इस प्रकार के अभियानों का एक मुख्य उद्देश्य था। चीनी सरकार ने सोलहवीं शताब्दी में पहली बार चीन के निजी व्यापारियों को व्यापार करने की छूट दी।

मध्यकालीन भारत में व्यापारिक गतिविधियां बहुत अच्छी तरह से विकसित थीं और बड़े पैमाने पर अंतर्देशीय और विदेशी दोनों व्यापार किया जाता था। इस अवधि में अति विशिष्ट व्यापारिक समुदाय भी उभर कर सामने आए। विशिष्ट वस्तुओं और क्षेत्रों में विभिन्न व्यापारिक समूह कार्यरत थे। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण समूह थेः गुजरात में बनिये, बोहरे और पारसी; राजस्थान में हिन्दु और जैन मारवाड़ी; पंजाब और उत्तर भारत में खत्री; पूर्वी तट पर चेट्टी और कोमाति; और गुजरात, दक्कन और बंगाल में, संभवतः विदेशी मूल के, मुसलमान व्यापारी।

समुद्री व्यापार के क्षेत्र में **वेनेशियाई व्यापारियों** का भी एक प्रमुख समूह था। वे बारहवीं शताब्दी से मिस्र में व्यापार किया करते थे। परंतु तेरहवीं शताब्दी के बाद से वे बड़े पैमाने पर मुस्लिम इलाकों में प्रवेश करने लगे। मिस्र के अय्यूबिद शासकों ने मिस्र और सीरिया में उन्हें व्यापार करने का विशेषाधिकार प्रदान किया। हालांकि चर्च द्वारा (धर्मयुद्ध के कारण) मिस्र से व्यापार करने पर प्रतिबंध लगाने से बीच में थोड़ी रूकावट जरूर आई। तेरहवीं शताब्दी के मध्य में फातिमिदों को अपदस्थ कर मामलूक शासन में आए और उन्होंने भी नए विशेषाधिकार मुहैया कराए। चौदहवीं शताब्दी में वेनेशियाइयों ने साइप्रस, आरमीनिया, ईरान और काला सागर क्षेत्र में अपना व्यापार बढ़ाया। (चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में साइप्रस के राजा द्वारा पुनः चलाए गए धर्मयुद्ध से व्यापार को धक्का लगा)। वेनेशियाई व्यापार समुद्र तटीय क्षेत्र तक ही सीमित रह गया जहां से यहूदी और मुसलमान व्यापारी स्थल मार्ग से अंदरूनी इलाकों में सामान ले जाया करते थे।

बोध प्रश्न-1

1) इस्लाम के उदय ने दसवीं शताब्दी तक समुद्री व्यापार को कैसे प्रभावित किया ?

....

....

....

....

....

....

2) ग्यारहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के बीच यूरोपीय व्यापार का पैटर्न क्या था ?

....

....

....

....

....

3) आरमीनियाई व्यापारियों की व्यावसायिक व्यवस्था का संक्षेप में वर्णन कीजिए। उन व्यापारिक तरीकों का वर्णन कीजिए जो आरमीनियाईयों की सफलता के लिए उत्तरदायी थे।

....

....

....

....

....

4) मध्यकाल के दौरान यहूदी समुदाय ने किस प्रकार व्यावसायिक गतिविधियों में अपना वर्चस्व स्थापित किया था ?

....

....

....

....

....

5) करीमी व्यापारियों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

9.5 व्यापार मार्ग

विभिन्न इलाकों के भीतर और बाहर से सामानों की आवाजाही व्यापार मार्ग के विस्तार और प्रयोग पर निर्भर थी। मध्यकाल में स्थल और जल मार्गों का उपयोग किया जाता था। राबर्ट लोपेज ने व्यापारिक सम्पर्कों को व्यापक बनाने में अरब व्यापारियों की भूमिका पर प्रकाश डाला है। मध्य एशिया क्षेत्र से होने वाला व्यापार मुख्यतः स्थल मार्ग से होता था। भूमध्यसागरीय क्षेत्र इन कारवां मार्गों के जरिए भारत, ईरान और चीन से जुड़े थे। सिंध और गुजरात में मुसलमान व्यापारियों की व्यापारिक चौकियां थीं। दसवीं शताब्दी में मुंबई के निकट सैयमूर में उनकी एक महत्वपूर्ण बस्ती भी थी।

भारत आने के लिए व्यापारी/यात्री लाल सागर के जोर और जिद्दा नामक बंदरगाहों और फारस की खाड़ी में उबुल्लाह का उपयोग किया करते थे। चूंकि चीनी बेड़े बसरा तक नहीं

जाते थे, अतः सिराफ प्रमुख बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ। यह यमन और लाल सागर के मध्य व्यापार का मिलन स्थल बन गया। मसकट शहर और ओमान के तटीय क्षेत्रों ने इस आवागमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नवीं शताब्दी में चीनी शासकों की कार्रवाइयों के फलस्वरूप मलक्का व्यापार का केन्द्र बन गया। तांग काल के उत्तरार्द्ध और सुंग काल में चीन के पूर्वी और दक्षिणी समुद्रीय तटों का उपयोग विदेशी व्यापार के लिए किया गया। तांग काल के उत्तरार्द्ध में कैंटन (गुआंगझाओ; Guangzhou) से बड़े पैमाने पर व्यापार होने लगा। दक्षिणी सुंग के शासन काल में चुआन-चाओ, जो कि चाय और पोर्सलिन के लिए मशहूर फूकिन क्षेत्रों के निकट था, प्रमुख बंदरगाह बन गया। कोरिया का भी जापान के साथ व्यापारिक संबंध था।

सन् 1100 से पहले मध्य अफ्रीका के हिंद महासागर से अप्रत्यक्ष सम्पर्क थे। 'खोज के युग' में अफ्रीका, एशिया, अमेरिका और यूरोप के मध्य व्यापारिक संबंध और प्रगाढ़ हुए। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए भूमध्यसागर, बाल्टिक, अटलांटिक, हिंद महासागर और अरब सागर का व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल होने लगा। पीरेन की मान्यता के विपरीत कई अध्ययनों से यह पता चलता है कि अरबों के विस्तार से भूमध्यसागर में जहाजों की आवाजाही पर फर्क नहीं पड़ा।

पियेरे चाउनू (Pierre Chaunu) ने ग्यारहवीं शताब्दी में भूमध्यसागर से इतालवी व्यापारियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले चार मुख्य मार्गों को सूचीबद्ध किया है। रेशम और चीनी कलाकृतियों का व्यापार दो स्थल कारवा मार्गों से होता था। पहला मार्ग चीन से काले सागर तक, जो दक्षिण साइबेरिया के घास के मैदानी इलाकों के साथ-साथ चलता था। दूसरा रास्ता तुर्किस्तान मरूभूमि से गुज़रता था और ईरान को जोड़ता था। ईरान से यह स्थल मार्ग फारस की खाड़ी के मुहाने से जुड़ता था। इस प्रकार स्थल और समुद्री मार्ग एक दूसरे से जुड़े हुए थे। पियेरे चाउनू ने जिन अन्य दो समुद्री मार्गों का उल्लेख किया है उनका संबंध हिंद महासागर से है। ऐसा ही एक समुद्री मार्ग भारत से मलक्का और ईस्ट इंडीज होकर गुजरता था। यह फारस की खाड़ी से जुड़ता था। फिलिस्तीन और सीरिया के बंदरगाहों तक पहुंचने के लिए इन समुद्री मार्गों का उपयोग करने वाले यात्रियों को मरुभूमि से होकर गुजरना पड़ता था। लाल सागर से अकाबा की खाड़ी या स्वेज़ तक समुद्री मार्ग से पहुंचने पर एलेक्जेंड्रिया तक पहुंचने की स्थल मार्ग की दूरी काफी कम हो जाती थी।

ग्यारहवीं शताब्दी से दक्षिण की ओर व्यापार करने वाले इतालवी और अन्य व्यापारी इंग्लैंड और फ्रांस से होकर कई रास्तों का इस्तेमाल करते थे। इनमें से कई रास्ते ब्रेबन्ट और फ्रांस को जोड़ते थे। उत्तरी फ्रांस से गुज़रने वाले कई मार्ग कॉम्पीगना और ट्रॉयेस में जाकर मिल जाते थे।

बारहवीं शताब्दी के दौरान स्लैवोनिक पूर्व तक पहुंचने के लिए वेस्टफेलिया के डॉर्टमंड से होते हुए उत्तरी जर्मनी के बीचो-बीच हैलवेग, प्रमुख सम्पर्क मार्ग था, परंतु आने वाली शताब्दियों में ब्रुजेज़ और बाल्टिक के बीच चार पार-महाद्वीपीय मार्गों का विकास हुआ। इंग्लैंड के दक्षिणी पूर्वी हिस्से में बाल्टिक और नॉर्वे से लकड़ी का आयात करने के लिए नदीय जल मार्ग सस्ता पड़ता था। पूरब से पश्चिम तक डच नदियों और नहरों का उपयोग करने से हॉलैंड अन्दरूनी तटीय व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। लूबेक और हैमबर्ग ब्रूजेज़ से आने-जाने वाले सामानों को उतारने-चढ़ाने के प्रमुख केन्द्र बने। वस्तुतः यूरोप की ज्यादातर नदियों – जर्मनी में राइन, वेसर और एलबे, फ्रांस में लॉयर, रोनेक्स और गैरोन के जरिए लम्बी दूरी के भारी-भरकम सामानों की आवाजाही की जाती थी। इंग्लैंड में टेम्स, स्टूर, एवॉन और ट्रेन्ट के अलावा और भी कई नदियों का इस्तेमाल आन्तरिक व्यापार के लिए हुआ करता था।

पूर्वी यूरोप में वोल्गा मार्ग का व्यापक तौर पर उपयोग होता था। रूस और बाइज़ेंटाइन के

बीच होने वाला व्यापार द्विना और रिगा की खाड़ी से होते हुए या फिनलैंड की खाड़ी के मार्फत बाल्टिक से हुआ करता था। द्विना से सामान नाइपर (Dnieper) और काले सागर तक ले जाया जाता था।

मानचित्र 9.2: 1 शताब्दी सी ई का रेशम मार्ग
साभार: रुनेहेलमेट, जनवरी, 2013
स्रोत:https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/e/ed/Transasia_trade_routes_1stC_CE_gr2.png

नवीं शताब्दी में फ्रिसियन डोरस्टाड, डेनिश हाइथाबु और स्वीडिश बिरका बाल्टिक व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे। बाल्टिक देशों और उत्तरी पूर्वी रूस के बीच संपर्क के लिए कई जलमार्ग उपलब्ध थे जो बाल्टिक से नेवा और लाडोगा झील तक और वोलखोव से नोवगोरॉड तक फैले हुए थे।

उपर्युक्त वर्णित समुद्री मार्गों का उपयोग जहाजरानी उद्योग पर निर्भर था। मध्यकाल में अधिकांश जहाज सपाट आकार के होते थे (जिसमें तख्ते जुड़े होते थे; carvel built), और ये हल्के और गति में तीव्र हुआ करते थे। 1277 तक आते-आते जेनोइस जहाज (Genoese Galleys) कार्डिज़ और सेविले से होते हुए फ्रांस, फ्लैंडर्स और इंग्लैंड पहुंचने लगे। भूमध्यसागर में धीरे चलने वाले नेव्स (Naves) जहाजों से सामान ढोया जाता था। गेलीज के मुकाबले ये सस्ते जहाज थे। ये ज्यादा भार ढो सकते थे।

चीन में कई सुधार हुए। तांग और सुंग राजवंश शासन के दौरान मजबूत रडर (rudder) किस्म के जहाजों का प्रयोग किया गया। इनकी लम्बाई 60 मी. से ज्यादा थी। इनका तल बिलकुल चपटा था और आगे का हिस्सा (kneel) पतला था। इन जहाजों में तीन से लेकर एक दर्जन तक मस्तूल थे। इसमें चौड़े आकार के पाल (squrare sails) लगे होते थे। ये एक हजार व्यक्तियों को एक साथ ले जा सकते थे। जहाजी कम्पास के उपयोग से भी समुद्री मार्गों से आवागमन में तेजी आई। बगदाद में पन्टून पुलों (अस्थाई सेतु; pontoon bridges) का उपयोग किया जाने लगा। इसमें दोनों ही पाटों पर मजबूती से खंभे गाड़ दिए जाते थे और उन पर लोहे की चेन बांध दी जाती थी। इस प्रकार स्थानीय परिवहन के लिए नहरों का भी उपयोग होने लगा।

9.6 वाणिज्यिक गतिविधियों के केन्द्रः बाजार और मेले

विशिष्ट विनिमय और व्यापार केन्द्रों के जरिए विभिन्न वस्तुओं का व्यापार किया जाता था। प्रागैतिहासिक युगों में भी ये किसी न किसी रूप में मौजूद थे। लगभग सभी संस्कृतियों में प्राचीन काल से ही स्थानीय स्तर पर लगने वाली साप्ताहिक या नियतकालिक हाटों के संदर्भ मिलते हैं। इनमें से कुछ हाटों या बाजारों में कोई खास सामान ही मिला करता था जबकि दूसरे बाजारों में विभिन्न प्रकार की वस्तुएं मिलती थीं। स्थाई समाजों के विकास के साथ सावधिक बाजारों के अतिरिक्त व्यापार के नियमित और स्थाई केन्द्र भी विकसित हुए।

9.6.1 बाजार

मध्यकाल में बढ़ती वाणिज्यिक गतिविधियों के कारण बाजारों और शहरों का तेजी से विकास हुआ। लगभग हरेक शहर में एक बाजार होता था और बड़े शहरों में तो एक से ज्यादा बाजार हुआ करते थे। यूरोप के सभी बड़े शहरों लंदन, पेरिस, मास्को, बार्सिलोना, वेनिस, मैड्रिड, लिसबन, बवेरिया, कोलोन, लियोन्स आदि में बड़े बाजार थे जो शहर के विस्तार के साथ-साथ बढ़ते चले गए या कई बार तो इन बढ़ते बाजारों ने शहरों की सीमाओं का भी विस्तार किया। बड़े शहरों में अनाज, मछली, मांस, कपड़ा, पशु (आमतौर पर शहर से बाहर), शराब, पनीर और मक्खन, फल और सब्जी और भी अन्य जरूरी वस्तुओं के अलग-अलग बाजार हुआ करते थे। इन बाजारों के अलावा नियमित रूप से मेले भी लगा करते थे। यूरोप के दूसरे देशों में भी स्थिति अलग नहीं थी।

शिल्पी अपना सामान बेचने के लिए शहर आया करते थे (देखिए **इकाई 8, बी एच आई सी-104**)। चौदहवीं शताब्दी में दिल्ली के एक उदाहरण से वस्तुओं के लेन-देन को ठीक से समझा जा सकता है। मुल्तान होते हुए खुरासान से घोड़े यहां पहुंचते थे। इस शहर में अनाज अमरोहा (उत्तर प्रदेश) से, कोल (अलीगढ़) और मेरठ से शराब, मालवा में धार से पान के पत्ते, अवध (अयोध्या) से साधारण कपड़े, देवगिरी से मलमल, बंगाल से धारीदार कपड़ा और ईरान में तबरीज से ब्रोकेड की आपूर्ति होती थी (*द कैम्ब्रिज इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* खंड I : 84)।

अरब क्षेत्र में भी सभी बड़े शहरों में बहुतायत मात्रा में बाजार मौजूद थे। एडन, जद्दा, इस्ताबुल, हौरमुज, बगदाद, मक्का, बसरा के बाजारों में दूर-दूर से व्यापारी आया करते थे। चीन में भी लगभग सभी शहरों में बड़े-बड़े बाजार थे और यहां मध्य एशिया, अफ्रीका और भारत से व्यापारी आया करते थे। चीनी व्यापारियों की खास विशिष्टता थी कि वे अपने माल के साथ एक बाजार से दूसरे बाजार में घूमकर व्यापार करते थे। मिस्र में काहिरा में 30 से ज्यादा बाजार थे। जब यूरोपीय उपनिवेशवादी मैक्सिको, ब्राजील और अर्जेंटीना पहुंचे तो उस समय लैटिन अमेरिका में भी उनके अपने बाजार थे। उपनिवेशवादियों के आगमन के बाद इन बाजारों का आकार और भी बढ़ा और उनके व्यापार में वृद्धि हुई।

9.6.2 मेले

आमतौर पर मेलों का संबंध धार्मिक और आनुष्ठानिक उत्सवों तथा समारोहों से होता था। परंतु जैसे-जैसे व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आई, वैसे-वैसे ये मेले वाणिज्यिक गतिविधियों के केन्द्र भी बनने लगे। ये मेले अलग-अलग आकारों के हुआ करते थे जहां किसी खास क्षेत्र से, या विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न देशों के लोग आया करते थे। मेले आयोजित करने का कोई एक निर्धारित तरीका नहीं था। महीने में एक बार, कई महीने में एक बार या साल में दो बार या साल में एक बार – अलग-अलग और तरह-तरह के मेले लगते थे। कई मेले तो कई सालों के बाद लगा करते थे। इनमें से कई मेले किसी खास मौसम या खास समय

में लगते थे। कुछ मेले कुछ खास चीजों के लिए ही जाने जाते थे। सावधिक बाजारों और मेलों में बहुत तरह की चीजें मिला करती थीं। यहां दास, सभी प्रकार के जानवर, अनाज, हथियार, शिल्पगत वस्तु उत्पाद से लेकर मूल्यवान या एशोआराम की चीजें भी मिला करती थीं।

जैसे-जैसे व्यापार बढ़ता गया और यह व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़ता गया वैसे-वैसे इन बाजारों और मेलों का संबंध स्पष्ट और प्रगाढ़ होता चला गया। मेलों की शुरुआत धार्मिक उत्सवों के रूप में हुई थी, लेकिन बाद में वे व्यापार के केन्द्र बन गए। ग्यारहवीं शताब्दी में सेंट डेनिस में जून में आयोजित लेंडिट मेला एक धार्मिक मेला था। सेंट डेनिस के एबे (abbey) ने राजशाही से इस मेले के आयोजन की अनुमति प्राप्त की थी। 1109 और 1112 के बीच लुइस VI ने सेंट डेनिस के मैदानी इलाकों में एक अन्य मेले का आयोजन शुरू किया। 1213 के बाद दोनों मेले एक मेले में तब्दील हो गए जिसे 'सेंट डेनिस के मैदानी इलाके का लेंडिट मेला' कहा गया। ग्यारहवीं शताब्दी में टॉरहाउट (Torhout) का फ्लैंडर्स मेला वाणिज्यिक और औद्योगिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया।

शैम्पेन के मेले अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बन गए। 1114 के बाद से इन मेलों की जानकारी मिलती है। तेरहवीं शताब्दी में आकर इन्होंने अपना पूर्ण स्वरूप ग्रहण किया और उत्कर्ष पर पहुंचे। शैम्पेन और ब्री इलाकों के चार शहरों में 6 मेले लगा करते थेः फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, जर्मनी, स्विटज़रलैंड और सेवोय के व्यापारी कपड़े, ऊन, रेशम, चमड़ा, फर-अस्तर, मसाले, मोम, चीनी, अनाज, शराब और घोड़े इन मेलों में बेचने के लिए लाते थे। 1250 के बाद जेनोआ (Genoa) व्यापार का प्रमुख केन्द्र बना। त्रोये, प्रोविन्स, लैगनी और बार-सुर-ओबे के मेलों में भी दूर-दूर से व्यापारी आया करते थे।

माना जाता है कि शताब्दियों से ये मेले लगा करते थे। कुछ लोग लेंडिट मेले की शुरुआत नवीं शताब्दी से मानते हैं। त्रोये मेलों का संबंध रोमन युग से जोड़ा जाता है और यह माना जाता है कि लियोन्स का मेला सन् 172 सी ई से ही लगता आ रहा था। 'यूरोप में ओरलिएन्स के निकट सुली-सुर-लॉयर, ब्रिटेनी में पॉन्टिगनी, सेन्ट-क्लेयर और बेयुमोन्ट डे लूमाग्ने – इन सभी जगहों पर हर साल अलग-अलग आठ-आठ मेले लगा करते थे। मोन्टाउबेन के *जेनरेलाइट* में स्थित लेक्टोरे में नौ मेले लगा करते थे; औक (Auch) में ग्यारह'(ब्रॉडेल 1995, I: 82)।

इनमें से कई मेले आपस में जुड़े होते थे और वे एक विशिष्ट सर्किट का निर्माण करते थे जहां व्यापारी एक मेले से दूसरे मेले में घूमघूम कर अपना सामान बेचते थे। भारत के भी अपने मेले थे। इनमें से कई मेले धार्मिक हुआ करते थे परंतु यहां खरीद-बिक्री के लिए भी लोग जुटा करते थे। विभिन्न धार्मिक शहरों में 6 और 12 वर्षों के अन्तराल में एक बार विशालतम मेला (कुम्भ) लगा करता था। भारत और यूरोप के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न वस्तुओं से लदे जहाज मोचा में अपना लंगर डालते थे। मिस्र, सीरिया और अरब क्षेत्र अपने मेलों के लिए मशहूर थे। मक्का की तीर्थयात्रा व्यापारियों के लिए एक बेहतर अवसर होता था। दूर-दराज के इलाके से वे अपना हर प्रकार का सामान लेकर वहां पहुंचते थे। हौरमुज में हर वर्ष 3 से 4 महीने के लिए व्यापार का काल होता था जो एक मेले की तरह ही था। अलेक्जेंड्रिया में दो महीने (सितम्बर-अक्टूबर) में व्यापारिक गतिविधियां तेज रहती थीं क्योंकि यह मौसम जहाजों के पहुंचने के लिए अनूकूल होता था। पूर्वी एशिया में जावा में बैन्टम अपने सक्रिय व्यापारिक बाजारों और मेलों के लिए प्रसिद्ध था। भारत की तरह चीन के मेलों का संबंध भी धार्मिक उत्सवों से था। यहां बाजारों और व्यापार पर राज्य का खासा नियंत्रण था।

इन मेलों में तरह-तरह के और विभिन्न तबकों के लोगों की अद्भुत भागीदारी शामिल होती थी। बड़े व्यापारी, दलाल, छोटे दुकानदार, रेड़ी लगाने वाले और आम आदमी इन मेलों की

रौनक बढ़ाते थे। यहां थोक व्यापार से लेकर व्यक्तिगत स्तर पर खरीद-बिक्री तक हुआ करती थी। प्रत्येक मेले के आकार और महत्व के अनुसार दूर-दराज के देशों से लेकर पड़ोसी क्षेत्रों से व्यापारी यहां अपना व्यापार करने आते थे।

9.7 वाणिज्यिक गतिविधियां

बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों और थल और जल मार्ग के जरिए लम्बी दूरी के व्यापारों के कारण वाणिज्यिक लेन-देन जटिल हो गया। व्यापारिक लेन-देन के साथ कई प्रकार के जोखिम जुड़ गए। समुद्री डाकुओं और समुद्र में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं का भय बना रहता था। माल खरीदने के लिए पूंजी जुटानी पड़ती थी। दूर-दराज के इलाकों में सामान खरीदने के लिए मुद्रा की जरूरत पड़ती थी और सामान बेचकर मुद्रा लानी पड़ती थी। दूर-दराज के इलाकों से इतनी बड़ी मात्रा में स्वर्ण मुद्राएं ढोकर लाना मुश्किल काम था। इसके परिणामस्वरूप बढ़ते व्यापार के कारण कई नई वाणिज्यिक प्रथाएं और संस्थाएं स्थापित हुईं।

9.7.1 ऋण और साहूकारी

ऋण व्यवस्था व्यापक रूप से व्यापार का एक हिस्सा थी। यहां तक कि क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर भी थोक विक्रेता खुदरा विक्रेताओं को उधार पर सामान दिया करते थे और खुदरा विक्रेता भी ग्राहकों को उधार सामान दिया करता था। छोटे व्यवसाय में व्यापारी, बिचौलिए और आपूर्तिकर्ता सभी की स्थिति बहुत मजबूत नहीं रहती थी। यदि पैसे न लौटाए गए तो इससे ऋणदाता बर्बाद हो सकता था। बढ़ते व्यापार के कारण व्यापक स्तर पर होने वाले वाणिज्यिक लेन-देन के लिए धन मुहैया कराना जरूरी हो गया था। आरंभ में धन जुटाने का काम बड़े व्यापारियों ने किया। कालांतर में यह काम एक विशेष प्रकार के व्यापारी करने लगे जिन्हें महाजन भी कहा जाता था। हालांकि अधिकांश बड़े व्यापारियों ने ऋण देने का कार्य जारी रखा। भारत में राज्य के कुलीन भी व्यापार के लिए धन उधार दिया करते थे। वे केवल बड़ी मात्रा में ही धन का लेन-देन करते थे और वे केवल बड़े और स्थापित व्यापारियों को ही धन दिया करते थे। यूरोप के कई हिस्सों में भी राज्य के कुलीन व्यवसाय के लिए धन मुहैया कराया करते थे।

यूरोप में लम्बे समय से जहाज के मालिक या व्यापारी को व्यापार करने के लिए ऋण देने का चलन था। एक निश्चित गंतव्य पर जहाज के सुरक्षित पहुंच जाने के बाद ही यह ऋण अदा किया जाता था। समुद्रपारीय ऋण के बड़े फायदे थे। इसमें ऋण लेने वाले को उधार भी मिल जाता था और उसके धन का बीमा भी हो जाता था। परंतु इसमें ब्याज की दर बहुत ऊंची हुआ करती थी। 1230 के आसपास चर्च ने इस ऋण पर प्रतिबंध लगाया। परंतु इसमें बदलाव कर व्यापारियों द्वारा इसमें ब्याज की जगह एक विनिमय करार के रूप में यह प्रथा जारी रही।

पिएरे चाउनू (Pierre Chaunu) ने इतालवी व्यापारियों द्वारा धन जुटाये जाने के कई तरीकों का उल्लेख किया है। एक विधि थी *कमेंडा*, यह एक मौसम के लिए एक प्रकार की सावधिक साझेदारी थी। ग्यारहवीं शताब्दी के वेनिस से यह प्रमाण मिलता है कि *कमेंडा* एक प्रकार की 'साझेदारी' थी जो एक धन प्रदान करने वाले और व्यापारी के बीच में हुआ करती थी। वित्त प्रदान करने वाला पूंजी जुटाता था और व्यापारी व्यापार करने के लिए यात्रा करता था। इसके अलावा व्यापारियों के बीच एक और प्रकार की साझेदारी हुआ करती थी, इसे *कोलेगांज़ा* कहा जाता था। इस व्यवस्था के तहत एक व्यापारी केवल पूंजी उपलब्ध कराता था जबकि दूसरा व्यापारी पूंजी जुटाने के साथ-साथ व्यापार भी किया करता था। जेनोआ से मिले लिखित दस्तावेजों से पता चलता है कि तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जेनोआ में *कमेंडा* का चलन समाप्त होने लगा। इसके स्थान पर ***कैम्पेगनिया*** या साझेदारी का प्रचलन

चला। आरंभ में परिवार के सदस्यों के बीच ही यह साझेदारी होती थी जो एक साथ मिलकर पूंजी लगाते थे। परंतु धीरे-धीरे इसका स्थान ***कॉर्पिडी : कैम्पेगनिया*** या समाज की पूंजी लेने लगी। इस व्यवस्था के तहत इसमें व्यापार में भाग लेने वाला कोई भी इच्छुक व्यक्ति पूंजी का निवेश कर सकता था।

ऋण की अदायगी भी व्यापारिक लेन-देन का एक अभिन्न हिस्सा था। आमतौर पर व्यापारी अपने साथ नगद राशि लेकर नहीं चलते थे या फिर सामान खरीदने के लिए उनके पास नगद राशि की कमी होती थी। उन्हें उधार लेना पड़ता था और व्यापारिक मेलों के दौरान ऋण की अदायगी होती थी। उपलब्ध दस्तावेजों से यह पता चलता है कि मेले के आखिरी दिन ऋण का भुगतान किया जाता था। लेन-देन का लिखित मसौदा तैयार होता था। इन लिखित दस्तावेजों पर कर्ज लेने-वाले व्यापारी के दस्तखत होते थे जो इस ऋण को एक समय के भीतर लौटाने का वादा करता था। इस प्रकार उधार देने की व्यवस्था विकसित हुई। यह सिक्कों को ढोकर लाने-ले जाने पर आश्रित नहीं था। हेनरी पिरेन ने सत्य ही कहा है कि यूरोपीय अर्थव्यवस्था में ये मेले प्रारंभिक वितरण-केन्द्र की भूमिका निभाते थे।

मुद्रा के अलावा विनिमय के लिए दूसरे कई तरीके अपनाए जाते थे। नीदरलैंड में 'मेले का पत्र' इसी तरह की एक व्यवस्था थी। इसमें कई नगर निगम मैजिस्ट्रेटों की मौजूदगी में ऋण का दस्तावेज तैयार किया जाता था। इस पत्र को 'दो हिस्सों' में लिखा जाता था। इसकी एक ही पृष्ठ पर दो प्रतियां बनाई जाती थीं। इसके फाड़कर दो हिस्से किए जाते थे। एक हिस्सा मैजिस्ट्रेट को, और एक हिस्सा ऋण देने वाले को दे दिया जाता था। इन दोनों हिस्सों को आपस में मिलाने पर ही इसे वैध माना जाता था। इस प्रकार 'मेले का पत्र' में निश्चित राशि के भुगतान को लेने का अधिकार निहित होता था।

ऋणदाता कर्जदार से बतौर सूद एक निश्चित ब्याज लिया करता था। यूरोप में ईसाई चर्च ने सूद पर पैसा उधार देने (usury) पर पाबंदी लगा दी थी। चर्च का मानना था कि मेहनत करके पैसा कमाना ही एकमात्र रास्ता है और पैसे पर ब्याज द्वारा पैसा कमाना धर्म के खिलाफ है। इस्लाम में भी सूदखोरी मना है। इसके परिणामस्वरूप तेरहवीं शताब्दी तक केवल यहूदी ही प्रमुख रूप से महाजन बने रहे। यहूदियों के खिलाफ फैले आक्रोश और उनके उत्पीड़न को उनके कर्ज देने के व्यवसाय से जोड़कर देखा जा सकता है। चर्च द्वारा लगाया गया प्रतिबंध पूर्णतः सफल नहीं रहा और कई ईसाई समुदाय पैसा उधार देने का काम करते रहे, और कई बार वे विभिन्न तरीकों की आड़ लेकर या किसी बहाने से ऋण दिया करते थे (एक तरीका यह था कि यदि इस बात की आशंका हो कि कर्जदार को दिया गया पैसा डूब जाएगा तो फिर ब्याज लिया जा सकता था)। विनिमय पद्धति के द्वारा भी ब्याज और सूदखोरी के दायरे से बचा जाता था क्योंकि इसमें पैसा देने के साथ-साथ कमीशन बंधा होता था और यह सूदखोरी के दायरे में नहीं आता था।

ब्याज की दर लगभग 20 प्रतिशत थी परंतु मोल-भाव करके 10 प्रतिशत ब्याज पर भी धन मिल जाता था। भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में ब्याज की दरें अलग-अलग थीं और यह दर 9 से लेकर 18 प्रतिशत तक हो सकती थी। असल में ब्याज की दर कई कारकों पर निर्भर करती थी और यह 100 प्रतिशत भी हो सकती थी। इसके निर्धारण में दूरी, ऋण लेने वाले व्यक्ति की विश्वसनीयता, कर्जदार की मोलभाव की क्षमता और व्यापारिक वस्तु और स्थान से जुड़ा जोखिम प्रमुख आधार होता था।

9.7.2 विनिमय के साधन, धन का लेन-देन तथा बैंकिंग और लेखांकन

मुद्रा का उपयोग व्यापारिक गतिविधियों का अभिन्न हिस्सा था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में राज्य द्वारा मुद्राओं के वितरण और उपयोग की कई विधियां अपनाई गई थीं। चीन

में तांग और सुंग शासनकाल में सिक्कों के अलावा कागजी मुद्रा और ऋण पत्रों का इस्तेमाल किया जाता था। 811 सी ई से ही तांग ने दूर-दराज के इलाकों से सामान मंगाने के लिए 'उड़न नगद' (flying cash) प्रपत्रों को जारी किया था। इन धन ड्राफ्टों को राजधानी में भुनाया जा सकता था। सुंग काल में ऐसे कई ड्राफ्ट जारी किए गए। उधार का लेन-देन करने वाले व्यापारी इन सरकारी धन ड्राफ्टों का आपस में लेन-देन किया करते थे। निजी बैंकरों ने भी एक अलग प्रकार की कागजी मुद्रा बनाई थी। वे धन जमा करने का प्रमाणपत्र जारी करते थे जिसे तीन प्रतिशत सेवा शुल्क देकर भुनाया जा सकता था। ये प्रमाणपत्र वास्तविक मूल्य पर जारी किए जाते थे। सेचुवान (Szechwan) में चेंगतु के बैंकरों द्वारा जारी किए गए ऐसे प्रमाणपत्र काफी प्रसिद्ध थे। 1204 में जब सरकार ने उन्हें अपने नियंत्रण में लिया तो यह दुनिया की पहली वैध कागजी मुद्रा बनी। ये प्रमाणपत्र तीन साल की अवधि के लिए वैध होते थे और इस पर तीन प्रतिशत सेवा शुल्क लगता था। तोकुगावा जापान में, निजी दायमो (daimo), चावल और चांदी के प्रमाणपत्र को अपने क्षेत्र में कागजी मुद्रा के रूप में इस्तेमाल करते थे। भारत के व्यापारी मुद्रा के साथ-साथ ***हुंडी*** जैसे कागज के प्रमाणपत्रों से लेन-देन किया करते थे।

मध्यकाल में व्यापारिक लेन-देन के लिए मुद्रा के उपयोग के आधार के महत्व को जानना जरूरी है। इसके उपयोग को समझने के लिए विनिमय के माध्यम और जमा खाते की इकाई को समझना जरूरी है। धन का भुगतान करने से पहले इसके मानक मूल्य का निर्धारण करना होता था और बड़े लेन-देन का भुगतान अक्सर वजन के आधार पर किया जाता था। मुद्रा व्यवस्था का इनसे सीधा संबंध था। फ्लोरिन, गिल्डर्स, डुकाट, पाउन्ड या इसी प्रकार की अन्य मुद्राओं का व्यापार में प्रचलन था। मुद्रा विनिमय में माहिर साहूकार सबसे पहले मुद्रा का मोल आंकता था और वह यह ठीक से जांच लेता था कि उसमें उत्कृष्ट धातु का अंश कितना है। गौरतलब है कि लोग सिक्के का मोल उस पर लिखे दाम से नहीं बल्कि उसमें मौजूद धातु मूल्य से आंकते थे। इस स्थिति में मध्यकाल में ढली हुई मुद्रा भुगतान की व्यापक गतिविधियों का साधन नहीं हो सकती थी। पैसे का लेन-देन करने वाले महाजन का योगदान मुद्रा के रूप में विशाल धन राशि पर नियंत्रण और धन का हस्तांतरण और कभी-कभी व्यापारियों और बैंकरों को सवधि ऋण देना भी था।

विभिन्न प्रकार की मुद्राओं और मूल्यों के कारण मुद्रा विनिमय करने वाले सर्राफ महत्वपूर्ण होते चले गए। नवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में मुद्रा के लेनदेन का चलन था। बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जेनोआ में भी मुद्रा विनिमय करने वाले सर्राफ सक्रिय थे। उन्हें ***बनचेरी*** (यह शब्द बेन्च से बना है जिस पर सिक्के रखकर महाजन धन का हिसाब-किताब करते थे) के नाम से जाना जाता था। ये मुद्रा विनिमयकर्ता (सर्राफ) मुद्रा का आदान-प्रदान किया करते थे और अपने ग्राहकों का पैसा जमा करते थे। धन को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें थोड़ा बहुत कमीशन भी मिलता था। इस जमा किए गए धन का उपयोग दूर-दराज के इलाकों में उधार का भुगतान करने के लिए होता था। बारहवीं शताब्दी के अंत तक *हुंडी* का भी प्रयोग होने लगा। मुद्रा विनिमयकर्ता (सर्राफ) इन बिलों को लिखा करते थे और विदेशों में भी इसके आधार पर व्यापारियों को विदेशी मुद्रा मिल जाया करती थी। उसे उतनी ही राशि के बराबर का भुगतान वापस मिलता था जो उसने सर्राफ को जमा की होती थी।

अर्धस्थाई मुद्रा बाजारों के विकास के साथ मुद्रा विनिमयकर्ता बैंकर की भूमिका निभाने लगे। वे न केवल धन जमा करते थे बल्कि ग्राहकों को ऋण भी दिया करते थे और समुद्रपारीय व्यापार में हिस्सा भी लेते थे। विनिमयकर्ताओं की साझेदारी रहने के कारण ऋणदाता और कर्जदार के अलग-अलग प्रतिष्ठानों में खाता होने के बावजूद धन की आवाजाही संभव थी। चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक गैर-विनिमय *हुंडी* और बिलों का खूब उपयोग होता था।

तेरहवीं शताब्दी के आसपास बैंकिंग संस्थान बैंकिंग प्रतिष्ठानों की स्थापना के साथ पूरी तरह से उभरकर सामने आए। इटली इसमें सबसे आगे रहा और जेनोआ, लुक्का, फ्लोरेंस टस्कनी, रोम और वेनिस जैसे शहर बैंकिंग गतिविधि के प्रमुख केन्द्र बन गए। फ्लोरेंस में कई व्यावसायिक घरानों ने बैंक स्थापित किए। तेरहवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में फ्लोरेंस के बार्डी (Bardy) और पेरूज़ी (Peruzzi) घरानों ने इंग्लैंड में भी बैंक खोले। पेरूज़ी की शाखाएं एविगनॉन, ब्रुजेज़, साइप्रस, लंदन, नेपल्स, पेरिस, पीसा, रोहड्स, सिसली, ट्यूनिस और वेनिस में भी थीं। एक आकलन के अनुसार 1338 सी ई में फ्लोरेंस में 80 बैंकिंग घराने काम कर रहे थे जिनकी शाखाएं यूरोप के हर हिस्से में थीं। चौदहवीं शताब्दी के अन्त और पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोप के कई शहरों में व्यापारिक घरानों ने बैंकों की स्थापना की। इटली का मेडिसी (Medici) बैंक पंद्रहवीं शताब्दी का सर्वाधिक शक्तिशाली बैंक था। इसका मुख्यालय फ्लोरेंस में था और उसकी शाखाएं रोम, नेपल्स, मिलान, पीसा, वेनिस, जेनेवा, लिओन्स, एविगनॉन, ब्रुजेज़, लंदन और अनेक शहरों में थीं। वे चर्च के वित्तीय प्रतिनिधि भी बने। उन्होंने राजाओं को भी कर्ज दिया और यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा दिया। व्यापारियों को कर्ज देने के साथ-साथ ये बैंक व्यापार में भी हिस्सा लेते थे। वस्तुतः आरंभिक चरण में बैंकिंग के बजाए व्यापार ज्यादा महत्वपूर्ण था।

मध्यकाल के आखिरी दौर में एक्सचेंज या स्टॉक एक्सचेंज नाम की महत्वपूर्ण संस्था का उदय हुआ जो सभी व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र था। 1681 में इसे 'बैंकरों, व्यापारियों, व्यवसाइयों, मुद्रा विनिमयकर्ताओं और बैंकरों के एजेंटों, दलालों और अन्य व्यक्तियों के मिलन स्थल' के रूप में वर्णित किया गया' (सैम्युअल रिकार्ड, ब्रॉडेल 1995, I: 97 से उद्धृत)।

व्यापार को ठीक ढंग से चलाने के लिए वाणिज्यिक या व्यापारिक सौदों को लिखकर दर्ज करना बहुत आवश्यक है। समुद्रपारीय व्यापार में यूरोप में जोखिम लेखा विधि (Venture Accocunting) का खूब प्रचलन था।

बोध प्रश्न-2

1) मध्ययुगीन एशिया और यूरोप में महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों का संक्षिप्त में विवरण कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

2) मध्ययुगीन एशिया और यूरोप में व्यापारियों द्वारा अपनाई गईं विभिन्न वाणिज्यिक प्रथाओं की व्याख्या किजिए।

....

....

....

....

....

....

....

3) इस युग में व्यापार के संदर्भ में मेले किस प्रकार महत्वपूर्ण थे ?

....

....

....

....

....

....

....

4) मध्ययुग में बाजारों की वृद्धि पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

9.8 सारांश

मध्यकाल में समुद्रपार व्यापार ने यूरोप और एशिया के बीच सम्पर्क को बहुत बढ़ावा दिया। व्यापारिक गतिविधियों ने बड़े पैमाने पर इन दोनों क्षेत्रों के समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया। अरब प्रायद्वीप में इस्लाम के उदय के बाद लगभग 300 वर्षों तक अरब व्यापारियों और नाविकों ने समुद्रपार व्यापार पर प्रभुता जमाए रखी। इस व्यापार के कारण हिन्द महासागर और भूमध्यसागर के बीच होने वाले लम्बी दूरी के व्यापार को जोड़कर रखने में मदद मिली।

इस इकाई में आपने उन प्रमुख समुदायों के बारे में अध्ययन किया जिनका मध्ययुग के व्यापार और व्यावसायिक गतिविधियों पर बोलबाला था। हमने इन व्यापारी समुदायों के सामाजिक संगठन, व्यावसायिक विशेषज्ञता और व्यापारिक संगठनों की चर्चा की।

सभी व्यावसायिक समुदायों, जैसे आरमीनियाई, यहूदी, भारतीय, यूनानी, अरबी और चीनी, और उनके प्रसार में कुछ सामान्य विशेषताएं थीं जिससे यह पता चलता है कि उनकी समृद्धि और सफलता का राज़ क्या था और किस प्रकार पूरे यूरेशियाई विशाल क्षेत्र पर उन्होंने अपनी विलक्षण वाणिज्यिक व्यवस्था स्थापित कर रखी थी। उच्च स्तरीय आत्मविश्वास, सदस्यों के बीच परस्पर विश्वास और विस्तृत लेकिन सुगठित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी समुदाय के बीच परस्पर सम्पर्क होने से लेनदेन की लागत में कमी, एक खास प्रकार की संस्कृति, धार्मिक

परम्परा और अपने से जुड़ी सामुदायिक संस्थाएं सभी व्यावसायिक समुदायों की विशेषताएं थी। परंतु इसके साथ ही साथ विभिन्न व्यापारी समुदायों की व्यावसायिक व्यवस्थाओं में अन्तर भी था। उदाहरण के लिए, यहूदी समुद्रपार व्यापार में संलग्न थे और वे यहीं तक अपने को सीमित रखने का प्रयास करते थे जबकि आरमीनियाई ज्यादातर स्थल मार्ग से ही व्यापार किया करते थे।

9.9 शब्दावली

द्वीपसमूह **(Archipelago)**	:	किसी खास क्षेत्र में समुद्र के बीच मौजूद कई द्वीप या द्वीपों का समूह
बनचेरी **(*Bancherii*)**	:	जेनोआ में मुद्रा विनिमय करने वालों के लिए प्रयुक्त शब्द
कमेन्डा	:	दो व्यक्तियों के बीच व्यापारिक साझेदारी। इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति पूंजी लगाता था और दूसरा व्यक्ति उस पूंजी का उपयोग व्यापार करने के लिए करता था
कैम्पेगनिया	:	पूंजी कमाने के लिए परिवार के सदस्यों की साझेदारी
कॉर्पिडी: कैम्पेगनिया	:	कुछ व्यक्ति मिलकर साझेदारी कायम करते थे परंतु वे परिवार या कुल पर आधारित नहीं होती थीं
धर्मयुद्ध **(Crusade)**	:	मध्ययुग में मुसलमानों से पवित्र भूमि (ईसा की जन्मभूमि) हासिल करने के लिए यूरोपीय क्रिश्चन देशों के सैन्य अभियान
प्रच्छन्न यहूदी **(Crypto-Jews)**	:	ऐसे लोग जो यहूदियों या यहूदी धर्म से गुपचुप संबंध रखते थे
आन्त्रेपोट **(entrepot)**	:	आयात और निर्यात तथा संग्रह और वितरण के लिए वाणिज्यिक केन्द्र, गोदाम
फुस्टियन **(Fustians)**	:	मोटा मजबूत सूती कपड़ा
निम्न तटीय देश/क्षेत्र **(Low Countries)**	:	नीदरलैंड (हॉलैन्ड), बेल्जियम और लक्ज़ेमबर्ग
सारासेन **(Saracen)**	:	मध्यकाल में अरब या मुसलमान
हुंडी **(Bill of exchange)**	:	महाजनों/सर्राफों/व्यापारियों तथा उनके ग्राहकों द्वारा हस्ताक्षर किया हुआ लिखित प्रपत्र जिसमें एक नियत स्थल पर धारक को निर्धारित धन देने का वादा किया जाता था।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 9.2 देखें

2) भाग 9.3 देखें

3) उप-भाग 9.4.1 देखें

4) उप-भाग 9.4.2 देखें

5) उप-भाग 9.4.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 9.5 देखें

2) भाग 9.7 देखें

3) उप-भाग 9.6.2 देखें

4) उप-भाग 9.6.1 देखें

9.11 संदर्भ ग्रंथ

ब्रॉडल, फर्नांड, (1995) *द मेडिटरेनियन एंड द मेडीटरेनियन वर्ल्ड इन द ऐज ऑफ फिलिप II,* फ्रेंच से अनुवादित, सिआन रेनॉल्ड्स, 2 भाग (बर्कलेः यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस).

चौधरी, के. एन, (1978) *द ट्रेडिंग वर्ल्ड ऑफ एशिया एंड द इंगलिश ईस्ट इंडिया कम्पनी* (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

चौधरी, सुशील तथा मोरिन्यू, माइकल, (संपा.) (1999) *मर्चेन्ट्स, कम्पनीज एंड ट्रेडः यूरोप एंड एशिया इन द अर्ली मॉडर्न इरा* (कैम्ब्रिजःकैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

चाउनू, पियरे, (1979) *यूरोपियन एक्सपेंशन इन द लेटर मिडल एजेज़,* जनरल एडीटर रिचर्ड वॉगन, भाग 10 (एम्सटर्डमः नॉर्थ-हॉलैन्ड पब्लिशिंग कम्पनी).

सिपोला, कार्लो एम., (1976) *बिफोर द इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशनः यूरोपियन सोसाइटी एंड इकोनोमी, 1000-1700* (ब्रिटेनः मेथुअन एंड कम्पनी लिमिटेड).

दास गुप्ता, अशिन तथा पियरसन, एम. एन., (संपा.) (1987) *इंडिया एंड द इंडियन ओशन, 1500-1800,* (कोलकाताः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

दास गुप्ता, अशिन (1982) 'इंडियन मर्चेन्ट्स एंड ट्रेड इन द इंडियन ओशन, *सी.* 1500-1750', *कैम्ब्रिज इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* भाग I, पृ. 407-33.

दास गुप्ता, अशिन, (2001) *द वर्ल्ड ऑफ इंडियन ओशियन मर्चेन्ट 1500-1800,* कलेक्टेड एस्सेज़ ऑफ अशिन दास गुप्ता (नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

9.12 शैक्षणिक वीडियो

इंडियन ओशन ट्रेड
https://study.com/academy/lesson/trade-networks-in-the-middle-ages-empires-routes.html

इंडियन ओशन ट्रेडः रुट, नेटवर्क्स एंड हिस्ट्री
https://study.com/academy/lesson/indian-ocean-trade-route-network-history.html

द सिल्क रोडः कनैक्टिंग द एन्शिएंट वर्ल्ड थ्रू ट्रेड
https://www.youtube.com/watch?v=vn3e37VWc0k

इकाई 10 अफ्रीका*

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 मोरक्को : मध्यकालीन साम्राज्य

- 10.2.1 अलमोराविद
- 10.2.2 अलमोहद
- 10.2.3 मारिनिद

10.3 मध्यकालीन मोरक्को की अर्थव्यवस्था, समाज और धर्म

10.4 मध्यकालीन इथियोपिया

- 10.4.1 इथियोपियाई राजवंश
- 10.4.2 इथियोपियाई कॉप्टिक ईसाई धर्म
- 10.4.3 इथियोपिया : भूमि और अर्थव्यवस्था

10.5 मध्यकालीन ज़िम्बाब्वे

- 10.5.1 ग्रेट ज़िम्बाब्वे का पुरातात्विक स्थल
- 10.5.2 सामाजिक-आर्थिक जीवन

10.6 सारांश

10.7 शब्दावली

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.9 संदर्भ ग्रंथ

10.10 शैक्षणिक वीडियो

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- अफ्रीका की उत्तरजीवी मध्यकालीन सभ्यताओं/साम्राज्यों के बारे में जान पायेंगे,
- **मग़रिब** (मोरक्को) में अलमोराविद, अलमोहद, और मारिनिद साम्राज्यों के विकास को समझ सकेंगे,
- मग़रिब में साम्राज्यों के निर्माण में इस्लाम की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे,
- मग़रिब में साम्राज्यों के निर्माण में ट्रांस-भूमध्यसागरीय और ट्रांस-सहारा व्यापार की भूमिका को समझ सकेंगे,
- जान पायेंगे कि किन भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने इथियोपिया में साम्राज्यों/राजशाही/मुखिया तंत्रों के विकास को आकार दिया,
- ग्रेट ज़िम्बाब्वे के मध्ययुगीन इतिहास को समझ पायेंगे, और

* डॉ. देबअर्पित मनजीत, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- ग्रेट ज़िम्बाब्वे के बारे में मिथकों को जान पायेंगे।

10.1 प्रस्तावना

अफ्रीका एक विशाल और विविधता से परिपूर्ण महाद्वीप है। किसी भी इतिहासकार के लिए अफ्रीका के इतिहास में मध्ययुगीन काल को ठीक-ठीक समझ पाना कठिन है। ऐसे क्षेत्रों का पता लगाना भी एक कठिन काम है, जो पूरे महाद्वीप का प्रतिनिधित्व कर सकें। इसकी आधुनिक राष्ट्रीय सीमाओं में एक क्षेत्र के मध्ययुगीन इतिहास को परिभाषित करना और अधिक कठिन है। राष्ट्रीय सीमाएँ आधुनिक हैं और मध्ययुगीन (जो कि पूर्व-आधुनिक है) समाजों की अपनी क्षेत्रीय सीमाएँ थीं। मध्यकाल आधुनिक सीमाओं से परे है। लेकिन फिर भी आधुनिक राष्ट्रीय राज्यों ने अपनी मध्ययुगीन जड़ों की खोज की है। और यह एक अभेद्य प्रयास रहा है। इस इकाई में हम इस अभेद्य प्रयास को जारी रखते हुए स्वैच्छिक (randum) चयन द्वारा अफ्रीका के तीन क्षेत्रों के मध्यकालीन इतिहास को समझने का प्रयास करेंगे। ये तीन क्षेत्र मोरक्को, इथियोपिया और ज़िम्बाब्वे हैं।

हम यहां जानबूझकर अन्य तीन प्रमुख आधुनिक क्षेत्रों – उत्तरी अफ्रीका (फैरोनिक मिस्र), पश्चिम अफ्रीका (कावकाव, मालेल [माली], घाना और कनेम), और दक्षिण अफ्रीका (बंटू, गुनिस/सान्स्) के अध्ययन को छोड़ रहे हैं। इस पाठ्यक्रम की सीमाओं के कारण हम इन क्षेत्रों के संबंध में विस्तृत चर्चा नहीं कर रहे हैं।

10.2 मोरक्को : मध्यकालीन साम्राज्य

अफ्रीका की उत्तर-पश्चिम सीमा पर, मोरक्को, एक आधुनिक राष्ट्र-राज्य को मोटे तौर पर एक भूतपूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश के रूप में जाना जाता है। विशाल क्षेत्र, जिसे आमतौर पर मग़रिब (Maghrib) के रूप में जाना जाता है, पूर्व और पश्चिम मग़रिब में विभाजित है। यहाँ हमारी चर्चा काफी हद तक पश्चिमी मग़रिब और सूडान तक ही सीमित रहेगी। अपने इतिहास में और गहराई में, यह बरबर नामक लोगों की भूमि थी और बड़े पैमाने पर आज भी है। इतिहास बताता है कि बरबर कभी मग़रिब या आधुनिक समय के मोरक्को-अल्जीरिया क्षेत्र के लोगों का आत्म-संदर्भ नहीं था। बरबर उन्हें यूनानियों और अरबों द्वारा दिया गया एक नाम था। बरबर लोग बरबर/अमाज़िघ (Amazigh) बोलने वाली 'जनजातियां' थीं। [अमाज़िघ के लगभग तीन रूपांतर या बोलियाँ हैं : रिफ़ियन (Riffian), तलशिट (Taleshit) और तामाज़ाइट (Tamazight) और ये बरबरों के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाती हैं। अब यह कहा जाता है कि यह भाषा (या भाषाएँ) बड़े पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों में बोली जाती हैं और मोरक्को की आधिकारिक भाषा अरबी है।] बरबर एक भाषा, एक धर्म और एक प्रकार की आर्थिक गतिविधि का एक समरूप/सजातीय समुदाय नहीं थे। इसके बजाय वे अलग-अलग स्थलाकृतियों पर आधिपत्य किये हुए थे और विभिन्न उत्पादक गतिविधियों में संलिप्त थे। कुछ बरबर खानाबदोश थे और कुछ अस्थायी कृषक थे। उनकी बस्तियाँ अतलस पहाड़ों के दोनों ओर पाई गईं और दक्षिण में सहारा और पूर्व में ट्यूनीशिया तक और पश्चिम में अटलांटिक के तटों की ओर विस्तृत थीं। वे आपस में लड़ते-झगड़ते थे और साथ ही आपस में अंतर्जातीय विवाह भी करते थे। उनके मतभेदों पर अधिक बल नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उनके बीच अत्यधिक समानता भी थी। उन्हें मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया गया था, जैसे कि मस्मुडा बरबर (Masmuda Berbers), संहाजा बरबर (Sanhaja Berbers संहाजा बरबर के लगभग 50 अधिक कबीलों में तीन प्रमुख प्रभुत्वशाली जनजातियां बानी गुडाला (Bani Gudala), बानी लमतूना (Bani Lamtuna), बानी मसुफा (Bani Massufa) थीं जिनके सरदार मजबूत और शक्तिशाली थे) और ज़नाटा बरबर (Zanata Berbers) थे। विभिन्न बरबर जनजातियों के अपने मुखिया और

शासन-सिद्धांत थे। इसके अलावा, बरबर क्षेत्र में अन्य समुदायों के मुसाफिर एवं प्रवासी यहूदी और ईसाई, सूडानी आदि भी बसे हुए थे।

7वीं शताब्दी में, इस्लाम (*कुरान* और अरबी के साथ) बरबर देश में पहुंचा। *इस्लामीकरण/अरबीकरण* की प्रक्रिया यहीं से शुरू होती है। कुछ बरबर इस्लाम को अपने धर्म के रूप में स्वीकार करते थे लेकिन उनके द्वारा कुछ स्वदेशी प्रथाओं का पालन जारी रखा गया। इसे 'अशुद्ध' इस्लाम माना गया और 11वीं शताब्दी तक, कुछ इस्लामी विद्वानों, न्यायविदों और कट्टरपंथियों ने इस्लाम के बरबर संस्करण को शुद्ध करने के बारे में सोचा। इसमें एक प्रमुख व्यक्ति इब्न यासीन द्वारा पहल की गई, जो एक तीर्थयात्रा पर मक्का गया था और उसने 'सच्चा' इस्लाम किसे कहा जा सकता है, की बारीकियों को सीखा था। कुछ विद्वान इसे इस्लामी सुधार आंदोलन कहते हैं, जबकि अन्य इसे 'पवित्र' या 'धार्मिक युद्ध' या *'जिहाद'* के रूप में पुकारते हैं। यह उत्तर-पश्चिम अफ्रीका में मोरक्को के विभिन्न बरबर राजवंशों, अलमोराविद (Almoravids; 1056-1147), अलमोहाद (Almohads; 1130-1269), और मारिनिद (Marinids 1196-1464) की स्थापना की प्रक्रिया के रूप में भी था। ये साम्राज्य दक्षिणी मोरक्को/घाना से **अंदलूसिया** (Andalusia) तक विस्तारित थे। हम देखेंगे कि मध्यकाल के दौरान इन क्षेत्रों में अलमोराविद, अलमोहाद और मारिनिद के मध्ययुगीन साम्राज्य कैसे विकसित हुए और मध्यकाल में इनके शासन के अंतर्गत मोरक्को समाज और अर्थव्यवस्था का विकास कैसे हुआ।

10.2.1 अलमोराविद

इब्न यासीन (मृ. 1059) ने दक्षिण-पश्चिम सहारा में ग्यारहवीं शताब्दी में अलमोराविद साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने विशिष्ट उद्देश्य और दृढ़ संकल्प के साथ इस्लाम को शुद्ध करने के लिए और बरबर जनजातियों को उनके विधर्मी या खारिजी[1] (Kharijite) इस्लाम से दूर करने और उन्हें एक अरब साम्राज्य के तहत एकत्रित करने के लिए शुरूआत की। वह एक गजुला बरबर (Gazula Berber) था और अबू के निर्देशों के तहत दक्षिणी सनहाजा (Sanhaja) जनजातियों के मध्य इस्लाम का प्रचार करने गया था। वह इस बात से बहुत परेशान था कि वहां के मुसलमान पैगंबर की 'उचित' शिक्षाओं या इस्लामी कानून – *शरिया* का पालन नहीं कर रहे थे। वह खुद, सूत्रों से प्रकट होता है, विशुद्धतावादी (puritanical) था और इस्लामी न्यायशास्त्र के मालिकी स्कूल से प्रभावित था और एक धार्मिक कट्टरपंथी था। प्रचलित इस्लाम को गुडाला बरबरों के मध्य शुद्ध करने का उसका प्रारंभिक प्रयास सफल नहीं रहा। उसकी धार्मिक सिद्धांतों की कठोर व्याख्या और दंडात्मक उपायों ने उसके खिलाफ विद्रोह की आग को हवा ही दी। गुडालाओं ने न केवल उसका विरोध किया बल्कि उसके घर पर भी हमला किया और उसे अपना जीवन बचाने के लिए भागना पड़ा और अंततः वह वहां से चला गया।

लेकिन वह अंत नहीं था। सिजिलमासा (Sijilmasa; सहारा की उत्तरी सीमा पर एक समृद्ध शहर और व्यापारिक प्रवेशद्वार) के मुसलमानों ने इब्न यासीन को सत्तारूढ़ कबीलाई प्रमुख, ज़नाटा (Zanata) के मघरावा (Maghrawa) के उत्पीड़न से बचाने के लिए आमंत्रित किया। समय बर्बाद किए बिना वह उनके बचाव में आया और शहर और व्यापार केन्द्र पर नियंत्रण कर लिया। उस जगह के लोगों (बानी लमतूनास/Bani Lamtunas) ने न केवल उनकी मदद की बल्कि उन्हें 'सच्चे' इमाम के रूप में स्वीकार किया और उनके पीछे अपने सभी संसाधन जुटाए और उसके बाद उन्होंने दक्षिणी सहारा के एक और शहर और अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र ऑघस्त (Awghust) को अपना निशाना बनाया। और यहाँ से उन्हें कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखना

[1] खारिजी (अरबी ख्वारिजा, जिसे अल-शूराह के नाम से भी जाना जाता है) सबसे शुरुआती इस्लामी संप्रदायों में से एक था। उन्होंने अली और उनके प्रतिद्वंद्वी मुआविया के साथ मध्यस्थता की अली की नीति का विरोध किया। उनका मानना था कि, न केवल कुरैश, बल्कि किसी भी समुदाय के नेता, इमाम बन सकते हैं।

पड़ा क्योंकि इन दोनों व्यापार केन्द्रों ने अलमोराविद साम्राज्य के विस्तार और 'सच्चे' इस्लाम के प्रसार के लिए आवश्यक सभी आर्थिक संसाधन प्रदान किए।

अंत में, 11वीं शताब्दी के मध्य के आसपास, अलमोराविद पूरे क्षेत्र पर अपना साम्राज्य स्थापित करने में सफल होते हैं जो दक्षिण में उत्तरी घाना से लेकर मोरोक्को (मग़रिब) और उत्तर में अंदलूसिया (Andalusia: दक्षिणी स्पेन) तक विस्तारित था। यूसुफ इब्न तशफीन के अधीन अलमोराविद शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई और उसे मग़रिब और जलडमरूमध्य के पार दक्षिणी स्पेन में अलमोराविद साम्राज्य स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। स्पेन से सूडानी और ईसाई बंदियों के साथ उन्होंने अपनी सेना का पुनर्गठन और निर्माण किया। इस प्रकार सेना के कबीलाई चरित्र को एक 'विषम' (heterogeneous) शाही सैन्यबल में बदल दिया। उनके काल ने खलीफा से सम्बन्ध विच्छेद की प्रक्रिया की शुरुआत को चिहिन्त किया, हालांकि यूसुफ ने खलीफा के आधिपत्य को स्वीकार करना जारी रखा। खलीफा ने खुद इस क्षेत्र में इब्न तशफीन की शक्ति को स्वीकार किया: 'मैं रेगिस्तान से बाहर नहीं रह सकता, और मैं (यहाँ) केवल आपको अधिकार सौंपने के लिए आया था ...' (लेवत्ज़िओन 2008: 334)। सनहाजाओं को विशेषाधिकार प्राप्त थे और वे अभिजात वर्ग का हिस्सा बन गये। वे सेना के कमांडर और प्रांतों में गवर्नर थे। इस प्रकार यह केवल धार्मिक विचारधारा ही नहीं थी जिसने अलमोराविद साम्राज्य को स्थापित करने में मदद की, बल्कि अन्य कारकों ने भी उनकी शक्ति की स्थापना और सुदृढ़ीकरण में योगदान दिया।

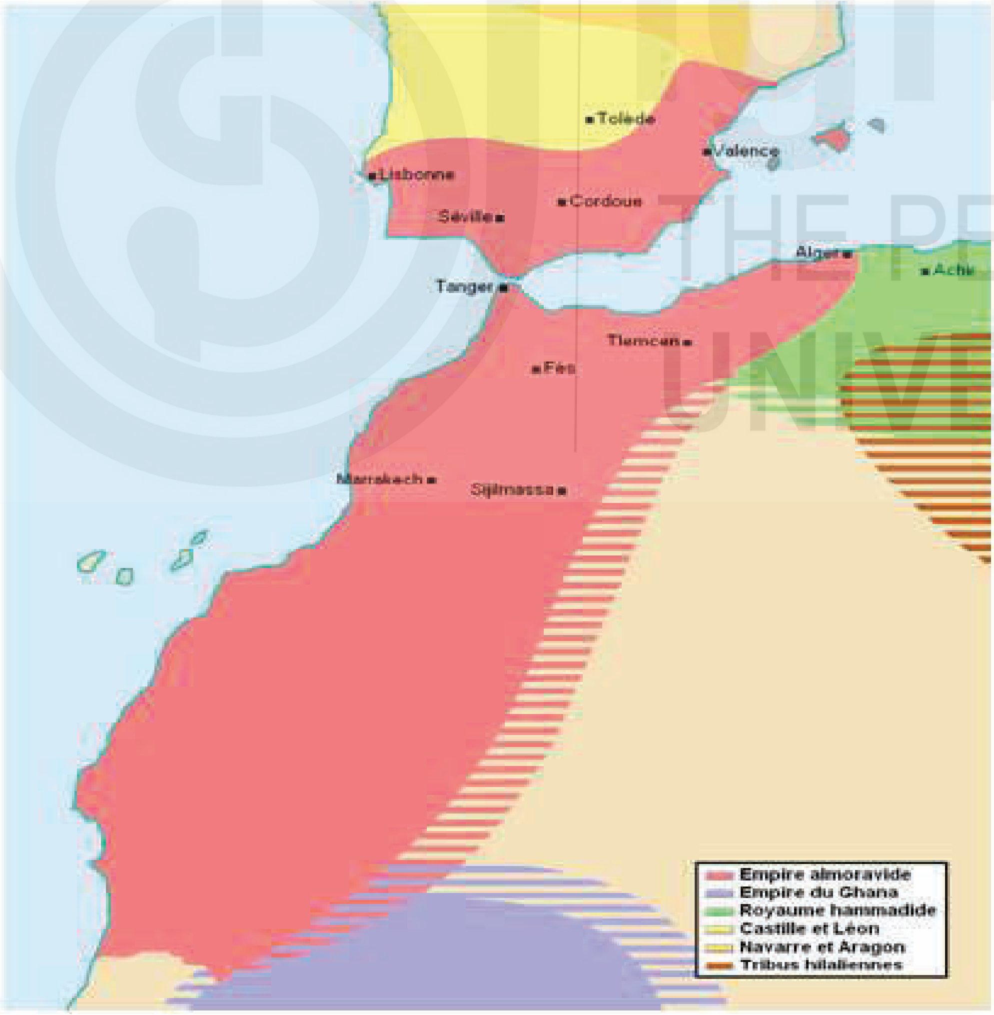

मानचित्र 10.1: अलमोराविद साम्राज्य

साभार : ओमर-टून, फरवरी 2012

स्रोत : https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/cb/Empire_almoravide.PNG

10.2.2 अलमोहद

'शुद्ध' इस्लाम को थोपने की मालिकी नीतियों के प्रति बढ़ते असंतोष और अल-अशारी (मृ. 935) और अल-ग़ज़ाली (1058-1111) के सूफी प्रभाव, जहाँ उन्होंने 'कानूनी अभ्यासों के माध्यम से मोक्ष' प्राप्त करने के लिए *फुकाहाओं* (न्यायविदों) की निंदा की, ने अलमोहदों के अलमोराविदों पर हावी होने के मार्ग को आसान कर दिया। 12वीं शताब्दी के मध्य में अलमोहदों के एक *महदी* इब्न तूमार्त (Ibn Tumart), जो आंति-अतलस[2] के मसमुडा कबीले के थे, ने *यूनिटेरियन (एकेश्वरवादी; मुवाहिदीन), स्कूल ऑफ़ फिलासफी* को साझा करते हुए एक और धार्मिक-राजनीतिक आंदोलन शुरू किया, जिसने अलमोहद साम्राज्य का गठन किया और अलमोराविद की तुलना में कहीं अधिक आगे पूर्व में मग़रिब और इफ्रीकिया (आधुनिक ट्यूनीशिया, पश्चिमी लीबिया और पूर्वी अल्जीरिया) तक विस्तार किया। 1125 तक उन्होंने तिनमेल (Tinmel) के अपने मुख्यालय के साथ, स्वयं को मसमूडा क्षेत्र में स्थापित किया। इब्न तूमार्त का 1128 में निधन हो गया। इब्न तूमार्त ने पचास कबीलाई प्रतिनिधियों की एक परामर्शदात्री सभा की स्थापना की, इस प्रकार प्रत्येक कबीलाई समूह को समायोजित किया और उन्हें अपनी पहचान बनाए रखने की अनुमति दी। हालाँकि, उनके अपने कबीले हर्गा (Harga), की प्रिवी कांउसिल की अपने दस सर्वाधिक अंतरंग शिष्यों के साथ सर्वोच्चता बनी रही। उसका उत्तराधिकारी शासक लेमसेन (Tlemcen) का एक ज़नाटा, अब्द अल-मुमिन था। वह राजवंश का वास्तविक संस्थापक था। 1145 में उन्होंने अलमोराविद के ईसाई भाड़े के सैनिकों को हराया और तशफ़ीन बिन अली (Tashfin b. Ali) को बंदी बना लिया। उसने 1146-47 में अलमोराविद की राजधानी, माराकेश (Marrakesh) पर विजय प्राप्त की। अब्द अल-मुमिन ने *अमीर अल-मुमिनिन* (वफ़ादार सेनापति, जो बगदाद के अब्बासिद खलीफा का विशेषाधिकार, वह खिताब जिसे अलमोराविदों ने कभी धारण करने की हिम्मत नहीं की) की उपाधि धारण की। इस प्रकार 'पहली बार अब मोरक्को के शासक को खलीफा माना जाने लगा, यह एक ऐसी परंपरा का प्रारम्भ था जिसे शायद ही कभी छोड़ दिया गया हो' (लेवत्ज़िओन 2008 : 342)। अलमोराविद कभी भी मध्य मग़रिब (अल्जीरिया) की ओर नहीं बढ़े। लेकिन अबू अल-मुमिन ने बानू हम्माद, जिन्होंने मध्य मग़रिब पर शासन किया, के विरूद्ध 1151/52 में उनकी राजधानी बुगी (Bougie) पर विजय प्राप्त की। 1152 में उन्होंने सेतिफ (Setif) पर और 1160 में महदिया पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार पहली बार पूरा मग़रिब अलमोहदों के अधिकार में आ गया। 1184 में अलमोहद इफ्रीकिया (Ifriqiya) पर भी अपना अधिकार स्थापित करने में सफल रहे। अलमोहदों ने जलडमरूमध्य को भी पार किया और स्पेन पर कब्जा कर लिया और ईसाइयों की प्रगति को रोक दिया। इस प्रकार पूरा मग़रिब, इफ्रीकिया और स्पेन अलमोहदों के नेतृत्व में संगठित हो गए। हालांकि, इसने उनके संसाधनों को रिक्त कर दिया। अबु याकूब यूसुफ (1163-1184) की स्पेन में *जिहाद* की लड़ाई के दौरान 1184 में मृत्यु हो गई। अबू यूसुफ याकूब (1184-1199) ने 1195 में अलारकोस (Alarcos) में स्पेनिश ईसाई सेनाओं को हराया और अल-मंसूर की उपाधि धारण की। हालांकि, 1212 में लास नवास डी टोलोसा (Las Navas de Tolosa) की लड़ाई में अलमोहदों की हार ने अलमोहद शक्ति के पतन को चिहिन्त किया। 'स्पेन में ईसाईयों का बढ़ता दबाव, इफ्रीकिया में विद्रोह (अरब खानाबदोशों [मखज़िन के रूप में समाविष्ट] की बढ़ती ताकत जिसके कारण ज़नाटा और तुर्कोमान संघर्ष हुए) और कमजोर ख़लीफ़ाओं के उत्तराधिकार ने अलमोहद साम्राज्य की नाजुक संरचना को तितर-बितर कर दिया' (लेवत्ज़िओन 2008: 344)। 1236 में इफ्रीकिया के गवर्नर हफ्सिद (Hafsid) और 1239 में लेमसेन के गवर्नर,

[2] आंति-अतलस, अतलस पर्वतश्रृंखला का हिस्सा है जो करीब 500 किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है और जो सहारा की सीमाओं के साथ-साथ दक्षिण की ओर फैली हुई है। यह श्रृंखला अटलांटिक महासागर में दक्षिण पश्चिम से लेकर उत्तर पूर्व, ओऊआरज़ाज़ाते (Ouarzazate) और आगे पूर्व की ओर ताफिलात तक फैली हुई है।

यघमोरसन (Yaghmorasan) ने खुद को अलमोहदों से स्वतंत्र घोषित कर दिया। स्पेन में भी ईसाई धर्म की जीत हुई और 1276 तक सभी मुस्लिम अधिकृत प्रदेश लुप्त हो गए, यहां तक कि मोरक्को में भी 1248 के बाद ज़नाटा के बानो मार्टिन वास्तविक शासक थे और जब अलमोहदों के आखिरी खलीफा इदरीस अल-वतिक की 1269 में गुलाम द्वारा हत्या कर दी गई तो उनका नियंत्रण मात्र राजधानी मारकेश तक सिमट कर रह गया।

10.2.3 मारिनिद

13वीं शताब्दी के मध्य में, यह मारिनिद ही थे जिन्होंने मोरक्को में खुद को स्थापित किया था, इफ्रीकिया में हफ्सिद अलमोहदों के उत्तराधिकारी बने, जबकि लेमसेन (Tlemcen) में ज़ायनिदों (Zayyanids) ने सत्ता पर कब्जा किया। मारिनिदों (*c*.1250-*c*.1465), जो ज़नाटा के उप-कबीले के बानू-मारिन (Banu-Marin) खानाबदोश थे, और उन्होंने कभी भी स्थिर जीवन या कृषि को नहीं जाना, लेकिन मवेशियों, ऊंट, घोड़ों और दासों पर निर्भर थे, वे अलमोहदों के विरूद्ध संघर्षरत हुए और मोरक्को के एक समृद्ध शहर माराकेश पर विजय प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने न केवल नई राजधानी (नवीन फैज़; New **Fez**) का निर्माण किया, बल्कि एक ऐसा साम्राज्य भी बनाया, जिसने उस क्षेत्र पर लगभग दो शताब्दियों तक शासन किया।

खलीफा सईद की मृत्यु के बाद, अबू याह्या के नेतृत्व में बानू मारिन बरबरों (बद्दुओं) ने फैज़ (Fez), ताज़ा (Taza), मेकेन्स (Mekens), साले (Sale) और रबात (Rabat) पर कब्जा कर लिया। फैज़ उनकी गतिविधियों के मुख्य केंद्र के रूप में उभरा। अबू याहिया की मृत्यु 1258 में हुई, जिनके बाद अगले शासक अबू याकूब यूसुफ (1258-1286) ने अपनी शक्ति को मजबूत किया और 1269 में माराकेश पर कब्जा कर लिया जिसने अलमोहद साम्राज्य के अंत की घोषणा की। 1299 में अबू याकूब यूसुफ (1286-1307) ने अल्जीयर्स (Algiers) तक मध्य मग़रिब पर कब्ज़ा कर लिया और आठ साल के लंबे समय तक लेमसेन (Tlemcen) की घेराबंदी की। अबू याकूब यूसुफ के बेटे अबू सबित और अबू रबी 1307-1310 के दौरान उनके उत्तराधिकारी हुए, और बाद में उनके भाई अबू सईद उस्मान (1310-1331) उनके उत्तराधिकारी बने। अबू सईद को अपने बेटे अबू अली से लगातार परेशानियों का सामना करना पड़ा जो सिजिलमासा का गवर्नर था। 1331 में अबू सईद की मृत्यु के बाद उनके बेटे अबुल हसन जो मारिनिद सुल्तानों में सबसे बड़े थे, ने आखिरकार अबू अली के प्रतिरोध को दबा दिया और सिजिलमासा पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। मारिनिदों ने हफसिदों (Hafsids) के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे, यहां तक कि अबुल हसन ने हफसिद राजकुमारी से शादी की, जिसने इस गठबंधन को और मजबूत किया। अबुल हसन ने 1337 में लेमसेन (Tlemcen) पर विजय प्राप्त की। 1346 में अबू बकर की मृत्यु के बाद, हफसिद सुल्तान अबुल हसन ने इफ्रीकिया पर कब्जा कर लिया, इस प्रकार उसने पूरे मध्य और पश्चिमी मग़रिब को अपनी एकल सत्ता के तहत संगठित किया। अलमोहदों की तरह वे भी स्पेन में लंबे समय से चली आ रही झड़पों में व्यस्त रहे जिसने उनके संसाधनों को खाली कर दिया और जो उनके पतन का मुख्य कारण था। उन्होंने इफ्रीकिया में अरबों के गंभीर प्रतिरोध का भी सामना किया। जहां हफसिद (Hafsids) अरबों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से बचते रहे, अबुल हसन के प्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति ने अरबों को सीधे टकराव में लाया जिससे अंततः 1348 में कैरौआन (Kairouan) के निकट अरबों के हाथों अबुल हसन की हार हुई। 1350 में उनके बेटे अबू इनान (Abu Inan), जो कि लेमसेन के गवर्नर थे, ने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर स्वतंत्रता की घोषणा की और अबुल हसन को उच्च-अतलस[3] पहाड़ों में शरण

---

[3] उच्च-अतलस पर्वत श्रृंखला पश्चिम में अटलांटिक समुद्र तट से निकलती हुई पूर्व की ओर मोरक्को-अल्जीरिया के सीमांत प्रदेशों में फैली हुई है।

लेनी पड़ी जहां 1351 में उनकी मृत्यु हो गई। दिलचस्प बात यह है कि मारिनिद कभी भी अतलस क्षेत्र में अपना अधिकार स्थापित नहीं कर सके। मोटे तौर पर, अतलस (Atlas), रिफ (Rif) और जिबाल (Jibal) स्वायत्त रहे। अबू इनान अपने पिता की तरह एक महत्वाकांक्षी सुल्तान था, जिसने *अमीर-अल मुमिनिन* की उपाधि धारण की और दोबारा लेमसेन (1352) और मध्य मग़रिब को अधिकृत किया और बूगी (Bougie) पर 1353 में विजय प्राप्त की। हालाँकि, इफ्रीकिया में बढ़ते अरब प्रतिरोध के कारण उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा और आखिरकार उनके एक मंत्री द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। तत्पश्चात् मारिनिद सल्तनत में पन्द्रवीं शताब्दी में इसके पतन तक अराजकता का एक लंबा दौर चला। अबू इनान के बाद 1358-1465 सी ई के मध्य लगभग सत्रह सुल्तानों ने शासन किया। प्रभावी रूप से 1420 में मारिनिद शासन का अंत हो गया, हालांकि सल्तनत बानू वत्तास (Banu Wattas) सुल्तानों के अधीनत्व में 1465 तक चलती रही। लगातार ईसाई दबाव और अंदलूसिया में मग़रिब सुल्तानों की भागीदारी, मग़रिब में मध्ययुगीन सल्तनतों की प्रमुख विशेषता थी। हालाँकि, 1415 में पुर्तगालियों द्वारा सेउटा (Ceuta) पर कब्जे ने एक और अध्याय को चिहिन्त किया, जिसने 'अफ्रीकी तटों पर ईसाई आक्रमण का सूत्रपात किया'।

1117 में निर्मित माराकेश (Marrakesh) में कुब्बा/कौब्बा (Kubba/Koubba) अलमोराविदों की एकमात्र उत्तरजीवी वास्तुकला है। उत्कृष्ट जल निकासी के माध्यम से पीने के पानी की सुविधा, शॉवर, शौचालय की उपस्थिति से पता चलता है कि यह संभवतः एक बड़ी मस्जिद की संरचना का हिस्सा था और इसका उपयोग वज़ु के लिए हाथ-मुंह धोने के लिए किया जाता था। अलमोहदों के उल्लेखनीय स्थापत्य में मोरक्को स्थित तिन्मलाल (Tinmallal) मस्जिद, रबात स्थित हसन मस्जिद की अधूरी मीनार थे। और ये उनकी राजनीति और धर्म की अनूठी विशेषताएं थीं। मारिनिद महान् भवन-निर्माता थे। उनके द्वारा निर्मित कई कब्रें, अरब स्नानागार, मस्जिदें और मदरसों के अवशेष अस्तित्व में हैं। फैज़ का मदरसा सुल्तान उस्मान अबू सईद (1310-1331) ने बनवाया था।

चित्र 10.1: अलमोराविद कौब्बा

साभारः कश्मीर, अगस्त 2005

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d1/C%C3%BApula_almor%C3%A1vide_%28Marrakech%29.jpg

चित्र 10.2: मारिनिद मदरसा 1323-1325, फ़ैज़

साभारः just_a_cheeseburger, May 2012

स्रोत : https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/0/09/Al-Attarine_Madrasa_%288753523807%29.jpg

बोध प्रश्न-1

1) अलमोराविद कौन थे? उनकी धार्मिक विचारधारा क्या थी?

....

....

....

....

....

2) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि अलमोराविद धार्मिक विचारधारा ने मग़रिब में अलमोहद सत्ता की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया?

....

....

....

....

....

3) मग़रिब में मारिनिद शक्ति के विस्तार पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

10.3 मध्यकालीन मोरक्को की अर्थव्यवस्था, समाज, और धर्म

मग़रिब (या पुरातन मोरक्को) में प्राथमिक उत्पादक किसान और खानाबदोश थे। किसान शहरवासियों और खुद के लिए खाद्य फसलों और नकदी फसलों का उत्पादन कर रहे थे। आंशिक रूप से, भूमि निजी तौर पर धनाढ्य लोगों के पास एक कबीला प्रमुख के रूप में थी, लेकिन बड़े पैमाने पर भूमि सामूहिक रूप से किसानों के स्वामित्व में थी। वहां पट्टेदारी (tenant-farming) के साथ-साथ बटाईदारी (share-cropping) दोनों प्रचलन में थे। किसान विभिन्न प्रकार की खाद्य और नकदी फसलों का उत्पादन कर रहे थे।

खानाबदोशों में ऊंट-चरवाहों, पशुपालकों, बकरी पालने वाले किसानों के साथ-साथ बनवासी शामिल थे। ये लोग अपने झुंडों के लिए चारागहों की तलाश में जगह-जगह घूमते थे। अपने आवधिक प्रवास (periodic migrations) के भाग के रूप में वे एक विशेष मौसम में वापस उसी स्थान पर आते थे। उन्होंने जानवरों के पालन के साथ-साथ थोड़ा बहुत कृषि को भी अपनाया। उनके उत्पादों में दूध, मांस, चमड़ा और ऐसे अन्य उत्पाद शामिल थे। ऊंट-चरवाहों ने न केवल जानवरों को महत्वपूर्ण ट्रांस-सहारन व्यापार को बोझा ढोने हेतु पशु उपलब्ध कराये, बल्कि वे रेगिस्तान में व्यापारियों के लिए विशेषज्ञ मार्गदर्शक और सुरक्षा-प्रदात्ता भी थे।

अलमोराविद के सिजिलमासा और ऑघस्त पर अधिपत्य ने, जो विदेशी व्यापारियों के महत्वपूर्ण व्यापारिक संपर्क स्थल थे, ट्रांस-सहारन मार्ग पर नियंत्रण हासिल करने के लिए सनहाजा बद्दुओं और अलमोराविदों को प्रेरित किया। मग़रिब के साथ पश्चिमी सूडान के एकीकरण से क्षेत्र में तीव्र व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार में मदद मिली। पहले पश्चिमी सूडान केवल व्यापारियों के माध्यम से मग़रिब से जुड़ा हुआ था, अब उनके विशाल मग़रिब में एकीकरण से क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। अलमोराविदों द्वारा सिजिलमासा शहर और बाद में ऑघस्त (Awghust) पर नियंत्रण ने सहारा की दक्षिण की सोने की खानों और भूमध्यसागरीय बाजारों के बीच सोने के व्यापार को विनियमित किया। इसने अलमोराविद साम्राज्य के निर्माण के लिए आर्थिक शक्ति प्रदान की। अलमोराविदों ने मोरक्को (सिजिलमासा, अघमत, माराकेश, फ़ैज़) और स्पेन (सेविल, कॉर्डोवा, मलागा, अल्मेरिया) में शुद्ध सोने की *दीनारों* की ढलाई की जिनकी विदेशों में भी प्रखर माँग थी। बदले में वे ढलाई के लिए सूडान के सोने पर निर्भर थे। ट्रांस-सहारन व्यापार के माध्यम से सूडानी सोना अलमोहदों के क्षेत्रों में भी पहुंचता रहा और उनके तहत भी उनकी सोने की दीनारों ने उच्च मान्यता प्राप्त की और यूरोप में उनकी काफी मांग थी।

व्यापारी विभिन्न राष्ट्रीयताओं से थे और प्रत्येक राष्ट्रीयता की अपनी कारवांसराय थी जिसे *फनडुक्स* (*funduks*) के नाम से जाना जाता था। अलमोराविदों के काल में शहरी केंद्रों में काफी वृद्धि हुई थी। अलमोराविदों का राजधानी शहर माराकेश था, ऑघमत (Awghmat) के आसपास का क्षेत्र समृद्ध व्यावसायिक शहर के रूप में विकसित हुआ। अल-इदरीसी (1152-1157) इसकी समृद्धि की बहुत प्रशंसा करता हैः 'मुलाथथामुन [पर्दे में रहने वाले लोग, अलमोराविद] के काल में कोई भी उनसे अधिक धनवान और बेहतर स्थिति में नहीं था ... उनके दास और एजेंट सत्तर से लेकर सौ ऊंटों के कारवाओं में [सूडान] तक जाते हैं, सभी पूर्णतः (सामान में) लदे होते हैं' (लेवत्ज़िओन 2008: 336)। एक और महत्वपूर्ण व्यापारिक चौकी सिज़िलमासा थी। फ़ैज़ भी एक समृद्ध शहर था। इस अवधि में मध्ययुगीन मोरक्को के साम्राज्यों में यूरोप के यहूदी और ईसाई भी उच्च श्रेणी के राज्य अधिकारियों का हिस्सा थे। यहां तक कि ईसाई भाड़े के सैनिकों के रूप में भी कार्यरत थे। राजधानी माराकेश में एक ईसाई वार्ड और एक चर्च मौजूद थी। विशेष रूप से यहूदी बहुत सफल व्यापारी भी थे। मोरक्को में उनकी संख्या बढ़ती रही क्योंकि वे यूरोप में ईसाईयों द्वारा अधिक से अधिक सताए गए थे मोरानिद शासन के दौरान विशेष रूप से फ़ैज़ से यहूदी विरोधी नरसंहार (pogroms)[4] का विवरण मिलता है। इस समय मोरक्को से पलायन करने वाले अंदलूसिया के मुसलमान राज्य के विभिन्न कार्यालयों से स्थानीय मुसलमानों को बाहर निकालने और स्थानीय अभिजात वर्ग में शामिल होने में काफी सफल रहे थे। स्पेन में अलमोराविदों के विस्तार के परिणामस्वरूप दोनों के बीच उदार सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुए। मग़रिब और अंदलूसिया के बीच एक सहजीवी संबंध स्थापित करने में अलमोराविद सफल रहे। स्पेन के विद्वानों और कुलीनों को अलमोराविद नौकरशाही में शामिल किया गया। अंदलूसी वास्तुकारों द्वारा बड़े पैमाने पर भवन निर्माण की गतिविधियाँ सम्पादित की गई थीं।

पूरे मग़रिब और स्पेन पर नियंत्रण ने अलमोहदों को लाभप्रद स्थिति में पहुँचा दिया और उनकी समृद्धि में अत्यधिक योगदान दिया। त्रिपोली, ट्यूनिस और बूगी प्रमुख बंदरगाह थे। माराकेश और फ़ैज़ समृद्ध शहर थे। माराकेश और फ़ैज़ में कई कारवांसरायों का निर्माण किया गया था। हालांकि, ऑघमत ने माराकेश की तुलना में महत्व खो दिया जिसकी सूडान के साथ व्यापार में प्रमुख भागीदारी थी। 1153, 1161, 1168, 1186 और 1211 में संधियों की श्रृंखला ने चुंगियों और सीमाशुल्कों के भुगतान पर मग़रिब के प्रमुख बंदरगाहों में इतावली व्यापारियों का अबाध प्रवेश सुनिश्चित किया। जेनोआ, पीसा, वेनिस और मार्सेल्स के

[4] एक विशेष जातीय समूह का संगठित नरसंहार

व्यापारियों ने 'भूमध्यसागर पर त्रिपोली से सेउता के तटीय शहरों से लेकर मोरक्को के अटलांकिक तट पर स्थित मासा तक अपने कारखानों (*funduqs*) की स्थापना की' (लेवत्ज़िओन 2008: 347)। हालाँकि, तेरहवीं शताब्दी से इटालियन व्यापारियों के एकाधिकार को कैटलोनों (स्पैनिश व्यापारियों) से चुनौती मिली। सूस, सिजिलमासा और वार्गला ट्रांस-सहारन व्यापार के मुख्य प्रवेश्य बन्दरगाह (entrepots) थे। राजधानी माराकेश में बसे ईसाई व्यापारी उसी क्वार्टर में रहते थे जहाँ ईसाई भाड़े के सैनिक रहते थे, वे सैनिकों (militia) को शराब की आपूर्ति करते थे। यहूदी व्यापारियों ने इस व्यापार में बिचौलिए का काम किया। यूरोप से मग़रिब को निर्यात का सबसे पसंदीदा सामान यूरोपीय कपड़ा था तथा इसमें अनाज, मसाले, कीमती पत्थर, मोती, इत्र भी शामिल थे। बदले में यूरोप को प्राच्य उत्पाद (wares), खालें, चमड़े का सामान, फिटकिरी (dye) और मोम प्राप्त होती थी। मारिनिद के अधीन ऑघमत का पतन और लेमसेन व फ़ैज़ यूरोप और पश्चिमी सूडान के साथ व्यापार करने के लिए प्रमुख प्रवेश्य व्यापारिक बन्दरगाहों के रूप में उभरे। फ़ैज के कारीगरों ने यूरोप, पूर्वी देशों (Orient) और सूडान को निर्यात किए जाने वाले उत्कृष्ट कपड़े और चमड़े के उत्पादों का उत्पादन किया। अबू याकूब यूसुफ़ ने लेमसेन के निकट एक नये शहर अल-मंसूरा का निर्माण किया जो जल्द ही प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र के रूप में उभरा, जहां यहूदी, ईसाई और मुस्लिम व्यापारी एकत्रित होते थे। अबुल हसन की लेमसेन विजय ने पहली बार पूरे ट्रांस-सहारन व्यापार के बाजारों (मध्य और पश्चिमी मग़रिब) को एक ही सत्ता के तहत लाया।

अलमोराविदों के तहत विशाल क्षेत्रों के एकीकरण के बावजूद, व्यक्तिगत कबीलों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखी। संहाजाओं ने अपने कबीले के लोगों को यहाँ तक निर्देश दिया कि वे अलमोराविदों की *लिथुम* (पर्दा) प्रथा की नकल न करें।

गुलामी और नस्लवाद की प्रथा समाज में इस तथ्य के बावजूद मौजूद थी कि इस्लामी कानून ने कभी भी इस तरह की प्रथाओं को अनुमति नहीं दी। मोरक्को में अलमोहद काल में सूडानी दास बड़ी संख्या में मौजूद थे। बद्दुओं ने दक्षिण के 'अश्वेत' लोगों को 'अश्वेत', गैर-सैनिक, कृषि-संबंधी, गैर-आदिवासी आदि के रूप में हेयदृष्टि से देखा। वे कभी भी उनके साथ अंतर-विवाह नहीं करते थे और हमेशा उन्हें समाज में एक अधीनस्थ स्थिति में रखते थे, हालांकि इनमें से कुछ अपवाद भी थे। दास-श्रम का उपयोग घरेलू कार्यों और कृषि उत्पादन में किया जाता था। मोरक्को के मध्ययुगीन इतिहास में सर्वत्र महिला दास भी मौजूद थीं। प्रथागत कानून द्वारा बद्दुओं को भूमि और घर को **हरातिनों** (Haratins) को बेचने की मनाही थी। हरातिन 'अश्वेत' या अफ्रीकी दास थे, जिन्होंने किसी तरह दासता से मुक्ति प्राप्त कर ली थी। भूमि सामाजिक स्थिति का आधार होने के कारण हरातिनों को भू-अधिकार से बाहर रखा गया था। इतिहासकारों ने नस्लवाद की उत्पत्ति और उसके दासता के साथ समीकरण को मोरक्को के मध्ययुगीन काल में चिन्हित किया है जब कबीलों (बद्दू या अन्य) ने दक्षिण में रहने वाले 'अश्वेत' लोगों पर विजय प्राप्त करके अपनी (श्रेष्ठ) स्थिति और शुद्धता बनाए रखने की कोशिश की (हमेल 2013)। इस प्रकार समाज असामंजस्य और भेदभाव से मुक्त नहीं था।

धर्म

अलमोराविद 'शुद्ध' इस्लाम के समर्थक थे। इब्न यासीन ने *शरिया* (इस्लामिक कानून) को सख्ती से लागू किया। इब्न तशफिन ने भी उन सभी अवैध करों को समाप्त कर दिया जो *शरिया* द्वारा अनुमोदित नहीं थे। उन्होंने *फुकहा* (न्यायविदों) को संरक्षण प्रदान किया और उनसे कानूनी राय और सलाह ली जाती थी। उन्होंने सूफीवाद का घोर विरोध किया और अल-ग़ज़ाली की पुस्तकों को जला दिया। हालाँकि, 12वीं शताब्दी तक अलमोराविदों के प्रति प्रबल प्रतिक्रियाएँ हुईं, विशेष रूप से अल-ग़ज़ाली के बढ़ते सूफ़ी प्रभाव ने अलमोराविदों को

पतन की ओर अग्रसर किया और *फुकहों* की निंदा की गई। अलमोराविद दर्शन के विपरीत अलमोहद शासक इब्न तूमार्त (Ibn Tumart) ने *कुरान* और पैगंबर परंपरा की व्यक्तिगत व्याख्या (*इज्तिहाद; ijtihad*) के अधिकार पर जोर दिया। इसने अलमोराविदों के न्यायशास्त्र के 'एकाधिकार' के खिलाफ 'व्यक्तिगत जांच' को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अशराइट (Asharite)[5] और जाहिराइट (Zahirite)[6] दर्शन का अनुसरण किया। अलमोराविदों और अलमोहादों के विपरीत, मारिनिदों ने वैधीकरण के लिए किसी विशिष्ट दर्शनशास्त्र का अनुसरण नहीं किया। ये हफसिद (Hafsids) थे जिन्होंने 'अलमोहद सिद्धांतों के सच्चे संरक्षक' के रूप में खलीफा की उपाधि धारण की, और शुरू में मारिनिदों ने हफसिद खलीफा के प्रति अपनी नाममात्र की निष्ठा भी व्यक्त कर की थी। हालाँकि, तीस साल के भीतर एक बार जब मारिनिदों ने खुद को सुदृढ़ कर लिया तो *खुतबा* (शुक्रवार को पढ़ा जाने वाला उपदेश) पर खलीफा का नाम नहीं पढ़ा जाने लगा। हालांकि, अलमोहद अपने अस्तित्व के लिए सूफी विचारधारा के आभारी थे और सूफीवाद के प्रमुख संस्थापक अलमोहदों के समकालीन थे, लेकिन मारिनिदों के अधीन सूफी *सिलसिलों* (*तरीकों*), विशेष रूप से कादिरिया, ने अपना आकार ग्रहण किया। मोरक्को का यह सूफ़ीवाद 'संतों के पंथ' के सदृश्य हो गया। 'अलौकिक शक्ति और एक पवित्र मुक्ति *(बाराका/baraka),* जिसे शारीरिक संपर्क द्वारा पुरुष विशेष या उसकी कब्र द्वारा स्थानांतरित किया जा सकता है, में सूफी विश्वास ने मारिनिद काल के दौरान निश्चित रूप धारण किया। 'संतों ने पूर्व-इस्लामिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों को आत्मसात किया ... इस नए प्रकार के बरबर इस्लाम ने अपने अधिक लोकप्रिय पहलुओं के साथ, ग्रामीण इलाकों के इस्लामीकरण में योगदान दिया, क्योंकि धार्मिक संदेश पहाड़ों के दूरस्थ बद्दू कबीलों तक जा पहुंचा, जो पिछली शताब्दियों में शायद ही इस्लाम के अधिक औपचारिक पहलू के अनुयायी थे' (लेवत्ज़िओन 2008: 362)। ये सूफ़ी सिलसिले *(मुराबत/मैरबाउट) (murabat/marabouts)* शहरी *मखज़िन* (कुलीन) के विरूद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप थे और हर गाँव के जीवन का अभिन्न अंग थे, जो अक्सर मध्यस्थ के रूप में धार्मिक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते थे। मारिनिद सुल्तान स्वयं इस सूफीवाद के अनुयायी थे। लेमसेन में सुल्तान अबुल हसन ने सूफी संत सिदी अबू मद्यान के मज़ार का निर्माण कराया और अबू इनान ने सिदी अल-हलावी के सम्मान में एक ऐसे ही अन्य मज़ार का निर्माण किया। हालांकि, मारिनिदों के सूफी इस्लाम के प्रति झुकाव के बावजूद न्यायविदों (*फुक़हा; fuqahas*) का महत्व जारी रहा। मारिनिदों ने कई मदरसों की स्थापना की जहां मालिकी स्कूल ऑफ ज्यूरिसप्रुडेंस (न्यायशास्त्र का मालिकी स्कूल) पढ़ाया जाता था। ऐसा ही एक प्रसिद्ध मदरसा फ़ैज़ में स्थापित किया गया था। स्पेन की ईसाई पुनर्विजय (*Reconquista*) ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी की एक और प्रमुख विशेषता थी।

बोध प्रश्न-2

1) मग़रिब के मध्यकालीन साम्राज्यों की आर्थिक संरचना का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

[5] अशराइट स्कूल की स्थापना अबू अल-हसन अल-अशारी (मृ. 936) ने की थी। यह सुन्नी इस्लाम के रूढ़िवादी स्कूल में से एक है जिसने मुताजिलों के तर्क बुद्धि प्रयोग पर जोर का विरोध किया।

[6] इस्लामी न्यायशास्त्र के ज़ाहिराइट स्कूल की स्थापना नौवीं शताब्दी में दाऊद अल-ज़ाहिरी द्वारा की गई थी। वे *कुरान* और *हदीस* के *ज़ाहिरी* (बाहरी) अर्थ में विश्वास करते थे और उसके अनुमानित अर्थ (*क़ियास*) को निरस्त करते थे।

2) मग़रिब के महत्वपूर्ण व्यापारिक बन्दरगाहों (entrepots) और उनके महत्व के बारे में बताइये।

....

....

....

....

....

3) मध्यकाल में मग़रिब के प्रमुख शहरों की एक सूची तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

4) मध्यकालीन मग़रिब के 'शुद्ध' इस्लाम से सूफी इस्लाम में परिवर्तन को रेखांकित कीजिए।

....

....

....

....

....

10.4 मध्यकालीन इथियोपिया

इथियोपिया, अफ्रीका का एक और आधुनिक देश है जो अफ्रीका के पूर्वोत्तर कोने पर स्थित है। इसका मध्ययुगीन इतिहास मोरक्को के मध्यकालीन इतिहास की तरह इस्लाम के उदय से निकटता से संबंधित है। लेकिन साथ ही, मोरक्को के मध्ययुगीन इतिहास के विपरीत यह इथियोपिया के इस्लामीकरण या अरबीकरण का इतिहास नहीं है, बल्कि यह इन प्रक्रियाओं के प्रति प्रतिरोध का इतिहास था। इथियोपिया के लोगों ने विशिष्ट चर्च, मोनोफिसाइट कॉप्टिक चर्च (Monophysite Coptic Church), के संरक्षणत्व में संगठित होकर इस कार्य में सफलता पाई।

10.4.1 इथियोपियाई राजवंश

चौथी शताब्दी सी ई से इथियोपिया के पूर्व-मध्ययुगीन अक्सुमाइट (Aksumite) साम्राज्य ने कॉप्टिक या सीरियाई ईसाई धर्म को राज्य धर्म के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने पूरे ईसाई जगत की सबसे खूबसूरत और भव्य चर्चों में से कुछ का निर्माण किया था। अक्सुमाइट साम्राज्य के पतन का श्रेय आमतौर पर, हालांकि सार्वभौमिक रूप से नहीं, इस्लाम और अरब राज्यों के उदय और परिणामतः आठवीं शताब्दी सी ई के मध्य तक लाल सागर के व्यापार पर अक्सुमाइटों के नियंत्रण में आई गिरावट को जाता है। लाल सागर का व्यापार

इथियोपिया के अक्सुमाइट साम्राज्य के लिए राजस्व का एक बड़ा स्रोत था क्योंकि लाल सागर, भूमध्य और हिंद महासागर के बाजारों के पारगमन मार्ग पर स्थित था।

अक्सुमाइटों के बाद ज़ागवे (Zagwe) वंश ने इथियोपिया पर शासन किया। इस नए राजवंश के आगमन के साथ, ज़ागवे वंश के लोग उत्तरी इथियोपिया की राजधानी अक्सुम (Axum) से दक्षिण में लास्ता (Lasta) प्रांत की ओर चले गएः रोहा (वर्तमान लालिबेला) सर्वाधिक उल्लेखित राजधानी है। ज़ागवे शासकों ने चर्च निर्माण की अक्सुमाइट परंपरा को जारी रखा और दक्षिणी इथियोपिया की जनजातियों के बीच कॉप्टिक ईसाई धर्म का प्रसार किया। यह कहा जाता है कि सम्राट लालिबेला (1185-1225) ने खुद को मूसा (बाइबिल में वर्णित प्रसिद्ध पैगम्बर) का 'प्रामाणिक' वंशज साबित करने के लिए, विशेष रूप से अपनी राजधानी में 11 शैलकर्तित (rock-hewn) चर्चों का निर्माण किया। 1270 में, शेवा (Shewa) के विद्रोह के बाद, सोलोमोनिक राजवंश, एक ऐसा राजवंश जो बाइबिल में वर्णित राजा सोलोमन और रानी शीबा के वंशज होने का दावा करते थे, सत्ता में आए। येकुनोअमलक (YekunoAmlak; 1270-1285) इसके प्रथम राजा थे। इस राजवंश का शासन सम्राट अमदासियोन (AmdaSiyon) के शासन के दौरान अपने शिखर पर पहुंच गया, जिसने 1314-1344 सी ई के बीच शासन किया। उन्होंने न केवल दृढ़ता के साथ अपने क्षेत्र के विभिन्न कोनों से हो रहे विद्रोहों का सामना किया, बल्कि मुसलमानों और मिस्त्रवासियों के खिलाफ एक सैन्य अभियान भी चलाया, जिससे उन्हें इथियोपिया में चर्च के लिए एक बिशप (धर्माध्यक्ष; bishop) भेजने के लिए मजबूर होना पड़ा। शायद इस समय के दौरान *केब्रानागास्त* (*KebraNagast; राजाओं की महिमा*) की रचना की गई थी। *केब्रानागास्त* एक अनूठा ग्रंथ है। यह 'चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में छह तिगरायन (Tigrayan) लिपिकों द्वारा संकलित किंवदंतियों का एक समूह है। मुख्य संकलक, यिशाक (Yishak) ने दावा किया कि वह और उसके सहयोगियों द्वारा रचित यह ग्रंथ एक कॉप्टिक पांडुलिपि के अरबी संस्करण का गे'एज (Ge'ez) में अनुवाद मात्र था। वास्तव में, उनकी टीम ने स्थानीय और क्षेत्रीय मौखिक परंपराओं और शैलियों और ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट का सार, विभिन्न अप्रमाणिक ग्रंथों, यहूदी और इस्लामी टिप्पणियों, और चर्च के धर्मशास्त्रों के लेखों से व्युत्पन्न सारों को मिश्रित किया है। *केब्रानागास्त* का प्राथमिक लक्ष्य सम्राट येकुनोअमलक (YekunoAmlak) के प्रभुत्व को वैधता प्रदान कराना और उनका संबंध 'सोलोमन वंश परंपरा' के साथ दृढ़ता के साथ 'स्थापित' करना था (मार्कस 2002)।

दावित-I (Dawit-I), जिसने 1380 से 1412 तक शासन किया, के शासन के दौरान इथियोपियाई चर्च खुद एक आंतरिक संघर्ष में डूब गया। यह वैचारिक आधार पर पादरियों के दो गुटों के बीच की लड़ाई थी। इससे एक पक्ष द्वारा, जिसकी राज्य पर मजबूत पकड़ थी, दूसरे पर अत्याचार किया गया। अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद दावित-I (Dawit-I) चर्च के भीतर की लड़ाई को समाप्त नहीं कर सका। लेकिन उसके उत्तराधिकारी सम्राट, ज़ारा याकूब (1434 और 1468 के बीच शासन किया), जो खुद एक मठ में प्रशिक्षित थे, इथियोपिया में चर्च के संघर्ष करने वाले गुटों के बीच एक सामंजस्य ला सकने में सफल हुए।

यही वह समय था जब इथियोपियाई ईसाई साम्राज्य के पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित मुस्लिम, यहाँ के लोगों को इस्लाम में परिवर्तित कर रहे थे और अपनी छोटी क्षेत्रीय रियासतों को संगठित कर रहे थे। इफ़ात (Ifat) एक ऐसी ही रियासत थी जो हरेर (Harer), अफार (Afar) और सोमाली (Somali) इनमें सबसे अधिक सर्वप्रमुख थी। पूर्व की ओर उनका अस्तित्व, जो लाल सागर के व्यापार को नियंत्रित कर रहा था, तनाव और संघर्ष का एक नियमित स्रोत था। ईसाई और मुस्लिम शासकों के बीच लगातार आक्रमण और जवाबी हमले होते रहते थे। लेकिन इथियोपियाई ईसाई साम्राज्य ने उन सभी का सामना किया और छोटी मुस्लिम रियासतों या शेखों के राज्यों (shaikhdoms) पर हावी हो गए, जो भाषा, संस्कृति और परंपरा के आधार पर विभाजित थे। 15वीं शताब्दी के अंत तक इफ़ात और हरेर के मुसलमान,

अदाल (Adal) के साथ शामिल हो गए और अदाल को एक मजबूत इस्लामी शक्ति बना दिया। 16वीं शताब्दी के मध्य तक, अदाल के एक सैन्य नेता, अहमद इब्न इब्राहिम अल ग़ाजी (या ग्रान, द लेफ्ट हैंडर) ने इथियोपिया के ईसाई सम्राट को एक बड़ी सैन्य चुनौती दी। 1529 में उसने एक सैन्य अभियान भेजा। इथियोपिया का शासक लेबनादेंगेल (LebnaDengel), जिन्होंने 1508 और 1540 के बीच शासन किया, अपने साम्राज्य की रक्षा नहीं कर सका और उन्होंने पुर्तगाल के ईसाई शासक की मदद मांगी। वह मदद लेबना (Lebna) के उत्तराधिकारी गालाव्देवोस (Galawdewos: शासनकाल 1540-49) के समय पहुंची। 1543 में गालाव्देवोस ने न केवल ग्रान को पराजित किया, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी और ईसाई साम्राज्य के वर्चस्व को पुनर्स्थापित किया।

यहां दो राज्यों के बीच के संघर्ष, दो धर्मों के बीच या दो प्रमुख धार्मिक समुदायों के बीच अधिक दिखाई देते हैं। बहरहाल, दोनों, इथियोपिया के ईसाई साम्राज्य और अरब-इस्लामिक राज्य मिश्रित समाज थे, न कि एकरूपी धार्मिक समुदाय। इथियोपिया में कई भाषाई समुदाय थे जैसे कि सेमाइटिक (Semitic; गी'ज़, अमहारिक, आगाव आदि), कुशाइटिक (Cushitic; कुश और नीलोटिक) और अन्य कबीलाई भाषाई समुदाय। इसी प्रकार यहां विभिन्न धर्म भी थे। वहां कबीलाई जीववादी (animistic) धार्मिक प्रथाओं के साथ-साथ ईसाई धर्म का अस्तित्व भी था जो राज्य धर्म था। वहाँ न केवल कई धर्मों का बल्कि समन्वयता का अस्तित्व भी था, अर्थात उनके बीच अंतर-संबंध, प्रभाव और अस्पष्ट सीमाएं मौजूद थीं (ब्रॉकेम्पर 1992)। अतः यह कहना गलत होगा कि दो शक्तियों के बीच संघर्ष दो धर्मों का संघर्ष था। इसके अतिरिक्त, इस संघर्ष के पीछे धर्म के अलावा अन्य कारण थे, जैसे कि सोने का व्यापार, हाथी दांत, दास या यहां तक कि उपजाऊ भूमि का नियंत्रण, इत्यादि।

10.4.2 इथियोपियाई कॉप्टिक ईसाई धर्म

मध्ययुगीन इथियोपिया में कई धर्म होने के बावजूद, इथियोपिया के मध्ययुगीन इतिहास के अध्ययन में इथियोपियाई कॉप्टिक ईसाई धर्म की विवेचना की विशिष्ट आवश्यकता है। यह न केवल राज्य चर्च, बल्कि समाज का संगठन और इथियोपिया की मध्ययुगीन अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भागीदार भी था। इथियोपिया में हजारों चर्च थे। सैकड़ों मठ थे और हजारों पादरी और चर्च के अधिकारी थे। अक्सुमाइट राजा कालेब (Kaleb; मृ. 540), जिन्होंने छठी शताब्दी सी ई के मध्य यहूदी शासक द्वारा सताए गए ईसाईयों की मदद के लिए लाल सागर को पार किया था, उन्होंने ईसाई पादरी बनने के लिए अपना सिंहासन तक छोड़ दिया था। चर्च द्वारा समुदाय के लिए लगातार समारोह और प्रीतिभोज आयोजित किए जाते थे।

हम जानते हैं कि चौथी शताब्दी से अक्सुमाइट राजाओं ने ईसाई धर्म को अपनाया और ईसाई धर्म को राज्य धर्म बना दिया। वे सीरियाई और मिस्रवासियों के सदृश्य मोनोफिसाइट कॉप्टिक चर्च से संबंधित थे। ईसाई धर्म की राज्य के साथ यह समबद्धता इथियोपिया में मध्यकाल के दौरान थोड़े बहुत अंतराल के साथ जारी रही। इथियोपियाई ईसाई धर्म, रोमन कैथोलिक धर्म से अलग था। इसमें मठाधिकारी (monastic) और धर्मनिरपेक्ष पादरी थे। मठाधिकारी पादरियों ने गी'ज़ (Ge'ez; यूरोपियन लैटिन के समकक्ष) को सीखा और वे आमतौर पर सन्यासी (ascetic clergy) थे। धर्मनिरपेक्ष पादरी विवाह करते थे और आम ईसाईयों के बीच रहते थे। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है जिसने इस चर्च/ईसाई धर्म को अन्य चर्चों से अलग बनाया, वह उनका मोनोफिसाइट (*तावाहदो; tawahdo*) सिद्धांत था, जो पवित्र बाइबिल की ओल्ड टेस्टामेंट के एकेश्वरवाद से संबंधित था, और इसमें सेमाइटिक (Semitic) धार्मिक प्रथाओं के कुछ तत्व समाविष्ट थे।

अक्सुमाइट और ज़ागवे (Zagwe) राजाओं की शैलकर्तित (Rock-hewn) चर्च, विशेष रूप से राजा लालिबेला (शासनकाल 1181-1221) द्वारा निर्मित, न केवल भव्यता और वास्तुकला के

लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि यह समय और लोगों के विश्वास का भी प्रतीक हैं। शैलकर्तित चर्चों पर चर्चा उनके संबंध में कुछ प्रकाश डालने में सहायक होगी। शैलकर्तित चर्चों को पहाड़ों के किनारे एकल चट्टानों से उकेरा गया है। अक्सुमाइटों के समय से ही इथियोपिया में ऐसे चर्च बनाए जा रहे थे। लेकिन ज़ागवे (Zagwe) काल के दौरान, राजा लालिबेला ने कुछ बेहतरीन शैलकर्तित चर्च बनाए। वह संत राजा के रूप में भी जाने जाते थे और वे येरूशलेम गये थे। यह माना जाता है कि लालिबेला ने अपने ग्यारह शैलकर्तित चर्चों को पवित्र भूमि (येरूशलेम) की प्रतिकृति के रूप में बनाया था। विशाल चट्टान के एक ही खंड से निर्मित नक्काशीदार ये चर्च बहुत खूबसूरत थे। 'छतें सपाट नुकीली या नक्काशीदार, जो सलीब (cruciform) या सरल रूप में, आमतौर पर एक आकर्षक कंगनी (cornice) के साथ थीं। बाद में, कारीगरों ने आंतरिक सजावट की और चट्टान के अन्दर खुदाई करके नक्काशी और वास्तुकला के असाधारण रूपों को डिजाइन बनाकर खुद को अग्रणी के रूप में स्थापित किया। इस प्रकार की सुन्दरता सामान्य निर्माण प्रक्रियाओं और तकनीकों द्वारा कभी प्राप्त नहीं की जा सकती थी। प्रभावशाली स्तम्भों की पंक्तियों तथा शिखरों के साथ कुछ चर्चों में तीन केन्द्र (naves) थे, अन्य में पांच। बास-रिलीफ (bas-relief) और हॉट-रिलीफ (haut-relief; प्लास्टर के डिज़ाइन) में मेहराबें, खिड़कियाँ, आले, अति विशाल क्रॉस, स्वस्तिक, सजावटी रॉक मोल्डिंग्स और ज्यामितीय आकृतियों के फ्रीज़ (friezes), अर्ध-गुम्बद (apses) और गुम्बद और इसी तरह की दूसरी आकृतियों में इन सभी और अन्य विशेषताओं ने वास्तव में अफ्रीकी महाद्वीप के मर्मज्ञ ईसाई वास्तुकला के लालिबेला चर्चों के चिरस्थाई स्मारकों को चित्रित किया गया है' (टामेन 1998 : 87ñ 104)। हालांकि यहाँ यह भी सन्दर्भ हैं, यद्यपि कुछ अस्पष्ट, कि इस काम के लिए भाड़े के कुशल कारीगरों को भारत सहित दूर-दराज़ के क्षेत्रों से लाया गया था।

चित्र 10.3: शैलकर्तित चर्च ऑफ सेंट जॉर्ज, लालिबेला, इथियोपिया
साभारः बर्नार्ड गेगनॉन, नवंबर, 2012
स्रोत : https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/0/0b/Bete_Giyorgis_03.jpg

वहां हजारों चर्च निर्मित किये गये थे। चर्चों को तीन प्रमुख प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे आम चर्च *वेंको* (*venko*) या *गेटर* (*geter*) चर्च थे। दूसरे प्रकार के चर्च डेब्र (*debr*) चर्च थे और वे बड़े पैमाने पर शहरी केंद्रों और शाही शहरों में थे जिन्हें आमतौर पर शाही संरक्षण प्राप्त था। इन दो प्रकार के चर्चों में धर्मनिरपेक्ष पादरी (*the debtaras*), जो विवाहित पुरूष थे, पुजारियों के रूप में कार्य करते थे। वे निश्चित रूप से प्रशिक्षित थे और उन्हें पादरी के रूप में विधिवत दीक्षा दी गई थी और एक ही समय में वे नर्तक, गायक, ज्योतिषी, ताबीज और जुड़ी-बूंटी संबंधी औषधी बनाने वाले और निरक्षरों के लिए लेखन करने वाले थे। तीसरे प्रकार के चर्च गेदम (*gedam*) थे, जो या तो मठ से जुड़े थे या स्वतंत्र थे, लेकिन धर्मगुरू पुजारी मठवासी पादरी (भिक्षु) थे जो ब्रह्मचारी फादर थे। भिक्षु पादरी एक पवित्र और कठिन तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे। और इन सभी को मठ-व्यवस्था में प्रशिक्षित किया जाता था और वे शास्त्रों और अनुष्ठानों की भाषा गी'ज़ में दक्ष होते थे। कुछ पादरी विधुर भी थे। वहां ननों की संख्या बहुत कम थी, जो चर्चों में निम्न स्तर के कार्य करती थीं। इस चर्च ने न केवल देश को एक साथ बांधे रखा, बल्कि यह इथियोपिया का गौरव भी था; अफ्रीका का वह एकमात्र देश जिसे कभी किसी यूरोपीय शक्ति द्वारा उपनिवेश नहीं बनाया जा सका था।

10.4.3 इथियोपिया : भूमि और अर्थव्यवस्था

मध्ययुगीन इथियोपिया में अर्थव्यवस्था और शक्ति काफी हद तक भूमि पर आधारित थी। यह उस विचार के विपरीत था जिसमें माना जाता था कि मध्यकाल में राज्य, व्यापार से या अंतरराष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त राजस्व पर चलता था, इतिहासकार अब इस बिंदु पर लगभग एकमत हो रहे हैं कि भूमि द्वारा बड़े पैमाने पर अधिशेष उत्पन्न होता था। इथियोपिया में भूमि का स्वामित्व व्यक्तिगत/निजी होने के साथ-साथ सामूहिक भी था।

भू-अधिकार

अधिकांश इथियोपिया में *रिस्त* (*rist*) प्राथमिक भू-अधिकार था, हालांकि क्षेत्रीय विविधताएं भी थीं। यह राज्य और सरदारों के प्रति दायित्वों के साथ एक वंशानुगत भूमि उपयोग अधिकार था। *गब्बर* (*gabbars*) के रूप में जाने वाले किसान *रिस्त* कृषि भू-अधिकार धारक होते थे। प्राथमिक *रिस्त*-धारक या *गब्बर* अपने बच्चों को बेटों या बेटियों के बीच भेदभाव किए बिना इस अधिकार को हस्तांतरित कर सकता था। असाधारण मामलों में, जैसा कि राजद्रोह के मामले में, एक *गब्बर* को उसके अधिकार से वंचित किया जा सकता था। इस *रिस्त* अधिकार को परिवार या कबीले के बाहर किसी को हस्तांतरित/बेचा नहीं जा सकता था और इसलिए, वहाँ पर बेदखली का डर व्यावहारिक रूप से अनुपस्थित था। कुछ अल्पसंख्यक मुसलमान या मोची और चर्मकार थे, जिनके पास कोई *रिस्त* अधिकार नहीं था।

दूसरा प्रमुख भूमि अधिकार चर्चों/मठों और अन्य व्यक्तियों को सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से राज्य द्वारा प्रदत्त किया जाता था जिसे *गुल्त* (*gult*) के रूप में जाना जाता था। यह विशिष्ट सेवाओं के लिए वेतन के बदले में दिया गया सेवा अधिकार था। इस अनुदान के लाभार्थी को *गुलताना* (*gultana*) के रूप में जाना जाता था। एक *गुलताना* भूमि की स्वयं खेती कर सकता था या खेती करने के लिए उसे *गब्बर* को *रिस्त* के रूप में तकसीम कर सकता था और उपज के हिस्से में सहभागी हो सकता था। एक *गुल्त* (*gult*) अधिकार हमेशा भूमि पर नहीं था। यह एक बाजार, एक जल-निकाय या चरागाहों पर हो सकता था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि *गुल्त* (*gult*) अधिकारों ने पट्टेदारी या भूमिहीन श्रमिकों को पैदा किया, खासकर दक्षिण की ओर, वह क्षेत्र जो 13वीं शताब्दी में विजित किया गया था। यह माना जाता था कि *गब्बरों* को समय-समय पर श्रम सेवाओं, *गुल्त* (*gult*) धारकों को उपज का एक भाग या भेंट के अलावा प्रथागत उपहार भी प्रदान करना होता था। वास्तव में, *गुल्त*

धारक अकेला *गब्बर* का उच्च अधिकारी नहीं था। बल्कि *गब्बर* को *गुल्त* (*gult*) धारक के लगभग सभी अधीनस्थ अधिकारियों को भी संतुष्ट करना पड़ता था जैसे कि राजस्व कलेक्टर, न्यायाधीश, चर्च के पादरी आदि को। कहीं-कहीं, यहां तक कि *गब्बर* के पूरे परिवार को भी *गुल्त* (*gult*) धारक के लिए काम करना पड़ता था।

मध्ययुगीन इथियोपिया सामंती था या नहीं, यह प्रश्न भी इतिहासकारों द्वारा संबोधित किया गया है और यह आम सहमति है कि इथियोपिया में किसान मध्ययुगीन यूरोप की तरह कृषिदास (serf) नहीं थे। उन्होंने अपेक्षाकृत अधिक गतिशीलता से स्वतंत्रता का आनंद उठाया। जो कुछ भी हो, *गब्बर* राज्य और समाज को चलाने के लिए आवश्यक अधिशेष का उत्पादन कर रहे थे। सम्राट, उनके दल और सशस्त्र सैनिक सैन्य अभियान पर देश भर में घूमते थे। इसके अलावा वे कानूनों को लागू करने और प्रशासन के संचालन की निगरानी के लिए भी पूरे क्षेत्र में विचरण करते थे (यही कारण था कि इतिहासकारों ने इथियोपिया में गतिशील राजधानियों (roving capitals) की बात की है)। इन सभी गतिविधियां के दौरान, *गब्बर* प्राथमिक कार्यकर्ता, उत्पादक और शिविर-अनुयायी था।

इथियोपिया में बड़ी संख्या में चारागाही समुदाय थे। अब भी इथियोपिया के उत्तरपूर्वी, पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों की तराई में स्वदेशी चारागाही समुदाय निवास करते हैं। उनकी आजीविका पालतू पशुओं के पालन-पोषण पर आधारित थी जिसके लिए उन्होंने अपने सीमित प्राकृतिक वातावरण में मौसमी रूप से उपलब्ध चारागाहों और जल निकायों का अधिकतम उपयोग किया। उनमें से कुछ ने पशु-पालन के साथ थोड़ी बहुत कृषि को भी मिश्रित किया है। उनके पास भूमि का सामुदायिक स्वामित्व है और साथ ही उन्हें चारागाह और कृषि भूमि के प्रयोग का भी अधिकार है। इथियोपिया में बढ़ते आधुनिकीकरण के कारण इन समुदायों और उनकी उत्पादक प्रथाओं पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

समाज में एक सीमित मात्रा में शिल्प उत्पादन की उपस्थिति थी। शिल्पकार-पुरूष और शिल्पकार-महिलाएं किसान समाज का हिस्सा थे। लंबी दूरी और विदेशी व्यापार (ज्यादातर हाथी दांत, सोना और गुलाम व्यापार की वस्तुएं थीं) भी अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा था, लेकिन उनकी प्रकृति में उतार-चढ़ाव थे क्योंकि व्यापार मार्ग हमेशा इथियोपियाई राज्य के नियंत्रण में नहीं थे। इसलिए, यह माना जाता है कि इथियोपियाई विद्वानजन और कुलीन वर्ग कभी भी अपनी समृद्धि के लिए पूर्णतः व्यापार पर निर्भर नहीं थे, बल्कि निश्चित रूप से किसान अधिशेष के जरिये एक अपेक्षाकृत आरामदायक जीवन जीते थे।

बोध प्रश्न-3

1) मध्यकाल के प्रमुख इथियोपियाई राजवंशों की सूची बनाइये।

....

....

....

....

....

2) इथियोपियाई कॉप्टिक चर्च पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

3) मध्ययुगीन इथियोपिया में विभिन्न प्रकार के भू-अधिकारों की उपस्थिति का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

10.5 मध्यकालीन ज़िम्बाब्वे

मध्ययुगीन ज़िम्बाब्वे की पहचान ग्रेट ज़िम्बाब्वे के अवशेष थे, जो एक ऐसा शहर प्रतीत होता है जो लगभग 11वीं शताब्दी से लगभग 1600 सी ई तक लगातार बसावट में था। हालांकि, यह लगभग 1300-1450 सी ई के दौरान अपने विकास की ऊंचाई के चरम बिंदु पर पहुंचा।

10.5.1 ग्रेट ज़िम्बाब्वे का पुरातात्विक स्थल

ज़िम्बाब्वे का मध्ययुगीन इतिहास ग्रेट ज़िम्बाब्वे पर केन्द्रित है, जो ज़िम्बाब्वे में आधुनिक शहर मस्विंगो (Masvingo) से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में पत्थरों द्वारा निर्मित एक विशाल परिसर था। अपने चरम पर पत्थर से निर्मित यह परिसर लगभग 70 हेक्टेयर से अधिक भू-क्षेत्र में फैला हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि ग्रेट ज़िम्बाब्वे के इस पाषाण शहर के परिसर का निर्माण 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ और 1450 के दशक तक जारी रहा। इस शहर का पतन लगभग 1600 सी ई में प्रतीत होता है। और अब हमारे पास केवल इस ग्रेट ज़िम्बाब्वे के पुरातात्विक अवशेष मात्र बचे हैं। यह किलेबंद शहरी केंद्र दक्षिणी अफ्रीका में ज़ाम्बेज़ी (Zambezi) और लिम्पोपो (Limpopo) नदियों के मध्य स्थित था।

1550 के दशक से यूरोपीय लोगों को ग्रेट ज़िम्बाब्वे के खंडहरों की जानकारी थी और 1609 में, पुर्तगाली इतिहासकार जोआओ डे सांतोस (Joao de Santos) ने इस मिथक की रचना की कि यह भूमि शीबा की रानी (पवित्र बाईबिल में उल्लिखित) की थी जो राजा सोलोमन को देखने के लिए गई थी। यह मिथक कई सालों प्रचलन में रहा। और यहां तक कि 20वीं शताब्दी तक औपनिवेशिक ताकतों और स्थानीय सरकारों ने इस बात से इनकार किया कि यह सूखे पत्थरों से निर्मित परिसर स्वदेशी मूल और डिजाइन का था। पुर्तगाली व्यापारियों ने उल्लेख किया कि इसे स्वदेशी समुदायों द्वारा सिम्बोए (Simboae; कोर्ट हाउस) कहा जाता था। जर्मेनिक भूविज्ञानी कार्ल मॉख ने 1871 में मिथक को यह कहते हुए सही ठहराया कि ग्रेट ज़िम्बाब्वे ओफिर (Ophir) था, जो सोलोमन और शीबा की बाइबिल में वर्णित सीट थी। अनेकों खजाना-खोजी सोने और कीमती धन की तलाश में वहां पहुंचे और उन्होंने साइट के विभिन्न हिस्सों को खोदना शुरू कर दिया और इस प्रकार ग्रेट ज़िम्बाब्वे के हमारे ज्ञान को सीमित करने के साथ-साथ इस स्थल को किसी भी वैज्ञानिक पुरातत्व अध्ययन के लिए क्षतिग्रस्त कर दिया। जैसे-जैसे उपनिवेशवाद का प्रभाव अफ्रीका में बढ़ा, उनके मिथक-निर्माण में भी वृद्धि हुई। दक्षिण अफ्रीकी कंपनी सेसिल रोड्स द्वारा प्रायोजित, ब्रेंट (Brent) और उसके बाद हॉल ने इस मिथक का निर्माण किया तथा उसे फैलाया कि ग्रेट ज़िम्बाब्वे

की पत्थर की वास्तुकला में या तो फिनिशियनों या मिस्त्रवासियों का योगदान है जिन्होंने किसी समय अफ्रीका के इतिहास में ज़िम्बाब्वे को अपना उपनिवेश बनाया था और यह भ्रम फैलाया कि यह कभी भी 'असभ्य' अफ्रीकी लोगों द्वारा नहीं बनाया जा सकता। जिसने भी विवाद किया और कहा कि यह स्वदेशी लोगों और उनकी सभ्यता का निर्माण है, उसका विरोध किया गया। लेकिन 1905 में, पुरातत्वविद् डेविड रैन्डल मैकआइवर (David Randall MacIver) और 1929 में गर्ट्रूड केंटन-थॉमसन (Gertrude Caton-Thomson) ने स्पष्ट रूप से कहा कि ग्रेट ज़िम्बाब्वे का निर्माण और उपयोग अफ्रीकी लोगों द्वारा ही किया गया था। करंगों (Karangas) ने पत्थर की इमारतें बनवाई और शोना (Shonas), जो वर्तमान में ज़िम्बाब्वे का बहुसंख्यक समुदाय है, करंगों के वंशज माने जाते हैं।

चित्र 10.4: ग्रेट ज़िम्बाब्वे का हवाई-दृश्य
साभार: जेनिस बेल, जुलाई, 2015
स्रोत : https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/dd/Great-zim-aerial-looking-West.JPG

आज इस स्थल पर शायद ही कोई पत्थर के घर मौजूद हैं। जो बचा है वह है पठार के उस पार लगभग 11 मीटर ऊंची पत्थर की घुमावदार दीवारें। पुरातत्वविदों ने ग्रेट ज़िम्बाब्वे शहर की साइट को तीन सुविधाजनक भागों में विभाजित किया है: 1) हिल (Hill) (इसके पश्चिमी घेरे और पूर्वी घेरे के साथ), 2) ग्रेट एनक्लोज़र (Great Enclosure) और 3) द वैली (Valley)। दो अन्य बाड़ों (Enclosure) और नीचे घाटी को देखते हुए शीर्ष पर पहाड़ी साईट थी। प्रारंभ में यह सुझाव दिया गया था कि शीर्ष या हिल साइट प्रशासन और शाही कार्यालय का स्थान था। लेकिन यह विवादित है और साइट के कई अन्य संभावित उपयोगों को जैसे आध्यात्मिक नेताओं के निवास, पूर्व-वैवाहिक (प्रशिक्षण) निवास आदि के रूप में सुझाया गया है। किसी भी छत का कोई सबूत नहीं मिलता, लेकिन बाड़े और मार्ग के अवशेष हैं। एनक्लोज़रों (Enclosure) के भीतर शायद फूस की छतों वाले मिट्टी के घर हुआ करते थे। मिट्टी के मकानों को ढाका/दागा (Dhaka/Daga) के नाम से जानी जाने वाली बजरी के मिश्रण के साथ स्थानीय मिट्टी से बनाया गया था। पश्चिमी परिक्षेत्र की दीवारों में अंतरालों पर बुर्ज हैं। शीर्ष छोर पर नक्काशी किए गए पक्षियों के साथ पत्थर के खंभे हैं जो व्यक्तिगत शाही चित्रों का संकेत दे सकते हैं। पश्चिमी परिक्षेत्र में राजा और उसके परिवार के सदस्यों या अन्य प्रमुखों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए घर हो सकते हैं। पूर्वी परिक्षेत्र अनुष्ठानों के लिए एक

धार्मिक या पवित्र स्थान हो सकता है क्योंकि यहां पक्षियों के नक्काशीदार चित्र पाए गए थे। इसके अलावा यहाँ कांच के मनकों, ढाका/दागा की परतों वाले फर्श, टूटे हुए मिट्टी के बर्तनों के रूप में अन्य कई पुरातत्व कलाकृतियाँ मिली हैं।

विशाल परिक्षेत्र (Great Enclosure) ग्रेट ज़िम्बाब्वे का सबसे बड़ा पुरातात्विक अवशेष है। यह लगभग 250 मीटर लंबी सूखी पत्थर की दीवार के साथ 10-12 मीटर ऊंचा परिक्षेत्र है। दीवारें नीचे की ओर 5-6 मीटर तक मोटी हो सकती हैं। परिक्षेत्र के प्रसिद्ध शंकु (conical) आकार के टॉवर की ओर जाने वाली दीवारों के बीच संकीर्ण मार्ग थे। अलग-अलग शोधकर्ताओं द्वारा परिक्षेत्र की पहचान एक मंदिर, राजा की कई पत्नियों के लिए एक आवास, राज्य के कुलीनों के लिए एक निजी आवासीय क्षेत्र और अंत में अविवाहित युवकों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी की गई है। पुरातात्विक स्रोतों को छोड़कर लिखित प्रमाणों और अन्य स्रोतों की अनुपस्थिति में, इस तरह के विशाल भवन या परिक्षेत्र के उद्देश्य के बारे में अभी भी कोई स्पष्टता नहीं है।

परिक्षेत्र से परे घाटी थी जहां प्राथमिक उत्पादक जैसे पशु-पालक और किसान फूस की झोपड़ियों में रहते थे। उन्होंने वहां की भूमि पर खेती भी की और अपने शहर के व्यापार के लिए आवश्यक श्रम भी प्रदान किया। घाटी में पत्थर के परिक्षेत्र और इमारतों के कुछ छोटे अवशेष भी मिलते हैं।

ये सूखी पत्थर की चिनाई है क्योंकि इस चिनाई में किसी चूना-गारे (mortar) का उपयोग नहीं किया गया था, ऐसा माना जाता है कि इसे कम से कम तीन चरणों में बनाया गया था। निर्माण के शुरुआती चरण में, पत्थर चिकनी धार के नहीं थे। मध्य चरण के पत्थरों की छंटाई की गई थी और दीवारों पर अलंकारिक डिजाइन थे। और तीसरे चरण में चट्टानों का केवल अव्यवस्थित संकलन था और निर्माण में कोई कुशलता नहीं थी।

पतन

सभ्यता का पतन कब, क्यों और कैसे हुआ और यह कि ग्रेट ज़िम्बाब्वे को क्यों छोड़ दिया गया, यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है। पुनः इतिहासकार, वैज्ञानिक और पुरातत्वविद् इसके संभावित कारण के बारे में अनुमान लगाते रहे हैं। उनमें से कुछ की राय है कि 1400 तक ग्रेट ज़िम्बाब्वे का पतन हो गया और कुछ अन्य 1500 तक इसका पतन बताते हैं। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि वहां उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष थे इसलिए साम्राज्य का पतन हुआ। कुछ का मानना है कि लघु हिम युग (Little Ice Age) लगभग 1300 में शुरू हुई। इससे मवेशियों की बीमारी और अन्य संबंधित समस्याएं पैदा हो गई, इसलिए शोनाओं ने ग्रेट ज़िम्बाब्वे छोड़ दिया। एक विश्वास के अनुसार ग्रेट ज़िम्बाब्वे के आसपास के पर्यावरण में आई क्रमिक गिरावट ने भी पतन में योगदान दिया। सोने के व्यापार के पतन का भी योगदान हो सकता है क्योंकि 1500 तक किलवा (Kilwa) की सल्तनत भी ध्वंस्त हो गई थी, जिसका व्यापार-नेटवर्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। संभव हो सकता है कि इन सभी कारकों ने ग्रेट ज़िम्बाब्वे के पतन में योगदान दिया। जो भी कारक रहे हों, इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि 15वीं शताब्दी सी ई में खामी राज्य (पश्चिम में) और मुतापा सभ्यता (उत्तर की ओर) ग्रेट ज़िम्बाब्वे के प्रवासियों के आने के साथ अस्तित्व में आईं।

10.5.2 सामाजिक-आर्थिक जीवन

ग्रेट ज़िम्बाब्वे के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालने वाली पुरातात्विक कलाकृतियाँ कई हैं, जैसे टूटे हुए मिट्टी के बर्तन, जानवरों की हड्डियों के टुकड़े और उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले औजारों के टुकड़े। मवेशियों की हड्डियां केवल परिक्षेत्र (enclosure) में पाई गई है, जिसका अर्थ है कि परिक्षेत्र में रहने वाले अभिजात वर्ग के लोग मांस खाने का सामर्थ्य

रखते थे, जबकि यह समाज के गरीब वर्गों के लिए सुलभ नहीं था। या फिर संभवतः मवेशी-स्वामित्व उच्च सामाजिक स्थिति का प्रतीक था जिससे गरीब लोगों को वंचित रखा गया था। पुरातात्विक साक्ष्यों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शोना लोग लोहा, तांबा, सोना आदि का प्रयोग करते थे और निश्चित रूप से इसके खनन् और धातु विज्ञान के बारे में जानते थे। शोनाओं ने लौहे के औजारों और घंटों का इस्तेमाल किया। तांबे और सोने के तार के आभूषणों के अवशेष भी मिले हैं। लेकिन करंगा (Karangas) और उनके वंशज शोना, बड़े पैमाने पर पशुपालक थे। इससे उन्हें निर्वाह-खेती से हटकर परिवहन, व्यापार और खनन की ओर जाने में मदद मिली होगी। हमें इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि इन धातुओं के लंबी दूरी के व्यापार के लिए वे सोफाला के बंदरगाह शहर और बंदरगाह के उत्तर में और अफ्रीका के पूर्वी तट पर किलवा शहर के व्यापार में संलग्न थे। ग्रेट ज़िम्बाब्वे के निवासियों ने न केवल सोना, तांबा, लोहा और हाथी दांत का निर्यात किया, बल्कि चीनी मिट्टी के बरतन, एशियाई कांच के मनके और ईरानी कटोरों (bowls) का आयात भी किया।

बोध प्रश्न-4

1) ग्रेट ज़िम्बाब्वे की स्थानिक विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) ग्रेट ज़िम्बाब्वे की कलाकृतियां उस अवधि के सामाजिक-आर्थिक जीवन पर क्या प्रकाश डालती हैं?

....

....

....

....

....

3) ग्रेट ज़िम्बाब्वे का पतन क्यों हुआ/इसे क्यों त्याग दिया गया?

....

....

....

....

....

10.6 सारांश

यह इकाई अफ्रीका के तीन प्रमुख क्षेत्रों, मग़रिब (मोरक्को-अल्जीयर्स), इथियोपिया और ज़िम्बाब्वे, पर केंद्रित है। यह ज्ञात होता है कि तीनों अफ्रीकी मध्यकालीन सभ्यताओं/साम्राज्यों

के संदर्भ में मध्यकालीन अवधारणा बिल्कुल अलग-अलग है। मग़रिब ने इस्लाम के हस्तक्षेप को देखा जिसके परिणामस्वरूप तीन प्रमुख साम्राज्यों – अलमोराविद, अलमोहद और मारिनिद का निर्माण हुआ। यहाँ क्षेत्र में आए नवीन राजवंशीय नियंत्रणों के परिवर्तनों में सूफ़ीवाद ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मग़रिब को वास्तव में सूफ़ी गतिविधियों के शुरुआती केंद्रों में से एक कहा जा सकता है जहाँ प्रसिद्ध सूफ़ी संत अल-ग़ज़ाली रहते थे। इथियोपिया में ईसाई धर्म ने इस क्षेत्र में मध्ययुगीन साम्राज्यों के निर्माण और सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मग़रिब और इथियोपिया के विपरीत, ज़िम्बाब्वे की कहानी काफी अलग है। इस महान् मध्ययुगीन ज़िम्बाब्वे के संबंध में हमारे आंकड़े और जानकारी पूरी तरह से पुरातात्विक खोज पर टिकी हुई है। किसी भी लिखित रिकॉर्ड के अभाव में सभ्यता को अक्सर बाईबिल में वर्णित सोलोमन और शीबा के निवास स्थान के रूप में देखा जाता है।

10.7 शब्दावली

अंदलूसिया	:	स्पेन
फ़ैज	:	उत्तरी मोरक्को का एक शहर
फन्दूक	:	कारवांसराय
हारातिन	:	मोरक्को के वे अफ्रीकी दास जिन्होंने गुलामी से आजादी प्राप्त की
मग़रिब	:	मोरक्को-अल्जीयर्स

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) उप-भाग 10.2.1 देखें

2) उप-भाग 10.2.1 और 10.2.2 देखें

3) उप-भाग 10.2.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 10.3 देखें

2) भाग 10.3 देखें

3) भाग 10.3 देखें

4) भाग 10.3 देखें

बोध प्रश्न-3

1) उप-भाग 10.4.1 देखें

2) उप-भाग 10.4.2 देखें

3) उप-भाग 10.4.3 देखें

बोध प्रश्न-4

1) उप-भाग 10.5.1 देखें

2) उप-भाग 10.5.2 देखें

3) उप-भाग 10.5.1 देखें

10.9 संदर्भ ग्रंथ

ब्रॉकेम्पर, उलरिख, (1992) 'आस्पेक्ट्स ऑफ रिलीजियस सिंक्रैटिज्म इन सदर्न इथियोपिया', *जर्नल ऑफ रिलिजन इन अफ्रीका,* भाग XXII, नंबर 3.

हेमेल, चौकी एल., (2013) *ब्लैक मोरक्को; ए हिस्ट्री ऑफ स्लेवरी, रेस, एंड इस्लाम* (न्यूयार्कः कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस).

हेन्ज़, पॉल बी., (2000) *लेयर्स ऑफ़ टाइम; ए हिस्ट्री ऑफ़ इथियोपिया* (लंदनः सी. हर्स्ट एंड कंपनी).

लेवत्ज़िओन, नेहेमिया, (2008) 'द वेस्टर्न मग़रिब एंड सूडान', *द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ अफ्रीका,* भाग 3, *फ्रॉम c. 1050 टू c. 1600,* छठा संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

मार्कस, हेरोल्ड जी., (2002) *ए हिस्ट्री ऑफ इथियोपिया* (कैलिफोर्नियाः यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया प्रेस).

निएन, डी. टी., (सं) (1998) *यूनेस्को जनरल हिस्ट्री ऑफ़ अफ्रीका,* भाग IV,*अफ्रीका फ्रॉम द ट्वेल्फ़्थ टू द सिक्स्टीन्थ सेंचुरी* (कैलिफोर्नियाः जेम्स करे).

तम्राट, तद्देसे, (2008), 'इथियोपिया, द रेड सी एंड द हॉर्न', *द केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ अफ्रीका,* भाग 3, *फ्रॉम* c. *1050 टू* c. *1600,* छठा संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

तामेन, गेटनेट (1998) 'फीचर्स ऑफ़ द इथियोपियन ऑर्थोडॉक्स चर्च एंड द क्लर्जी', *एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज,* भाग 7, नं. 1.

10.10 शैक्षणिक वीडियो

द अलमोराविद एम्पायर (इन अवर टाइम)
https://www.youtube.com/watch?v=SNlc5QSJInY

द अलमोराविद्स एंड अलमोहद्स : द अमेज़िघ बरबर एम्पायर
https://www.youtube.com/watch?v=0qLf-riMnkQ

मेरिनिड डायनेस्टी
https://youtu.be/pIpHyqLwJQw

ग्रेट ज़िम्बाब्वे-अफ्रीकन मिडिवल सिटी (ज़िम्बाब्वे)
https://www.youtube.com/watch?v=uX0VNtaCcMk

रॉक-ह्यून चर्च ऑफ़ लालिबेला, इथियोपिया
https://www.youtube.com/watch?v=gNab_2rWhhQ

इकाई 11 लैटिन अमेरिका*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 एज़्टेक

11.2.1 राजनीति

11.2.2 समाज

11.2.3 अर्थव्यवस्था

11.2.4 संहिता-संग्रह (Codices)

11.2.5 धार्मिक विश्वास

11.3 इंका

11.3.1 इंका राज्य और साम्राज्य

11.3.2 समाज और अर्थव्यवस्था

11.3.3 जल प्रबंधन प्रणाली

11.3.4 इंका वास्तुकला

11.4 सारांश

11.5 शब्दावली

11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.7 संदर्भ ग्रंथ

11.8 शैक्षणिक वीडियो

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- लैटिन अमेरिकी सभ्यताओं की सामाजिक विशेषताओं को समझ पायेंगे,
- लैटिन अमेरिका के संदर्भ में मध्ययुगीन अवधारणा का निर्माण कर सकेंगे,
- मेसोअमेरिका के एज़्टेक के पदानुक्रम पर आधारित सामाजिक-आर्थिक ढांचे को जान पायेंगे,
- एज़्टेक संहिता संग्रहों (codices) के महत्व को समझ सकेंगे,
- इंका राज्य की संरचनाओं की विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगे,
- इंकाओं की जल प्रबंधन प्रणाली का विश्लेषण कर पायेंगे, और
- एज़्टेक और इंका सभ्यताओं की स्थापत्यगत विशेषताओं को जान पायेंगे।

* डॉ. देबअर्पित मनजीत, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

11.1 प्रस्तावना

लैटिन अमेरिकी इतिहास में मध्ययुगीन काल को किसी निश्चित सीमाओं में परिभाषित नहीं किया गया है। अधिकांश विशेषज्ञ पूर्व-औपनिवेशिक काल को लैटिन अमेरिका के इतिहास में मध्ययुगीन काल की तरह उल्लेखित करते हैं। हम भी यहां ऐसा ही करेंगे। और हम लैटिन अमेरिकी मध्ययुगीन इतिहास के कुछ आयामों को समझने के लिए मेसोअमेरिका से एज़्टेक और दक्षिण अमेरिका के मध्य एंडीज क्षेत्र से इंका के बारे में चर्चा करेंगे।

11.2 एज़्टेक

एज़्टेक 12 और 13वीं शताब्दी के दौरान मैक्सिको बेसिन में आए और उन्होंने वहाँ एक जटिल समाज और संस्कृति विकसित की। शासकों की श्रृंखला, ईष्टदेवों के लिए मंदिर और सबसे अधिक आबादी वाली राजधानियों में से एक तेनोचीटलान (Tenochtitlan), के साथ लैटिन अमेरिकी इतिहास की हर चर्चा में एज़्टेकों का प्रमुख स्थान अभिलक्षित है। उनका आत्म-संदर्भ मेक्सिका था। उन्होंने 16वीं शताब्दी के शुरुआती भाग में स्पेनिश उपनिवेशवादियों के आगमन तक मेसोअमेरिका के एक बड़े हिस्से पर शासन किया और अपना प्रभुत्व कायम रखा।

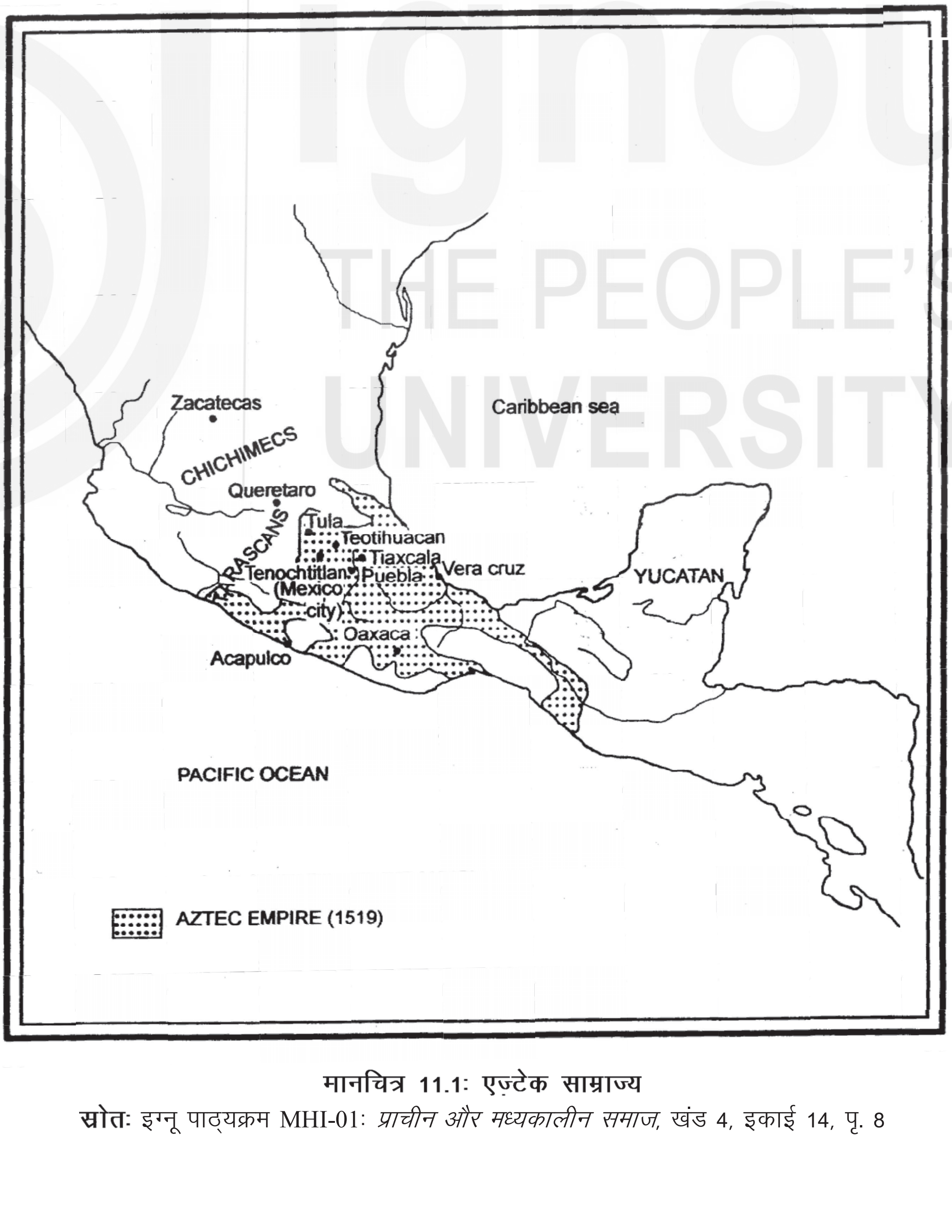

मानचित्र 11.1: एज़्टेक साम्राज्य

स्रोत: इग्नू पाठ्यक्रम MHI-01: *प्राचीन और मध्यकालीन समाज,* खंड 4, इकाई 14, पृ. 8

11.2.1 राजनीति

एज़्टेक वास्तव में उत्तर से आए थे और संभवतः 14वीं शताब्दी के बाद से वर्तमान मैक्सिको सिटी क्षेत्र के आसपास लंबे समय तक टेकपेनेकों (Tecpanecs) के आधिपत्य और प्रभुत्व के अधीन जीवन बसर करते थे। यह 15वीं शताब्दी की शरुआत थी जब एज़्टेक या मैक्सिकास एक स्वायत्त मुखियातंत्र बनकर उभरा। उनके कुछ प्रमुख थे इत्ज़कोट्ल (Itzcoatl; 1426-40), मोत्युक्ज़ोमा इल्हुइकैमिना (Moteuczoma Ilhuicamina), 'द एल्डर' (1440-69), अक्सायाक्त्ल (Axayacatl; 1469-81), टिज़ोक (Tizzoc; 1481-1485) एहुइतज़ोट्ल (Ahuitzotl; 1486-1502) और मोत्युक्ज़ोमा द्वितीय (Moteuczoma II; 1502-1520)। इन प्रमुखों ने टोटोनाका (Totonacas), मिक्सटेक (Mixtecs), ज़ैपोटेक (Zapotec) कबीलों पर एज़्टेक आधिपत्य और वर्चस्व को आगे बढ़ाया। एज़्टेक ने इन सभी कबीलों से भेंट वसूली और इन कबीलों के ईष्टदेवों को हुइत्ज़लोपोच्तली (टेनोचीटलान में प्रतिष्ठत एज़्टेक देवता) के मंदिर में स्थापित किया। इन कबीलों को समय-समय पर एज़्टेक कर-संग्रहकर्ताओं द्वारा बलिदान के लिए मनुष्यों की आपूर्ति करने के लिए भी कहा जाता था। अधीनस्थ कबीलों द्वारा एज़्टेक को भुगतानकर वस्तु के रूप में किया जाता था, जैसे मक्का, मछली, सोना, जेड, फ़िरोज़ा, पक्षियों, जानवरों आदि में। इसके अलावा वे एज़्टेक सेना को रसद और एज़्टेक कुलीनों या अधिकारियों को जमीन मुहैया करा कर अपना योगदान देते थे। साम्राज्य चलाने के लिए उन्होंने सड़कों, नहरों, के पत्थर के विशालकाय घर और अपने देवताओं के लिए भव्य 'मंदिरों' का निर्माण किया। एज़्टेक कृषि और दूर देशों के साथ व्यापार पर भी निर्भर थे।

एज़्टेक सरदार (ह्युई लातोआनी; Huey Tlatoani), जिन्हें प्रारंभिक औपनिवेशिक इतिहासकारों ने एक राजा के रूप में चित्रित किया था, संभवतः राजा नहीं थे। बाद के शोध साबित करते हैं और तर्क देते हैं कि पहले के टिप्पणीकारों ने एज़्टेक इतिहास और समाज पर अनपेक्षित रूप से यूरोपीय श्रेणियों और अवधारणाओं को थोपा। उनके अनुसार ये एज़्टेक प्रमुख एक राजा नहीं था बल्कि वह उनके प्रमुख के रूप में निर्वाचित किया जाता था। यह पद वंशानुगत नहीं था। एज़्टेक समाज विभेदित था और उनके पिपिल्टिन (pipiltin; अभिजात वर्ग) और *मेसेहुआल्टिन* (mecehualtin; सामान्यजन प्लेबियन (plebeian) दो प्रमुख वर्ग थे। *पिपिल्टिन* (pipiltin) को रैंक, उपाधियों और पदों के अनुसार विभाजित किया गया था ये विभिन्न *पिपिल्टिन* (pipiltin) कई चर्चाओं और विचार-विमर्श के बाद सरदार को 'चुनते' थे। सरदार शक्तिशाली होता था। वह मुख्य सेनापति, प्रधान देवता का मुख्य पुजारी, अंतिम न्यायाधीश और प्रशासनिक प्रमुख भी था। फिर भी यह कहना मुश्किल है कि वह यूरोप के मध्ययुगीन राजाओं की भांति 'पूर्ण रूप से निरंकुश' था।

एज़्टेक राजा कुछ परिषदों की सहायता से शासन करता था और प्रत्येक परिषदों में एक या दो प्रमुख होते थे। उनकी युद्ध परिषद, विभिन्न समारोहों के लिए उत्सव या अनुष्ठान परिषद् और कोष परिषद् थीं। राजा या एज़्टेक प्रमुख इन परिषदों से परामर्श करके शासन करते थे। इन परिषदों के प्रमुख केवल *पिपिल्टिन* (pipiltin) या अभिजात वर्ग के सदस्यों में से थे।

राजधानी शहर तेनोचीटलान (Tenochtitlan)से दूर शहर कई गांवों से घिरे होते थे। आसपास के गांवों के साथ इनमें से कुछ शहरों तथा गांवों को मिलाकर एज़्टेक साम्राज्य के मुखिया-तंत्र या प्रांतों का गठन होता था। ये प्रान्त या तो प्रमुखों द्वारा शासित होते थे जिन्हें या तो राजधानी के *पिपिल्टिन* (pipiltins) या एज़्टेक के सदस्यों में से या एक विजित प्रमुख, जिसने एज़्टेक के शासन को स्वीकार किया था, में से नियुक्त किया जाता था। इन प्रमुखों को तेनोचीटलान (Tenochtitlan) में एज़्टेक के सम्मान के लिए उत्पादन और भेंट के संग्रह का आयोजन करना होता था। यह बड़े पैमाने पर विभिन्न *कैलपुलियों* (*calpullis*) या कुलों पर नियंत्रण के माध्यम से आयोजित किया जाता था।

11.2.2 समाज

यह एक श्रेणीबद्ध समाज था। अभिजातों को उनके कपड़ों द्वारा, जो वे पहनते थे, समाज और धार्मिक अनुष्ठानों में जो स्थान उन्होंने प्राप्त किया था, जिन घरों में वे रहते थे, तथा सरकार और समाज के संचालन में वे जो भूमिका निभाते थे, के सन्दर्भ में स्पष्ट पहचाना जा सकता था। अभिजात शहरी केंद्रों में रहते थे और उनके प्रासाद तेनोचीटलान (Tenochtitlan) के मुख्य मंदिर के ठीक बगल में थे। उनके घर विशालकाय थे तथा पक्के, चिनाई-पत्थर के द्वारा बने होते थे। अक्सायाक्त्ल (Axayacatl) के शासनकाल के दौरान, जब स्पैनियार्ड्स (स्पेन के निवासी) तेनोचीटलान (Tenochtitlan) में आए, तो 400 सैनिकों की पूरी स्पेनिश सेना शासक के महल में रखी जा सकी थी। अभिजात समाज का एक छोटा सा हिस्सा थे। समाज का एक और तबका था जिसमें व्यापारी, योद्धा और पुजारी शामिल थे। *पिपिल्टिन* (*pipiltin*) या अभिजात वर्ग के बच्चे *काल्मेकैक* (*calmecac*) या 'स्कूलों' में भाग ले सकते थे। वे कुछ वर्षों तक शाही तौर-तरीके, धार्मिक अनुष्ठानों और भजनों, कैलेंडर को पढ़ने, युद्ध के कौशल आदि में प्रशिक्षित किये जाते थे। प्रशिक्षण के बाद उन्हें शाही कार्यालयों की जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती थीं।

उस समाज में अन्य वर्ग भी था जो सामान्यजन थे। संस्कारों के सामान्य आख्यानों में सामान्यजन, अभिजातों की तुलना में नगण्य भूमिका निभाते थे। इसलिए उनके बारे में विस्तृत जानकारी पाना मुश्किल है। सामान्य जनों में किसान, बढ़ई, संगतराश, खनिक, बहेलिया (feather workers), ताम्र-कर्मी, स्वर्णकार और नक्काश (lapidaries) थे। यद्पि वे कुशल थे और पूरे समाज के लिए पर्याप्त उत्पादन कर सकते थे, फिर भी उन्हें कभी-कभी चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। विशेष रूप से किसान, जो वर्षा ऋतु के दौरान बारिश/मानसून पर निर्भर करते थे, के लिए सूखे के दौरान कई बार कष्टमय समय होता था। अकाल और सूखे के दौरान गरीब लोग अपने बच्चों को दास के रूप में बेच देते थे। 1450 के सूखे के दौरान, पहले मोत्युक्ज़ोमा (Moteuczoma; शासक) के शासनकाल में प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार गरीब एज़्टेकों ने खुद को टोटोनैक (मेक्सिको के देशज निवासियों) को एक स्त्री को मक्का के 400 भुट्टों[1] के लिए और कामकाजी पुरुष को मक्का के 500 भुट्टों की दर से बेच दिया।

एज़्टेक शासन के तहत भूमि का स्वामित्व जटिल और अस्पष्ट है। यहाँ मंदिर की भूमि, महल की भूमि, राजा की भूमि, *कैलीपुलि/ कालपुली* या कबीले/कुल की भूमि आदि थे। लेकिन आमतौर पर यह माना जाता है कि भूमि का स्वामित्व '*कैलीपुलि/ कालपुली*' के पास था। वास्तव में, यह भी अनुमान लगाया जाता है कि केवल *पिपिल्टिन* (सत्तारूढ़ कुलीन/अभिजात वर्ग) के पास ही निजी संपत्ति के रूप में 'स्वामित्व' वाली भूमि थी। लेकिन इस निष्कर्ष के संबंध में यह तर्क भी दिया जाता है कि यह केवल 'स्वामित्व' के संदर्भ में ऐसा था, क्योंकि उच्चतम पदों/कार्यालयों में *पिपिल्टिन* के सदस्य होते थे। आधिकारिक तौर पर, जब *पिपिल्टिन* कोई आधिकारिक पद नहीं संभाल रहा होता था या कार्यालय से बेदखल हो जाता था तो उसे भूमि विशेष पर से अपना नियंत्रण खोना पड़ता था। लेकिन कुछ *पिपिल्टिन* परिवारों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी कार्यालय के साथ-साथ निजी संपत्ति के रूप में उस कार्यालय को सौंपी गई भूमि भी उनके अधिकार में रही। उनके पास जो भूमि थी, वे या तो किसानों द्वारा या *मायेक* (*mayeque*) द्वारा खेती करवाते थे। *मायेक* (*mayeque*) एक तरह के श्रमिक नौकर, मजदूर या दास भी हो सकते थे। हालांकि, मेसोअमेरिका के ये दास (*त्लाकोतिन/ tlacotin*), जिन ग्रीस या रोम के दासों के बारे में हम इतिहास में पढ़ते हैं, उनसे भिन्न थे। ये गुलाम अपनी स्वतंत्रता खरीदने में सक्षम थे और साथ ही उन्हें धार्मिक

---

[1] मक्का की बाली का केन्द्रिय बेलनाकार हिस्सा या भुट्टा जिसमें मक्का के दाने जुड़े होते हैं। उस काल में यह मापन की एक इकाई थी।

अनुष्ठान में मानव बलि के संभावित शिकार होने का जोखिम भी होता था। कैदियों की गुलामी के पीछे ऋण, सजा, करों का भुगतान करने में असफलता या युद्ध में बंधक बनाया जाना प्रमुख कारक थे। एज़्टेक दासता जन्म से निर्धारित नहीं थी। यहां तक कि एक दास के बच्चों को भी दास नहीं माना जाता था। इस प्रकार दासता वंशानुगत नहीं थी। लोग अक्सर खुद को परेशानी के दौर में दास के रूप में बेच देते थे। 1450 के दशक में महान् अकाल में एज़्टेकों ने खुद को खाड़ी तट (Gulf Coast) के लोगों को बेच दिया था।

पॉकटेक (*pochtecas*) व्यापारी थे और संभवतः उनके द्वारा किए जाने वाले वस्तु विशेष के व्यापार के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित थे। उदाहरण के लिए, उनमें दास व्यापारी, मक्के के व्यापारी, धातु के व्यापारी, पशु व्यापारी आदि थे। चॉकलेट और कोको के व्यापारी आम व्यापारियों से 'कुछ' उच्च माने जाते थे क्योंकि चॉकलेट और कोको अभिजात वर्ग द्वारा उपभोग की जाने वाली 'विशिष्ट' वस्तुएं थीं। कुछ व्यापारी दासों के व्यापार में विशिष्ट थे। व्यापारी आमजन का हिस्सा थे फिर भी राजा की राजकोष परिषद् द्वारा आमंत्रित किए जाते थे और उनसे परामर्श लिया जाता था। इस प्रकार वे *पिपिल्टिन* या अभिजातों के कुछ विशेषाधिकारों का आनंद लेते होंगे। दूरस्थ क्षेत्रों की उनकी यात्रा ने उन्हें बहुभाषाविद् बनाया। और वे एज़्टेक को बाहरी दुनिया की जानकारी प्रदान करने वाले भी थे। व्यापारी बाजार स्थलों के प्रबंधन का अभिन्न हिस्सा थे। ऋण पदान करने वाले के रूप में अन्य व्यापारियों के लिए वे 'बैंकर' के रूप में भी काम करते थे।

11.2.3 अर्थव्यवस्था

16वीं शताब्दी में हमलावर स्पेनवासियों के लिए एज़्टेक समाज की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता एज़्टेकों का कृषि उत्पादन कार्य था। झील के अंदर बगीचे (या जैसा कि स्पेनवासियों ने उन्हें तैरते हुए बगीचे (floating gardens) कहा) या ***चाइनेमपा*** (***chinampas***) थे। *चाइनेमपा* दलदल के अंदर 10-25 फीट चौड़ी और 200-300 फीट लंबी मिट्टी की पट्टियां थीं। मिट्टी की इन उभरी हुई पट्टियों पर एज़्टेक ऐमरैन्थ (amaranth; गहरे लाल रंग का साग), फलियाँ, मक्का, कुम्हड़ा (squash) और फूलों की विभिन्न किस्में इत्यादि उगाते थे। पट्टियों को बनाए रखने के लिए वे दलदल के फर्श से लगातार मिट्टी को डालते रहते थे जिसने इस तरह भूमि की उर्वरता में इजाफा किया। पट्टियों के इन टुकड़ों पर किसानों ने अपने रहने के लिए बांस और लकड़ी के घर बनाए थे। राज्य *चाइनेमपा* (*chinampas*) से उत्पादों तथा महिलाओं द्वारा बुने गये कपड़ों के रुप में राजस्व एकत्रित करता था। *चाइनेमपा* (*chinampas*) का स्वामित्व सामूहिक था। कुलों (*कैलीपुलि/ कालपुली*) के पास *चाइनेमपा* (*chinampas*) का स्वामित्व होता था और किसान के पास मात्र इसके उपयोग का अधिकार होता था। एक निश्चित भू-पट्टी का उपयोग करने या खेती करने में विफलता के मामले में, किसानों को उपेक्षा के खिलाफ चेतावनी मिलती थी और अंततः अक्सर उन्हें बेदखल कर दिया जाता था। बेदखली के बाद भू-पट्टी फिर किसी और को दे दी जाती थी। परिवार में सदस्यों की संख्या में वृद्धि के साथ, भूमि को आमतौर पर कबीले के भीतर ही संचालित किया जाता था। और यदि कबीले (*कैलीपुलि/ कालपुली*) के पास अधिक भूमि होती थी तो कबीले परिवार से बाहर अधिक भूमि या भू-पट्टियां आबंटित करते थे। *चाइनेमपा* (*chinampas*) कृषि के अलावा एज़्टेक पहाड़ी दलानों पर भी सीढ़ीदार खेती करते थे और विभिन्न फसलों को उगाते थे। एज़्टेक के आहार में कृषि उपज के अलावा कुत्ते, हिरण, मछली, चूहे, इगुआना (iguana), टर्की बत्तख और सांप शामिल थे।

अन्य आर्थिक गतिविधियां चांदी, सोना, टिन, तांबे आदि का खनन् थीं। इन धातुओं का उपयोग इस्तेमाल की वस्तुओं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियों से लेकर आभूषणों तक बनाने

में किया जाता था। ये कुशल शिल्पकार थे जो अपने शिल्प के विशेषज्ञ थे। इन शिल्पियों के कुल या *कैलीपुलि/ कालपुली* के पास स्वयं की कोई जमीन नहीं थी। इसलिए, कुछ विशेषज्ञ यह निष्कर्ष निकालते हैं कि *कैलीपुलि/ कालपुली* एक कुल नहीं बल्कि एक व्यापारिक समूह था। लेकिन सभी संभावनाओं में *कैलीपुलि/ कालपुली* रक्त आधारित अंतर्विवाही (endogamous) और पेशेवर समूह थे।

शहरी केंद्रों में बाजार के स्थान थे और ग्रामीण बाजार एक सप्ताह या पांच दिनों के अंतराल में आयोजित होते थे। लेकिन राजधानी के केंद्रीय मैदान में सबसे बड़ा बाजार दैनिक बाजार था। विनिमय मोटे तौर पर वस्तु विनिमय या काम के घंटों की इकाइयों के माध्यम से होता था। लेकिन एज़्टेकों ने कोको-बीन्स, कपास के लबादे, तांबे के ब्लेड या चाकू, छोटे मुड़े हुए शॉलों (mantle) और सोने के बुरादे से भरी पंख की कलमों (quills) को मूल्य या धन की मानक इकाइयों के रूप में इस्तेमाल किया करते थे – दूसरे शब्दों में एक तरह की मुद्रा के रूप में। और प्रयोग की हर वस्तु, गुलामों, वेश्याओं, गायकों से लेकर आहार के लिए कुत्ते, पत्थर, धातु, सब्जियां आदि सभी बाज़ार में वस्तुओं तथा सेवाओं के रूप में उपलब्ध थे। राजधानी के बाज़ार में विक्रेताओं-खरीदारों की खरीद-फरोख्त संबंधी परस्पर अंतःक्रिया को नियंत्रित करने के लिए न्यायाधीश थे और एक अधीक्षक होता था जो प्रत्येक विक्रेता से कर एकत्रित करता था। दूर-दराज के लोग भी अपना माल एज़्टेक बाजारों में लाते थे। बाज़ार स्थल केवल वस्तुओं के आदान-प्रदान का केन्द्र ही नहीं थे, बल्कि आपस में एक-दूसरे से मेलजोल और सामूहिक रूप से एकत्रित होने का स्थान भी थे।

न तो एज़्टेक और न ही मेसोअमेरिका के किसी अन्य कबीले ने कुत्ते के अलावा किसी अन्य जानवर को पालतू बनाया। नतीजतन उनके पास कोई बोझा ढोने वाले जानवर नहीं थे और वे पहिये का उपयोग भी नहीं करते थे। आम लोग न केवल समाज में कुलीन वर्ग के लिए वस्तुओं का उत्पादन करते थे, बल्कि व्यापार और भेंट के लिए अपने कंधों पर सामान का भार भी उठाते थे।

11.2.4 संहिता-संग्रह (Codices)

एज़्टेक संस्कृति की एक अनूठी विशेषता संहिता-संग्रह (कोडाइसेस; एकवचन कोडेक्स) था। संहिताओं को चित्रात्मक ग्रंथ कहा जा सकता है। यहाँ ऐसे लिपिकों का एक समूह था जो इन ग्रंथों को 'चित्रित' किया करते थे। शुरुआती यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने उनके ग्रंथों को नहीं समझा और कहा कि एज़्टेक निरक्षर थे। उनके पास कोई लिपि या ग्रंथ नहीं थे। लेकिन यह पूरी तरह से सही नहीं था। लेकिन वास्तविकता सिर्फ इतनी है कि अक्षर और लिपियों की उनकी अवधारणा दूसरों से अलग और अद्वितीय थी, जो कहीं और नहीं मिलती।

संहिताओं के लेखकों या निर्माताओं को *त्लाक्यूलोक्स* (*tlacuiloques*) या लिपिक के रूप में जाना जाता था। तथा ऐसे विद्वान या ज्ञानी पुरुष थे जिन्हें *त्लामातिनिमे* (*tlamatinime*) के नाम से जाना जाता था, जो उन ग्रंथों के स्वामी थे और उन्हें पढ़ा करते थे। अधिकांश *त्लाक्युलोक्स* (*tlacuiloques*) मात्र सामान्य पुरुष शिल्पकार थे, जिनमें महिलाएं शामिल नहीं थीं। लेकिन कुछ *पिपिल्टिन* (कुलीन) भी उनमें थे। कई बार *त्लाक्युलोक्स* (*tlacuiloques*) और त्लामातिनिमे (*tlamatinime*) एक ही व्यक्ति व्यक्ति होता था। एज़्टेक ने संहिताओं (codices) में दिन के हिसाब से युद्धों या प्रमुख घटनाओं का इतिहास, राजाओं और कुलीनों की वंशावली, अनुष्ठानों और धार्मिक आयोजनों, कृषि उत्पादन और राजस्व तथा, कानूनों और कैलेंडर की गाथा अथवा वृतांतों की रचना की थी।

चित्र 11.1: कोडेक्स वेटिकनस बी

साभार: अज्ञात; मूल रूप से Admat द्वारा पोलिश भाषा विकिपीडिया पर अपलोड की गई फाइल; अज्ञात तिथि

स्रोत:https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/76/Codex_Vaticanus_B.jpg

ये चित्रित ग्रंथ कागज या चमड़े (hide) वाले या बुने हुए कपड़े के थे जो एक तरफ या दोनों तरफ चित्रित किए जा सकते थे। इन पुस्तकों में कभी-कभी कागज़ या चमड़े या कपड़े को, जो या तो पूर्ण रूप से तह किये हुए या सपाट होते थे, को ढकने के लिए लकड़ी के आवरण होते थे। संभवतः ये लकड़ी के आवरण अलंकृत भी थे। इन विभिन्न प्रकार के पृष्ठों में सबसे अधिक समय और गहन परिश्रम चमड़े के पन्नों में लगता था और ये तह किये हुए होते थे और स्क्रीनफोल्ड कहलाते थे।

11.2.5 धार्मिक विश्वास

एज़्टेकों ने अपने धार्मिक विचारों को बड़े पैमाने पर दो प्रमुख परपंराओं से उद्धृत किया, एक अपने पूर्ववर्तियों, तेओतिहुआकन (Teotihuacan) और टूला (Tula) से और दूसरा अपने एज़तलान (Aztlan) प्रवासियों से जो अपने स्वयं के देवताओं को अपने साथ लाये। एज़्टेकों के दो प्रमुख देवता थे, त्लालोक (Tlalok; वर्षा और प्रजनन तथा उर्वरता के देवता) जो कि तेओतिहुआकन (Teotihuacan) के तूफान के देवता थे। दूसरे देवता युद्ध और बलिदानों से जुड़े, हुइत्ज़िलोपोचली (Huitzilopochtli) था। सबसे ऊपर टैम्पलो मेयर पिरामिड मंदिर स्थित था जो त्लालोक (Tlalok) और हुइत्ज़िलोपोचली (Huitzilopochtli) को समर्पित था। शहरों और *कैलीपुली / कालपुली* में अलग-अलग देवताओं की पूजा की जाती थी। हुइत्ज़िलोपोचली (Huitzilopochtli) मैक्सिन लोगों का इष्टदेव था। इसी तरह अलग-अलग व्यावसायिक समूहों के अपने अलग देवता थे: राजाओं के संरक्षक, टेज़कतलिपोका (Tezcatlipoca), पुजारियों के क्वेटज़ालकोट (Quetzalcoatl), दाइयों के टेटीओइनान (Teteoinnan) और सुनारों के ज़ीपे

टोटेक (Xipe Totec) थे (स्मिथ 2012: 204)। उनका मानना था कि ओमेटियोल (Ometeotl) ने, जो पुरुष (ओमेटेकुहली; Ometecuhtli) और महिलाओं (ओमेसीहुअल; Omecihuatl) में सर्वोच्च ईश्वर माना जाता है, ने चार बेटों टेज़कतलिपोका (Tezcatlipoca), ज़ीपे टोटेक (Xipe Totec), क्वेटज़ालकोट (Quetzalcoatl), और हुइत्ज़िलोपोचली (Huitzilopochtli) को जन्म दिया, जिनमें से अंतिम दो को पृथ्वी, अन्य देवताओं और लोगों की सृष्टि का श्रेय दिया जाता है।

चित्र 11.2: टेज़कतलिपोका (Tezcatlipoca) **का चित्र, कोडेक्स बोर्गिया में वर्णित देवताओं में से एक**

साभार : अज्ञात, पूर्व-कोलंबियन

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/6/67/black_tezcatlipoca.jpg

एज़्टेक धर्म का प्रमुख आधार मानव बलिदान और स्व-रक्त बहाना/आत्मबलिदान था। एज़्टेकों का मानना था कि मानव जाति के लाभ के लिए देवताओं ने खुद को बलिदान किया था इसलिए मानवों को भी प्रतिदान के रूप में मानव रक्त और जीवन को बलिदान करना चाहिए। पुजारी दैनिक अनुष्ठान करने के अलावा 'आत्मबलिदान के द्वारा अपने स्वयं के रक्त का अर्पण, भी करते थे जिसके परिणामस्वरूप अक्सर 'उनके शरीर निरंतर स्व-रक्तपात से जख्मी और क्षत-विक्षत' हो जाते थे। वे कई अलग प्रकार के परलोकों (afterworlds) में भी विश्वास करते थे, जिन्हें व्यक्ति विशेष की मृत्यु के तरीके से निर्धारित किया जाता था जैसे यह विश्वास था कि 'जो सैनिक युद्ध में मारे गए और बलिदान के शहीदों को प्रतीकात्मक रूप से परलोक में उच्च स्थान प्रदान किया जाता था और माना जाता था कि वे पूर्वी मंडल में सूर्य के साथ-साथ उदय से लेकर चरम बिन्दु तक चलते थे। वही जिन महिलाओं की बच्चे के जन्म के समय मृत्यु हो जाती थी वे पश्चिमी मंडल में सूर्य के अस्त होने तक उसके साथ-साथ चलती थीं' (स्मिथ 2012 : 212)। सामान्यजनों और कुलीनों (राजा और शासक वर्ग) को दफनाने के तरीकों में अंतर प्रतीत होता है। कुलीनों के शवाधान कहीं अधिक 'विस्तृत और समृद्ध' थे। घर के भीतर दफन किए जाने की परम्परा दर्शाती है कि एज़्टेक मृतक को अपने परिवार का अंतरंग हिस्सा मानते थे।

मंदिरों में पुजारियों के पदानुक्रम मौजूद थे। छोटे पुजारी (*त्लामाकेज़टन/ tlamacazton*) थे, जिन्हें एक साल के लिए पुरोहिती के प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाता था और वे दैनिक

कर्तव्यों का पालन करते थे। पूर्ण पुजारी *त्लामाकाज़्की* (*tlamacazqui*) थे। सर्वोच्च पुजारियों *त्लेनामाकक* (*tlenamacac*) द्वारा सर्वोच्च अनुष्ठान, मानव बलिदान का संपादन किया जाता था। साथ ही महिला पुजारिनें *सिहुआत्लामाकाज़्की* (*cihuatlamacazqui*) भी थीं, हालांकि, महिला पुजारिनें अल्प अवधि के लिए सेवारत होती थीं, आमतौर पर वे शादी के बाद पुरोहिती छोड़ देती थीं। पुजारी साक्षर वर्ग थे और वे पठन-पाठन तथा शिक्षा में लिप्त रहते थे।

हालांकि, 'एज़्टेक राजनीति और धर्म एक-दूसरे से निकटता से जुड़े थे। राजा देवताओं के आशीर्वाद से शासन करते थे, और पुजारी और मंदिर राज्य के संरक्षणत्व में थे। राजनीति की सेवा में मानव बलिदान किए जाते थे... देवताओं और राज्य की विस्मयकारी शक्ति [प्रदर्शित करने के लिए]... न केवल दुश्मन सैनिकों बल्कि स्थानीय गुलामों की भीषण मौतों का साक्षी होना... यह सिद्ध करने का प्रयास था कि जिससे अधिकांश लोग उनके राजा या स्थानीय लोगों के खिलाफ किसी भी रूप में उलझने से पहले दो बार सोचें' (स्मिथ 2012: 225)।

बोध प्रश्न-1

1) एज़्टेक कौन थे ? उनका राजनीतिक ढांचा क्या था ?

....

....

....

....

....

2) एज़्टेकों के पदानुक्रम पर आधारित सामाजिक संगठन पर टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

3) एज़्टेकों की आर्थिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

....

....

....

....

....

4) संहिताएं (codices) क्या थीं ? उनसे किस प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ?

....

....

....

....

....

5. एज़्टेक धर्म पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

11.3 इन्का

दक्षिण अमेरिका के मध्य एंडीज में, एक साम्राज्य विकसित हुआ, जिसे इंका साम्राज्य या चार क्षेत्रों के प्रदेश तवांटिनसुयु (Tawantinsuyu) या ताहुआनटिनसुयु (Tahuantinsuyu) के रूप में जाना जाता है। यह 'भारतीयों' का साम्राज्य था (यहाँ पर वर्णित भारतीय नाम क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा नई दुनिया के निवासियों को दिया गया, उसने नयी दुनिया को एशिया के रूप में समझने की गलती की)। इसमें, मैक्सिको और मध्य अमेरिका के माया और एज़्टेक, कैरिबियाई द्वीप समूह के कैरिब, एंडीज के इंका, चिली के अरॉवकानियान, पराग्वे के गुआरानी और ब्राजील के तुपी और एंडीज के स्वदेशी लोगों के रूप में सांस्कृतिक समूहों का एक बड़ा और विविध समूह शामिल हैं। यह साम्राज्य 12वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान फला-फूला। 16वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में (1572) स्पेनवासियों ने इन साम्राज्यों पर विजय प्राप्त की और उन पर अपनी औपनिवेशिक सत्ता स्थापित की।

11.3.1 इंका राज्य और साम्राज्य

इंका साम्राज्य की राजधानी या सत्ता का स्थान कुज़्को/कुस्को (Cuzco/Cusco) में था। यह एक केंद्रीकृत साम्राज्य और प्रशासनिक व्यवस्था थी जो 1000 से 1400 CE (कुछ विशेषज्ञों द्वारा इसे उत्तर मध्यवर्ती काल कहा गया है) के दौरान विकसित हुआ। क्वेंचुआ (Quenchua) भाषी इंकाओं ने शक्तिशाली प्रतिद्वन्दी जातीय समुदायों (*अयलुस; ayllus*) जैसे पिनाहुआ (Pinahua) और ल्यूक्रे (Lucre) बेसिन के मोहिना (Mohina) क्षेत्र पर सैन्य विजयों तथा पुनः विजय हासिल कर अपने अधिपत्य क्षेत्र का विस्तार किया। कुज़्को घाटी के उत्तर की ओर अन्टा, अयारमाका समुदाय निवास करते थे, उन्होंने कई युद्धों के बाद भी इंका अधिपत्य को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। लेकिन इंकाओं के सत्तारूढ़ कुलीन वर्ग और इन समुदाय के बीच वैवाहिक संधियाँ उन्हें इंका साम्राज्य का हिस्सा बनाने में अधिक सफल साबित हुईं। पूर्व की ओर, हमेशा से विद्रोही पिनाहुआ (Pinahua) को न केवल इंकाओं द्वारा सशस्त्र संघर्ष में हराया गया था, बल्कि उन्हें उनकी भूमि से दूरस्थ निम्न-भूमि क्षेत्र की ओर धकेल दिया गया था। संभवतः उन्हें उनके ऊपर एक विदेशी गवर्नर के साथ इन क्षेत्रों में बसाया गया था और इस प्रकार उन्हें इंका साम्राज्य का हिस्सा बना दिया गया था। इंकाओं द्वारा कुछ अन्य जातीय समूहों को अन्य प्रतिद्वंद्वी समूहों के खिलाफ संरक्षण दिया गया और इस प्रकार वे इंका साम्राज्य के अपनी इच्छा से सदस्य बन गए।

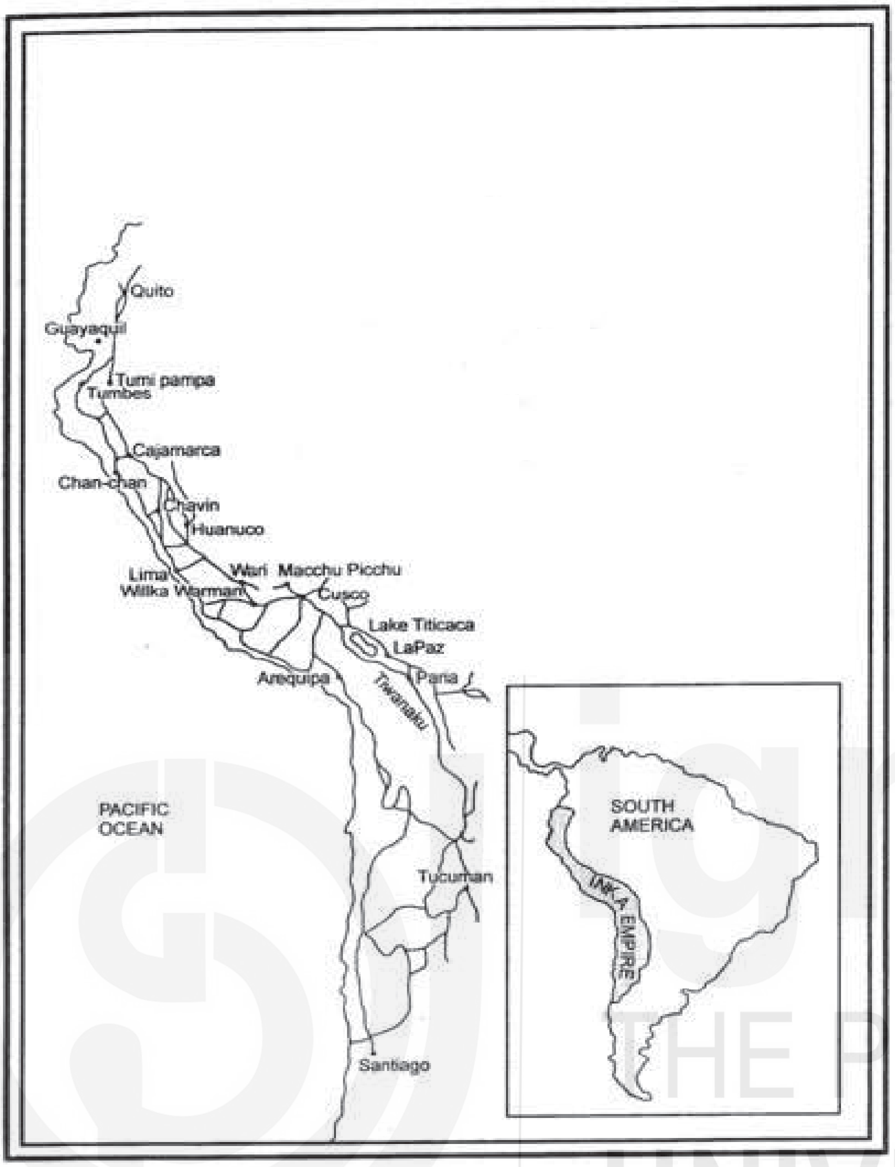

मानचित्र 11.2: इंका साम्राज्य

स्रोतः इग्नू पाठ्यक्रम MHI-01: *प्राचीन और मध्यकालीन समाज*, खंड, 4, इकाई 14, पृ. 13

इंका साम्राज्य निर्माण एक रैखिक (linear) प्रक्रिया नहीं थी। अक्सर, केंद्रीय अधिकारियों को विद्रोह का सामना करना पड़ा और कुछ क्षेत्रों को पुनः जीतने की जरूरत पड़ी। यहां तक कि स्थानीय या प्रांतीय गवर्नरों को भी बदलना या अधीन करना पड़ा। कुज़्कों में राजाओं के लगभग हर उत्तराधिकार अथवा परिवर्तन ने साम्राज्य के संपूर्ण भाग को अस्थिर बनाया। प्रतिस्पर्धित समुदायों और कुलीन वर्ग के शक्तिशाली समूहों ने गद्दी के लिए दावेदारों की हत्या करने, उन्हें अपदस्थ करने या सिहांसन के कुछ दावों का समर्थन करने का प्रयास किया।

इंका प्रमुख या राजा कई पत्नियों के साथ-साथ उपपत्नियां (concubines) भी रखते थे। यह एक कारण था जो अक्सर उत्तराधिकार के विवादों और यहां तक कि भयावह युद्धों और संघर्षों का कारण बना। राजा के परिजन शाही कुलीन थे जो राजा के उत्तराधिकारी के चयन में निर्णायक भूमिका निभाते थे और अक्सर वे दरबार के अंदर और बाहर षड्यंत्रों में लिप्त रहते थे। हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि जाने वाले मरणासन्न राजा द्वारा अपने उत्तराधिकारी को नामित करने का विशेषाधिकार था। लेकिन उत्तराधिकारी शक्ति का निर्णय काफी हद तक उस सहयोगी अभिजात वर्ग में निहित था जो विभिन्न समूहों या *पैनाकों* में विभाजित थे।

परम्परागत इंका राजा

मनको क़्हापक (Manqo Qhapaq)	विराक़ोचा इंका (Wiraqocha Inka)
ज़िंची रोक़'आ (Zinchi Roq'a)	पचाकुटी इंका युपंकी (PachakutiInka Yupandi)
ल्लोक़ युपंकी (Lloq'e Yupanki)	थुपा इंका युपंकी (ThupaInka Yupanki)
मायता क़्हापक (Mayta Qhapaq)	वयना क़्हापक (Wayna Qhapaq)
क़्हापक युपंकी (Qhapaq Yupanki)	वास्खर इंका (Waskhar Inka)
इंका रोक़'आ (Inka Roq'a)	अटावालपा (Atawallpa)
यावर वक़ाक़ (Yawar Waqaq)	

स्रोतः डी'अल्ट्रॉय, टेरेंस एन., (2015) द *इंकास* (ससेक्सः विली ब्लैकवेल), दूसरा संस्करण, पृष्ठ 6 पर आधारित

इंका राजा एक बड़ी सेना या सशस्त्र लोगों की मदद से शासन करते थे। वे अपने साम्राज्यों के भीतर विद्रोहियों के खिलाफ सैन्य अभियानों के साथ-साथ नए क्षेत्रों में भी सैन्य अभियानों द्वारा उन्हें अपने अधीन कर लेते थे और उन्हें भेंट देने के लिए मज़बूर करते थे। विद्रोहियों को कुचलने या नए क्षेत्रों को अपने अधीन करने के बाद राजाओं ने स्थानीय गवर्नर के रूप में अपने वफादार लोगों को नियुक्त किया। स्थानीय गवर्नर ज्यादातर शाही परिवारों से थे हालांकि यह हमेशा ऐसा नहीं था। प्रांतीय गवर्नर और *मिटीमा* (*mitimaes*)[2] शांति-रक्षक थे।

सैन्य अभियान पड़ोसी क्षेत्रों को जीतने और साम्राज्य के विस्तार का एकमात्र तरीका नहीं था। यह धार्मिक और आनुष्ठनिक एकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से भी हुआ। आइरेन सिल्वरब्लॉट (1987) के अनुसार क्यूस्को के इंकाओं ने वास्तव में अपने साम्राज्य के हाशिये पर रहने वाले जातीय समुदायों के स्थानीय देवताओं को अपनाया और इस तरह उनकी स्वायत्तता को हथियाया और उन्हें साम्राज्य का हिस्सा बनाया। इंकाओं ने अन्य जातीय समुदायों को सूर्य देवता की पूजा करने पर जोर दिया और साथ ही उन समुदायों के देवताओं को भी सूर्य देव के मंदिर के पास कुस्को में जगह दी और खुद इंकाओं ने उनकी पूजा की। इस प्रकार उन्होंने 'शाही धर्म को संस्थागत' बना दिया जो न केवल शाही धर्म में दूसरों के धर्म का विनियोग या सह-विकल्प था, बल्कि उन समुदायों की संप्रभुता का विनियोग भी था।

यदि हम *थेअक्ला* (*theaclla*; चुनी हुई/सम्मानित महिलाएं) अनुष्ठान, को करने की प्रक्रिया देखें तो यह शाही धर्म के विवरण को विशिष्ट रूप से स्पष्ट करेगा। इंकाओं के पुरुष पर्यवेक्षकों द्वारा युवा महिलाओं को इंकाओं द्वारा जीते गए विभिन्न समुदायों के प्रमुखों के परिवारों में से चुना जाता था, जिन्हें राजधानी कुस्को में लाया जाता था। विस्तृत रस्मों के बाद उनमें से कुछ को इंका राजाओं की पत्नियों के रूप में स्वीकार किया जाता था, कुछ को राज्य के अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारियों या इंका के रिश्तेदारों की पत्नियों/उपपत्नियों के रूप में दे दिया जाता था, कुछ अन्य को सूर्य की पत्नियों के रूप में राज्यचालित मठों में रखा जाता था और कुछ को कुस्को या साम्राज्य के अन्य भागों में विशिष्ट अवसरों पर 'राज्य के प्रयोजनों के लिए' बलिदान किया जाता था। इंका राजपरिवार द्वारा चुने जाने के परिणामस्वरूप युवती के पिता को इंकाओं का एक

2 *मिटीमा* (*mitimaes*) तत्कालीन विजित प्रदेशों में इंका समुदायों की जबरन आबाद की गई बस्तियां थीं, जिन्हें नए विजित क्षेत्रों में इंका वफादारों को बसाने के उद्देश्य से बसाया गया था; अपने साथ उन्होंने इंका संस्कृति को भी आगे बढ़ाया।

गौरवांवित अधीनस्थ समझा जाता था। और 'चुनी हुई महिलाओं' के अनुष्ठानिक बलिदान (उन्हें नशा देने के बाद जिंदा दफन करने) ने न केवल कुस्को में बल्कि साम्राज्य के विभिन्न सीमांत क्षेत्रों में स्थित अन्य समुदायों के क्षेत्रों में इन क्षेत्रों के राजनीतिक एकीकरण से इन्काओं के साम्राज्य को विस्तृत करने में मदद की, जो एक ही धार्मिक अनुष्ठानों के सहभागी थे। निर्विवाद रुप से यह नातेदारी के माध्यम से हासिल की गई एक विस्तारवादी परियोजना थी (अन्य शत्रुतापूर्ण या मैत्रीपूर्ण समुदायों की महिलाओं से शादी करके और उनसे शाही संतानों का होना)। इसाबेल याया (2012) के अनुसार, इस परियोजना ने एक साथ दो चीजें हासिल कीं, एक तो लगातार बढ़ती श्रम शक्ति पर राजनीतिक नियंत्रण और दूसरा गैर-इंका मूल की महिलाओं की संतानों के 'दावेदारों के लिए प्रतिष्ठा-पदानुक्रम के सर्वाधिक सामरिक पदों' को खोलना।

वराचिकु (*Warachiku*) एक और शाही अनुष्ठान था और एक बड़े पैमाने पर मनाया जाता था तथा वह महीने भर का उत्सव होता था। *वराचिकु* का मतलब था 'सिंह-वस्त्र / लंगोट का दान'। यह कुस्को के शाही परिवार के युवा पुरुषों का वयस्कता में कदम रखने का एक संस्कार था। इस अनुष्ठान के कई परस्पर विरोधी वर्णनों से एक सामान्य तस्वीर यह उभरती हैः इस अनुष्ठान के दौरान गैर-इंका *अयलुस* (समुदाय) के सदस्यों को शहर छोड़ना पड़ता था। अनुष्ठान से गुजरने वाले नौसिखियों को अपने सिर का मुंडन कराना होता था और अपने कान की लौपालि (ear-lobes) को छेदना होता था तब उन्हें राज्य के शाही-परिवार के सदस्यों और राज्य के अधिकारियों के एक जुलुस में इंकाओं के प्रमुख देवताओं से शुरू कर प्रांतीय देवताओं के विभिन्न *वाकाओं* (*wakas*; पुण्य स्थल जो साधारणतः एक चट्टान या पहाड़ हो सकता था) का दौरा करना पड़ता था। चयनित युवतियां भी जुलूस का हिस्सा हुआ करती थीं जो नौसिखियों के लिए *चिचा* (एक पेय) लेकर चलती थीं। विभिन्न पुण्यस्थलों या *वाकाओं* की यात्रा के दौरान नौसिखियों को विभिन्न शारीरिक परीक्षणों द्वारा गुजरना होता था। शारीरिक परीक्षण जिसमें उपवास करना, कुछ पहाड़ियों के ऊपर-नीचे दौड़ना, बड़ों द्वारा थप्पड़ मारना शामिल था; कुछ नृत्य वास्तव में नौसिखियों को घायल कर देते थे और उन्हें रक्त-रंजित कर देते थे। इस अनुष्ठान के दौरान नौसिखियों का पुनः नामकरण किया जाता था। कुस्को में अनुष्ठान तब समाप्त होता था जब नौसिखिये कुस्को में इंका राजाओं और सूर्य देव को श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद औपचारिक रूप से सिंह-वस्त्र (*wara*) प्राप्त करते थे। नौसिखियों की यात्रा में न केवल धार्मिक महत्व के स्थल बल्कि प्रमुख जल स्त्रोतों और सिंचाई तंत्र संबंधी महत्वपूर्ण स्थल शामिल होते थे। पानी के साथ संबंध रखने वाले अनुष्ठान के रूप में इनका महत्व और अधिक रेखांकित हो जाता है क्योंकि यह दिसंबर के महीने में या वर्ष की शुरुआत में आयोजित किया जाता था जो कि एंडीज में भारी बारिश का महीना है।

बोध प्रश्न-2

1) उन प्रक्रियाओं की व्याख्या कीजिए जिनके माध्यम से इंका राजनीति का विस्तार और सुदृढ़ीकरण हुआ।

....

....

....

....

....

2) 'चुनी हुई' महिलाएं' कौन थीं ? इंका राजनीति के सुदृढ़ीकरण में 'चुनी हुई महिलाओं' ने किस प्रकार योगदान दिया ?

....

....

....

....

3) इंकाओं की *वराचिकु* (*warachiku*) प्रथा क्या थी ? इसके महत्व का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

11.3.2 समाज और अर्थव्यवस्था

इंका समाज नातेदारी आधारित समाज था। साम्राज्य स्पष्ट रूप से सबसे बड़ा और विस्तारित कुल ही था। इसमें पदानुक्रम की कई परतें थी। इंकाओं के आधिपत्य के बावजूद विभिन्न नातेदारी आधारित समुदाय या *अयलुस* लगातार आपस में संघर्षरत रहते थे। इंकाओं ने विद्रोहियों का दमन करने और उन समुदायों से भेंट वसूलने के लिए बल या युद्धों का इस्तेमाल किया। जैसा कि पहले ही वर्णित किया गया है कि अनुष्ठानों का उपयोग भी राज्य और शासन प्रणाली की एक रणनीति थी।

इंकाओं के दो कैलेंडर थे। दिन के लिए एक और रात के लिए एक। उन्होंने इन दो कैलेंडरों के अनुसार अपने अनुष्ठान निर्धारित किए थे। दिन के कैलेडंर द्वारा मुख्य रूप से कृषि गतिविधियों के लिए अनुष्ठानों को निर्धारित किया जाता था जैसे कि बुवाई, कटाई और वर्षा संबंधी अनुष्ठानिक आह्वान। यह एक सौर कैलेंडर था। लेकिन रात्रि-कैलेडंर एक चंद्र कैलेंडर था जो मुख्य रूप से शाही गतिविधियों के संस्कारों का मार्गदर्शन करता था, जैसे, पूर्वजों की पूजा, जीवन संबंधी संस्कारों (rites of passage) के अनुष्ठानों आदि के रूप में।

एंडीज की खड़ी चोटियों पर जीवन व्यतीत करते हुए, समतल खेत शायद ही इंकाओं के लिए उपलब्ध थे। इस प्रकार, समतल भूमि की कमी, कठिन जलवायु परिस्थितियाँ और सर्वाधिक महत्वपूर्ण ऊंचाइयों पर स्थित भूमि ने इंकाओं को साम्राज्य की भूमि पर सीढ़ीदार खेती की विलक्षण प्रणाली विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

कृषि के लिए वे अद्वितीय मानव-संचालित फुट (foot) हल, *चकितकल्ला* (*chakitaqlla*) का उपयोग करते थे। उनके पास एक उत्कृष्ट भंडारण प्रणाली *कुलाक़* (*qullaqas*) भी थी।

कृषि उत्पादन में मक्का, कपास आदि शामिल थे। आलू और क्विनोआ इंकाओं के लिए विशिष्ट थे। और राज्यों को भेंट अथवा करों का भुगतान उत्पाद के रुप में किया जाता था। पालतू जानवरों में *केमेलिद* (*camelid*; ऊँट की प्रजाति), *इलामा* (*ilamas*) और *अल्पाका* (*alpacas* ; भेड़ की प्रजाति का पशु) इंकाओं के लिए विशिष्ट थे। समस्त प्रजा को राज्य के लिए भी काम करना होता था। सार्वजनिक कार्य बड़े पैमाने पर इस तरह के श्रम के माध्यम से किया जाता था जिसे *मितिमा* (*mitima*) कहा जाता था। *मितिमा* श्रम का उपयोग साम्राज्य के सभी स्थानों को जोड़ने वाली सड़कों के नेटवर्क के निर्माण के लिए किया जाता था। यहां तक कि विभिन्न अनुष्ठानों और सिंचाई प्रणाली को *मितिमा* द्वारा अनुरक्षित किया गया था।

चित्र 11.3: सीढ़ीदार खेती, माचू पिचू
साभार: मार्टिन सेंट-अमेंट-विकिपीडिया-CC-BY-Sa-3.0; जून 2009
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/0/01/80_-_Machu_picchu_-_Juin_2009_-_edit.2.jpg

चित्र 11.4: चकितकल्ला का उपयोग (एंडियन फुट प्लाव).
साभार: फेलिप गुआमान पोमा दे अयला द्वारा चित्रित: एल प्राइमर नुवाकोरोनिका वाई ब्युनगोबेरनो (1615 / 1616)
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/e/e1/Trabajo-inca8.jpg

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इंकाओ ने पहियों का उपयोग नहीं किया और न ही उनकी भाषा की कोई लिपि थी और न ही उन्होंने कुछ लिखा अथवा रिकॉर्ड किया। पहले का कारण एंडीज की भौगोलिक स्थिति हो सकती है, जिसने पहियों के उपयोग को हतोत्साहित किया। लिखित भाषा की अनुपस्थिति की आपूर्ति *क्युपू* (*quipu*) की उपस्थिति से हुई। यह विभिन्न आंकड़ों के रिकॉर्ड रखने का एक शानदार तरीका था। यह एक व्यवस्थित तरीके से धागों की गाँठ लगाने की विधि थी। लोगों अथवा लेखकों का एक विशेष वर्ग या लिपिक *क्विपोकैमाया* (*quipocamayas*) कहलाता था जो *क्युपुओं* या गाँठ-तार (knotted-strings) तैयार करते थे। इस तरीके से साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में कृषि पैदावार और भंडारण क्षमता का विस्तृत रिकॉर्ड रखते थे। उनके पास राज्य के अलग-अलग *अयलुस* (*ayllus*) के बुद्धिमान प्रतिष्ठित जन बल की संख्या की जानकारी थी जो सैन्य सेवा या साम्राज्य की सड़कों या खानों की नहर प्रणाली के निर्माण के लिए तैयार थे।

स्पेनिश औपनिवेशीकरण के साथ इंका राज्य का पतन हुआ। वास्तव में, स्पेनिशों ने रैड इंडियनों (Red Indians) तक टाइफस, खसरा और इन्फ्लूएंजा जैसी यूरोपीय बीमारियों को पहुँचाया जो एंडीज में मौजूद नहीं थीं। यह घातक साबित हुई। और जिसके कारण 16वीं शताब्दी के दौरान रैड इंडियनों की एक बड़ी आबादी पूर्णतः नष्ट हो गई।

बोध प्रश्न-3

1) इंकाओं की सामाजिक संरचना क्या थी?

....

....

....

....

....

2) इंका कैलेंडर का उपयोग किन उद्देश्यों के लिए किया जाता था?

....

....

....

....

....

3) इंका अर्थव्यवस्था पर पांच पंक्तियां लिखें।

....

....

....

....

....

11.3.3 जल प्रबंधन प्रणाली

इंका वास्तुकला ने जल, उसके वितरण और प्रबंधन को पर्याप्त महत्व दिया। चाहे वह माचू पिचू (इंकाओं का सर्वाधिक विशाल पुरातत्व स्थल) में हो या कुस्को (उनकी राजधानी) में, अलग-अलग उद्देश्यों के लिए या लोगों के विभिन्न समूहों के लिए नहर के पानी की निर्मित-संरचनाएं

अद्भुत हैं। टिपोन (Tipon) में इंका शाही कृषि संपत्ति, जो कुस्को से 20 किलोमीटर पूर्व में है, में एक विस्तृत जल-संरचना के अवशेष पाए गए हैं। टिपोन में एक झरने का दोहन सीढ़ीदार कृषि को सींचने के लिए पत्थर की नालियों, नहरों और हाइड्रोलिक ड्रॉप संरचनाओं द्वारा किया गया था। इसके अलावा, पानी को अन्य लोगों के उपयोग के लिए नीचे प्रवाहित होने की अनुमति देने से पहले कुलीन एन्क्लेव में स्नान कुंड में प्रवाहित किया जाता था। कुस्को के उत्तर-पश्चिम में उरूबाम्बा नदी के पास पिसाक स्थल पर पत्थरों से लदी लबीं घुमावदार नहरें भी थीं। इसके निर्माण का श्रेय 15वीं शताब्दी के मध्य में इंका राजा विराचाकों के पुत्र पनाचुटी को दिया जाता है। यह नहर पूर्व-इंकाओं के अंत्येष्टी स्थल के साथ-साथ सीढ़ीदार कृषि भूमि और आवासीय क्षेत्रों को जलाश्यों के माध्यम से जोड़ने के लिए उपयोग की जाती थी। चिनचेरो (Chinchero) कुस्को के करीब इंकाओं का एक अन्य स्थल, में पानी की कार्यप्रणाली के रूप में सतहगत और भूमिगत दोनों प्रकार की नलिकाएं हैं और कहा जाता है कि इसका निर्माण 15वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में किया गया था। *क्युस्पिगुआनका* (*Quispiguanca*), एक अन्य स्थल हैं, जो कुस्को के करीब है और अंतिम इंका शासक द्वारा संरक्षित था जिसने 16वीं शताब्दी के दौरान स्पेनिश उपनिवेशवादी हुआयना केपैक के साथ संघर्ष किया था, उसके द्वारा इस नहर का निर्माण किया गया था। लेकिन इससे भी अधिक यह स्थान कृत्रिम झीलों और पानी के जलाशयों के जाल के लिये जानी जाती है। इससे कुछ इतिहासकारों का मानना है कि शायद उस समय तक बहते पानी के नियंत्रण और वितरण ने अपने राजनैतिक महत्व को खो दिया था जिसका संबंध इंकाओं का अपनी प्रजा के साथ था। कृषि और गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए जल-संचार योजना संबंधी कार्य कुछ उपयोगितावादी विचार प्रदर्शित करते हैं, जिसकी प्रमुख विशेषता खुरदरे पत्थर की चिनाई थी।

चित्र 11.5: इंकाओं के कृत्रिम जलमार्ग (नहरें), टिपोन कुस्को

साभार: रेनबोवसी, लीमा, पेरू जून 2014

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/df/Incan_aqueduct_at_Tipon._Cusco%2C_Peru.jpg

11.3.4 इंका वास्तुकला

ओलानतेतांबो (Ollantaytambo), कालाचाका (Callachaca), काल्का (Calca) – इंकाओं के इतिहास के विभिन्न पुरातत्व स्थल – में विभिन्न प्रकार की इमारतें पाई जाती हैं जिन्हें इंकाओं द्वारा अधिकृत किया गया था। इंका के अधिकांश राजाओं के पास राजधानी कुस्को में एक

महल और साथ ही एक ग्रामीण क्षेत्र की संपत्ति थी। माचू पिचू, शाही संपत्ति इंका वास्तुकला को प्रतिबिंबित करने वाले बेहतरीन उत्तरजीवी स्थलों में से एक है। उन्होंने सड़कों के उत्कृष्ट नेटवर्क भी बनाए। इंका चिनाई की विशेषता सेलुलर पॉलीगोनल (cellular polygonal; बहुभुजीय छोटे पत्थरों का उपयोग), और ऐश्लर पॉलीगोनल (ashlar polygonal; तराशे/चौकोर विशाल पत्थरों का उपयोग), एन्केस्ड कोर्स्ड (encased coarsed; पत्थर के ब्लॉक पंक्तिबद्ध रूप से जुड़े हुए नहीं) और सेडीमेंट्री कोर्स्ड (sedimentary coarsed; क्षैतिज पंक्तियों में रखे गए ऐश्लर पत्थर) थी। इंकाओं द्वारा बड़े पैमाने पर मैदानी पत्थरों (अधूरे परिष्कृत पत्थरों के ब्लॉक), मिट्टी-गारा और कच्ची ईटों (धूप में सुखाई गई; मिट्टी तथा जैविक सामग्री से निर्मित) का उपयोग किया गया। इंकाओं की सबसे आम संरचना *कांचा* (*kancha*) थी जो एक आयताकार घेरा होता था जो आमतौर पर एक केंद्रीय कक्ष के चारों ओर तीन अनुक्रमों के एक सममितीय क्रम में होता था।

चित्र 11.6: सैक्सेहुआमन की दीवारों के अवशेष, कुस्को (ऐश्लर पॉलीगोनल मेसनरी)

साभार: एन. विकिपीडिया से स्थानांतरित करके कॉमन्स हेल्पर का उपयोग करते हुए जालो द्वारा कॉमन्स में हस्तांतरित

लेखक: Bcasterline, अंग्रेजी विकिपीडिया, 18 मार्च 2006

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/a8Walls_at_Sacsayhuaman.jpg

वास्तुकला के इन ज्यादातर अवशेषों की प्रकृति स्मारक रूप में थी। ये या तो एक युद्ध में जीत को स्मरण करने के लिए थे या उत्तराधिकार के कीर्तिगान के लिए या फिर कुछ विशिष्ट पूर्वजों को ममीकृत करने के लिए निर्मित किये गये थे। लेकिन प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए निर्मित सार्वजनिक भवनों और इंका राजाओं के निजी आवासों के बीच एक विशिष्ट विभाज्य रेखा थी। पुरातत्व स्थलों पर पत्थर की चिनाई का काम अभूतपूर्व है। कृषि के लिए भूमि को समतल रखने के लिए बनाई गई सीढ़ीदार मेड़ों में बहुत कौशल और सौंदर्य नहीं दिखाई देता। लेकिन बड़े शाही महल/निवास, पवित्र मंदिर निश्चित रूप से विशिष्ट कौशल का प्रदर्शन करते है जो वैचारिक और उपयोगितावादी दोनों हैं। निस्संदेह ये गहन श्रम कार्य अधिक परिष्कृत हैं, कुशलतापूर्वक तराशे गए पत्थरों के टुकड़े के साथ, बारीक नक्काशीदार और सही घुमाव व कोणों पर जोड़े गये आलों के साथ, दरवाजों और खिड़कियों के साथ, और कई बहुभुजीय संरचनाओं और यहां तक कि कई स्थलों पर (जैसा कि चिनचेरो के समीप) रंगीन पत्थरों का प्रयोग शामिल थे।

बोध प्रश्न-4

1) इंकाओं के नहरों के संजाल पर एक नोट लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2) इंका वास्तुकला की विशेषताएं क्या थीं?

....

....

....

....

....

11.4 सारांश

यह इकाई एज़्टेक और इंका राज्य-संरचनाओं के गठन पर केंद्रित है। जहां एज़्टेकों की पदानुक्रमित संरचनाएं वर्ग आधारित थीं, इंका समाज और राज्य बड़े पैमाने पर सगोत्रीय संरचनाओं का विस्तार थे। एज़्टेक कृषि मुख्य रूप से झीलों के अंदर-उद्यान के रूप में थी; जबकि इंका अनिवार्य रूप से सीढ़ीदार कृषि पर निर्भर थे। एज़्टेक इस अर्थ में एक साक्षर समाज था कि उनके ग्रंथों को संहिताबद्ध किया गया था, इसके विपरीत, इंकाओं की कोई लिखित लिपि नहीं थी, उनका लेखन गांठों (*क्युपु*; *quipu*) को छोड़कर। समकालीन दस्तावेजों के अभाव के कारण सभ्यता के विस्तृत इतिहास को जानना मुश्किल है। फिर भी उन्होंने अद्भुत जल प्रबंधन प्रणाली के साथ-साथ कुछ विशेष फसलों का उत्पादन किया जिसने भविष्य में दुनिया भर में खाद्य आदतों (आलू, टमाटर) को बदल दिया।

11.5 शब्दावली

***चाइनेमपा* (Chinampas)** : झीलों के अंदर उद्यान

***क्युपु* (Quipu)** : इंका लेखन गांठें (Writing knots)

***त्लाकोतिन* (Tlacotin)** : मेसोअमेरिका में गुलाम

11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) उप-भाग 11.2.1 देखें

2) उप-भाग 11.2.2 देखें

3) उप-भाग 11.2.3 देखें

4) उप-भाग 11.2.4 देखें

5) उप-भाग 11.2.5 देखें

बोध प्रश्न-2

1) उप-भाग 11.3.1 देखें
2) उप-भाग 11.3.1 देखें
3) उप-भाग 11.3.1 देखें

बोध प्रश्न-3

1) उप-भाग 11.3.2 देखें
2) उप-भाग 11.3.2 देखें
3) उप-भाग 11.3.2 देखें

बोध प्रश्न-4

1. उप-भाग 11.3.3 देखें
2. उप-भाग 11.3.4 देखें

11.7 संदर्भ ग्रंथ

बेथेल, लेस्ली (सं.), (1984) *द कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ लैटिन अमेरिका*, भाग I, *कोलोनियल लैटिन अमेरिका* (कैंब्रिजः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

कारास्को, डेविड एवं स्कॉट सेशंस, (1998) *डेली लाइफ ऑफ द एज़्टेक्सः पीपल ऑफ द सन एंड अर्थ* (वेस्टपोर्टः ग्रीनवुड प्रेस).

डी'अल्त्रॉय, टेरेंस एन., (2015) *द इन्कास* (ससेक्सः विली ब्लैकवेल), द्वितीय संस्करण.

गाम्बोया, पेड्रो सर्मिएन्तो दे, (2007) *द हिस्ट्री ऑफ द इन्कास*, अनुवाद एवं संपादन बॉयर, ब्रायन एस. एवं वानिया स्मिथ (टेक्सासः यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस).

नाइल्स, सुसान ए., (1999) *द शेप ऑफ इन्का हिस्ट्रीः नैरेटिव एंड आर्किटेक्चर इन एन एंडियन एम्पायर* (आयोवाः यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयोवा प्रेस).

सिल्वरब्लाट आइरेन, (1987) *मून, सन एंड विचेस : जेंडर आइडियोलाजी एंड क्लास इन इन्का एंड कोलोनियल पेरू* (प्रिन्सटनः प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस).

स्मिथ, माइकल ई., (2012) *द एज़्टेक्स* (ससेक्सः विल ब्लैकवेल), तृतीय संस्करण.

याया, इसाबेल, (2012) *द टू फेसेस ऑफ़ इंका हिस्ट्रीः डूअलिज़्म इन द नैरेटिव्स एंड कॉस्मोलॉजी ऑफ एनशियंट कुज़को* (लाइडनः ब्रिल).

11.8 शैक्षणिक वीडियो

द एज़्टेक एम्पायर
https://www.youtube.com/watch?v=s6RbaAURCql

तेनोचीटलान - द वेनिस ऑफ मेसोअमेरिका (एज़्टेक हिस्ट्री)
http://www.youtube.com/watch?v=fmHVqb6t_8

द सीक्रेट्स ऑफ द इंकास (दो भागों में)
http://www.youtube.com/watch?v=oRSTy9ir6zs

हिस्ट्री ऑफ द इंका एम्पायर
http://www.youtube.com/watch?v=iYYfg2tph3w